ज्योतिष

[illegible]

# विषय-सूची

## प्रथम प्रकरणम्


| | |
|---|---|
| मंगला चरणम् | ६ |
| वैवाहिक नक्षत्र | ६ |
| विवाहादि में वर्जनीय-दोष | १० |
| तिथियों की नन्दा आदि संज्ञा | १० |
| वार वेला | १० |
| विवाह में त्याज्य भद्रा आदि दोष | ११ |
| भद्रा | ११ |
| भद्रा का निवास | १२ |
| भद्रा निवास का फल | १२ |
| भद्रा का मुख फल ज्ञान | १२ |
| भद्रा परिहार | १३ |
| दग्धा तिथि | १३ |
| मासान्तादि में वर्ज्यंकाल | १३ |
| मासान्तादि का फल | १३ |
| कुलिक योग | १४ |
| वर्ग तथा वर्ग स्वामी | १४ |
| वर्ग के मित्र शत्रु आदि विचार | १५ |
| नक्षत्रों द्वारा गण विचार | १५ |
| गणों का फल, भकूट विचार | १६ |
| राशि वर्ण विचार | १६ |
| वर्ण फल | १७ |
| नक्षत्रों की पूर्व भागादि संज्ञा एवं फल | १७ |
| वश्य फल | १८ |
| राशियों की चतुष्पदादि संज्ञा | १८ |
| योनि ज्ञान | १८ |
| योनी वैर | १९ |
| भकूट फल | २० |
| विवाह में बल विचार | २० |
| वर को सूर्य बल विचार | २० |
| कन्या को गुरु बल विचार | २१ |
| चन्द्र विचार | २१ |
| कन्या की गौरी आदि संज्ञा | २२ |
| कन्यादान विचार | २३ |
| गौरी आदि का बल विचार | २३ |
| मतान्तर से गौरी आदि का विचार | २३ |
| ग्रहों का बलाबल | २३ |
| रजस्वला संज्ञक कन्यादान का फल | [illegible] |
| प्रौढ़ा का बल वि[illegible] | |
| रजस्वला कन्या[illegible] | |
| नाड़ी वि[illegible] | |
| ब्राह्मा[illegible]गम· | |
| [illegible]ु ग्रहण | |
| पशु क्रय-विक्रय | |
| तिथि गण्डान्तः | |
| [illegible]क्षत्र गण्डान्तः | |
| [illegible] गण्डान्तः | |
| [illegible]तः जन्म फलम | २६ |
| पात का विचार | २७ |
| पात नाम | २७ |
| पात विचार | २७ |
| देश भेद से पात परिहार | २८ |
| युति दोष विचार | २८ |
| युति दोष का फल | २८ |
| युति योग परिहार | २८ |
| विवाह में पञ्चशाला का चक्र | २९ |
| वेध का फल | २९ |
| वेध फल | ३० |
| वेध के नक्षत्र | ३० |
| युति दोष विचार | ३१ |
| जामित्र दोष विचार | ३१ |
| बुध पञ्चक विचार | ३१ |
| वार सम्बन्ध से बाण विचार | ३२ |
| दिन रात्रि वश से बाण विचार | ३२ |
| उपग्रह (विषुवादि दोष) | ३२ |
| उपग्रह फल | ३२ |
| एकार्गल योग | ३३ |

| | |
|---|---|
| क्रान्ति साम्य विचार | ३४ |
| क्रान्ति साम्य का फल | ३५ |
| कण्टकादि दोष विचार | ३५ |
| कण्टकादि का फल | ३६ |
| जन्म मासादि विचार | ३६ |
| सिंहस्थ गुरु विचार | ३६ |
| ग्रहों का विश्व बल विचार | ३७ |
| [illegible] | ३७ |
| [illegible] | ३८ |
| [illegible] | ३८ |
| [illegible] | ३९ |
| [illegible] | ४० |
| [illegible] | [illegible] |
| …त्याज्य दोष | ४१ |
| गोधूलीक का स… | ४१ |
| गोधूलि नाश दोष | ४१ |
| लग्न शुद्धि विचार | ४१ |
| दिन में इष्ट काल ज्ञान | ४२ |
| नक्षत्रोंदय एवं रात्रि में इष्ट काल ज्ञान | ४२ |
| लग्न शुद्धि परिहार | ४३ |
| त्रिनाड़ी चक्र | ४३ |
| योगों में वर्ज्य घड़ी | ४४ |
| वर्ज्य योगों का फल | ४५ |
| पट्ट चक्रम | ४५ |
| **द्वितीय प्रकरणम** | |
| द्विरागमनमुहूर्त्त | ४७ |
| गर्भाधान | ४७ |
| पुंसवन तथा सीमन्तों नयन मुहूर्त्त | ४८ |
| नाम करण | ४८ |
| बहिर्निष्क्रमण | ४८ |
| सूति का स्नान | ४९ |
| स्त्री नुतनाम्बर धारण | ४९ |
| प्रसूतिका स्नान एवं जलपूजन | ४९ |
| नवान्न भक्षण | ५० |
| अन्न प्रशान | ५० |
| चूड़ाकरण मुहूर्त्त | ५० |
| विद्यारम्भ | ५१ |
| यज्ञो पवीत | ५१ |
| ग्रहों की शुभाशुभ संज्ञा | ५२ |
| कर्णवेध | ५२ |
| वास्तु कर्म मुहूर्त्त | ५३ |
| सुर प्रतिष्ठा | ५३ |
| गृह प्रवेश | ५३ |
| हल प्रवाह | ५४ |
| यात्रा | ५४ |
| दिक्शूल | ५५ |
| सर्व दिग्गनांह नक्षत्राणि | ५५ |
| योगिनी विचार | ५५ |
| योगिनी वास फलम् | ५६ |
| यात्रायां तिथि फलम् | ५६ |
| चतुर्घटिका राहु विचार | ५७ |
| चन्द्रवास ज्ञानम | ५८ |
| चन्द्र फलम | ५९ |
| रविवास | ५९ |
| कुलिक मुहूर्त्त | ५९ |
| काल होरा | ५९ |
| अंक मुहूर्त्त ज्ञानम | ६० |
| चन्द्र स्वर एवं रविस्वर फलम् | ६० |
| यात्रायां शुक्र फलम् | ६१ |
| क्रय-विक्रय मुहूर्त्त | ६१ |
| पंच के त्याज्य कर्म | ६१ |
| तैलाभ्यंग | ६१ |
| तैलाभ्यंगस्यप परिहार | ६२ |
| वधू प्रवेश मुहूर्त्त | ६२ |

रोगी स्नान ६२
आनन्दादियोग ६२
अमृत सिद्धि योग ६४
यमघण्ट योग ६५
मृत्यु योग ६५
क्रकच योग ६६
अन्धाक्षादि संज्ञा ६६
दक्षिणा चारा नक्षत्र ६७
वास चक्रम ६८
अश्विन्यादि नक्षत्रों में तारों की संख्या ६९
ग्रहानुसारेण लग्न कुण्डल्यां दोष ७०
लग्न कुण्डल्यां राशिजन्य दोष ७०
नक्षत्र तिथि वारजा: शुभाशुभयोग ७२
नक्षत्राणांचर जलादि सञ्ज्ञा ७५
नक्षत्राणां संज्ञा बोधक चक्रम ७५
शनिचक्रम ७६
शनिफल देश विशेषण ७७
वासानुसारेण मासफलानि ७८
अभिजिन्मुहूर्त्त ज्ञानम ७९
शुक्रोदय फलम् ८०
होलिका वायु परीक्षा ८०
वृष्टि लक्षणम ८१
आषाढ़ पूर्णिमायां नक्षत्राणां शुभाशुभम फल ८१
ज्येष्ठ कृष्ण की प्रतिपदा के वारों का फल ८२
पौस संक्रान्ति फलम ८२
मीन संक्रान्ति फलम ८३
संक्रान्तिसमयजन्म नक्षत्रस्यविचार ८३
रोहिणी चक्रम ८४
नर चक्रम ८४
ग्राम चक्रम ८७
भूल वृक्ष चक्रम ८८
शुक्रान्धे सम्मुख दक्षिण परिहार ८९
शुक्रस्य बाल्य वृद्धत्वं च ९०
चन्द्रमा का शुभा शुभात्व ९०
तारा विचार: परिहारश्च ९०
तारा विचार: ९०
अन्य ग्रहाणां शुभाशुभात्वम ९१
शुभ कार्य वर्जित चन्द्रमस:
अथ तिर्यङ्‌ मुखाऽधो
चक्रम
भैषज्य कार्य
गोप शुनिर्गम:
पशु ग्रहण
पशु क्रय-विक्रय
तिथि गण्डान्त:
नक्षत्र गण्डान्त: ९५
लग्न गण्डान्त: ९५
गण्डान्त: जन्म फलम ९६
संवर्तयोग: ९६
सिद्धि योग: ९६
विष्कम्भादि सप्तविंशति योग ९७
करणानि ९७
नक्षत्र देवता: ९८

## अथ तृतीय प्रकरणम्

प्रश्नफल ज्ञानम १००
लग्न मानम् १०१
ग्रहाणां दानानि १०२
गुरु दशा १०३
संक्रान्तौ वर्षा फलानि १०४
वायु परीक्षणेन वृष्टि ज्ञानम १०५
वायु परीक्षणम् १०५
ग्रह विचार १०८
नक्षत्रों में ग्रह स्थिति शुभाशुभ ११०

## अथ चतुर्थ प्रकरणम्

होडा चक्रम ११३

| | |
|---|---|
| सयाद नक्षत्रद्वयतो राशि चक्रम | ११३ |
| द्वादश भावा: | ११४ |
| ग्रहाणां दृष्टि | ११४ |
| दिनमानायनम | ११५ |
| त्रयोदश तिथि फलम् | ११५ |
| हवन करने का मुहूर्त्त | ११६ |
| ...वास ज्ञानम् | ११६ |
| ...नि गुणाश्च | ११७ |
| ...स्वामिन: | ११८ |
| | ११९ |
| ...र | |
| | ११९ |
| | ११९ |
| ...शान वृष्टि ज्ञानम् | १२० |
| ... वृष्टि योग: | १२० |
| ग्रहद्वार ज्ञानम् | १२१ |
| ग्रहण द्वयं फलम् | १२१ |
| राशि परत्वेन देशविदेश फलानि | १२१ |
| परिवेष फलम् | १२२ |
| दिगदाहफलम् | १२२ |
| ग्रहयुद्ध फलम् | १२३ |
| नक्षत्र गते केतूदय फलानि | १२३ |
| कार्त्तिक अमावस्या फलम | १२४ |
| राशिनां निशाचलादि संज्ञा | १२५ |
| प्रशनांक फलम् | १२५ |
| अतिवार चक्र फलम् | १२५ |
| दीक्षा ग्रहण काल | १२६ |
| ग्रहाण राशि भोगावधि: | १२६ |
| चुहली चक्रम् | १२६ |



## नई-नई पुस्तकें जो छपकर तैयार हैं

| | | |
|---|---|---|
| १. | ज्योतिष और आपकी आर्थिक स्थिति—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| २. | ज्योतिष : शरीर, सौन्दर्य और स्वास्थ्य—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ३. | ज्योतिष : धन, सम्पत्ति और कुटुम्ब—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ४. | ज्योतिष : यश, अपयश और पराक्रम—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ५. | ज्योतिष : सुख, सवारी और जायदाद—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ६. | ज्योतिष : विद्या, बुद्धि और संतान—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ७. | ज्योतिष : रोग, शत्रु और भय—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ८. | ज्योतिष : विवाह, प्रेम और यात्रा—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ९. | ज्योतिष : आयु, मृत्यु और चिन्ता—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १०. | ज्योतिष : धर्म, पुण्य और भाग्य—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| ११. | ज्योतिष : कर्म, व्योवसाय और सम्मान—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १२. | ज्योतिष : धन, सम्पत्ति और लाभ—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १३. | ज्योतिष : हानि, व्यय और बन्धन—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १४. | ज्योतिष : माता-पिता और भाई-बहन—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १५. | ज्योतिष : झगड़े-झंझट और मुकद्दमा—राजेश दीक्षित | ८.२५ |
| १६. | सरल सुगम ज्योतिष—पं० जगन्नाथ | १२.०० |

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ २४ ॥

तीसरा वर्ग

# शीघ्रबोधः

भाषाटीकासहितः

## अथ प्रथमप्रकरणम्

### मङ्गलाचरणम्

भासयन्तं जगद्भासा नत्वा भास्वन्तमव्ययम् ।
क्रियते काशिनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रहः ॥१॥

अपने तेज से समस्त जगत को प्रकाशवान् करने वाले श्री सूर्य भगवान को नमस्कार करके मैं काशीनाथ (ज्योतिष शास्त्र का, शीघ्र-बोध कराने वाले ग्रन्थ का संग्रह करता हूं ॥१॥

### वैवाहिक नक्षत्र

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिमृगौ मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ॥२॥

विवाह में रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी मूल, स्वाति, मृगशिरा, मघा, अनुराधा और हस्त ये ग्यारह नक्षत्र शुभ कारक हैं ॥२॥

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ३ ॥

आषाढ़े कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥४॥

माघ में विवाह करने से कन्या धनवती, फाल्गुन में विवाह करने से सौभाग्यवती, वैशाख और ज्येष्ठ में विवाह होने से पति को अत्यन्त प्यारी होती है। आषाढ़ में विवाह करने से कुल-वृद्धि होती ... मास (श्रावणादि) वर्जनीय हैं। किन्तु बहुत से पण्डितों के ...र्गशीर्ष (अगहन) में भी विवाह करना शुभ है ॥३-४॥

...वाह एवं अन्य शुभ-कार्य में वर्जनीय दिन दोष

...मावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूरवाराश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

अमावस्या, रिक्ता (४।९।१४) तिथि वारवेला (तुर्योर्के आदि श्लोक ७-८ देखो), जन्म नक्षत्र तथा क्रूर (शनि आदि) नक्षत्र, तीनों गण्डांत (लग्न गण्डांत, तिथि गण्डांत एव नक्षत्र गण्डांत) इन सबको विवाह तथा शुभ-कार्य में यत्न पूर्वक त्याग देना चाहिए ॥५॥

तिथियों की नन्दा आदि संज्ञा

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णाश्च तिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावत्यस्तिथयः प्रतिपन्मुखा ॥ ६ ॥

प्रतिपदा आदि, १५ तिथियों की क्रमशः तीन आवृत्ति से, क्रमशः नन्दा (१।६।११), भद्रा (२।७।१२) जया (३।८।१३) रिक्ता (४।९।१४), पूर्ण (५।१०।१५।३०), संज्ञा है ॥६॥

वारवेला

तुर्योऽर्के सप्तमश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्र पञ्चमश्च देवाचार्ये तथाऽष्टमः ॥ ७ ॥
दैत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्ठश्च निन्दितः ।
प्रहरार्धः शुभे कार्ये वारवेला च कथ्यते ॥ ८ ॥

रविवार को चौथा, सोमवार को सातवां, भौम को दूसरा, बुध को पांचवां, गुरुवार को ८ वां, शुक्रवार को तीसरा तथा शनि को छठा प्रहरार्ध (अर्धयाम) वारवेला कहलाता है, यह भी शुभ-कार्य में वर्जित है ।।७-८।।

इस चक्र से अर्द्धयाम का विवरण स्पष्ट है—

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ७ | २ | ५ | ८ | ३ | ६ | अर्द्धयाम |

## विवाह में त्याज्य भद्रा आदि दोष

भद्रा क्रकचयोगं च तिथ्यन्तं यमघण्टकम् ।
दग्धातिथिं च भान्तं च कुलिकं च विवर्जयेत् ।। ९ ।।

भद्रा, क्रकच एवं प्रत्येक तिथि के अन्त की दो घड़ी, यमघण्ट, दग्धातिथि, नक्षत्रों के अन्त की तीन-तीन घड़ियां तथा कुलिक योग, यह योग विवाह में त्याज्य हैं ।।९।।

### भद्रा

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ।। १० ।।

एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुल्कपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ।। ११ ।।

कृष्ण पक्ष में तृतीया और दशमी के परार्द्ध में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा रहती है और शुक्ल पक्ष में एकादशी और चतुर्दशी के परार्ध में तथा पूर्णिमा के पूर्वार्ध में भद्रा रहती है ।।१०-११।।

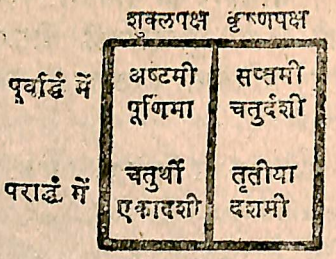


भद्रावास का ज्ञान

भद्रा का निवास

मेषकरवृषकर्कटस्वर्गे कन्यामिथुनतुलाधनुनागे।
कुम्भमीन अलिकेसरिमर्त्यौ विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥१२॥

मेष, मकर, वृष और कर्क के चन्द्रमा में भद्रा स्वर्ग लोक में, कन्या, मिथुन, तुला धन के चन्द्रमा में नाग लोक (पाताल) में तथा कुम्भ, मीन, वृश्चिक और सिंह के चन्द्रमा में भद्रा स्वर्ग-लोक में निवास करती है ॥१२॥

भद्रा निवास का फल

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्यविनाशिनी ॥१३॥

यदि भदा स्वर्ग लोक में हो, तो सब कार्य शुभ होते हैं और पाताल में हो तो धन-लाभ होता है और मृत्यु-लोक में हो तो सब कार्यों को नष्ट करती है ॥१३॥

भद्रा का मुख-फल ज्ञान

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधो मुखी।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥

मृत्यु लोक में भद्रा हो तो सन्मुख, पाताल में अधोमुख और स्वर्ग में हो तो ऊर्धमुख होती है। सम्मुखी भद्रा मृत्युदायक ही है ॥१४॥

## भद्रा परिहार

दिवा भद्रा यदा रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिने ।
तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥

यदि दिन की भद्रा रात्रि में और रात्रि की भद्रा दिन में हो तो दोष नहीं माना जाता, वरन् वह सुखदायिनी होती है, जैसे पक्ष की ७।१० के पूर्वार्ध की भद्रा दिन संज्ञक होती है, यदि व में हो तो शुभ है। परार्ध की रात्रि संज्ञक है, यदि वह दि शुभ है ॥१५॥

## दग्धा तिथि

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ १६ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभकर्मणी वर्जिताः ॥ १७ ॥

मीन और धनु के सूर्य में द्वितीया, वृष-कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी, मेष-कर्क के सूर्य में षष्ठी, कन्या-मिथुन के सूर्य में अष्टमी, वृश्चिक-सिंह के सूर्य में दशमी, मकर-तुला के सूर्य में द्वादशी, यह दग्ध संज्ञक तिथियां शुभ कार्य में त्याज्य हैं ॥१६-१७॥

## मासान्तादि में वर्ज्य काल

मासान्ते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।
घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

मासांत (संक्रांति से पूर्व) एक दिन, तिथि के अन्त में दो घड़ी तथा नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी विवाह में वर्जित हैं ॥१८॥

## मासांतादि का फल

मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टो मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥

मासान्त में विवाह होने से कन्या की मृत्यु, तिथ्यन्त में विवाह होने से अपुत्रिणी, नक्षत्रांत में विधवा तथा भद्रा में विवाह होने से वर कन्या दोनों की मृत्यु होती है ॥१९॥

कुलिकयोग

सूर्ये च सप्तमी, सोमे षष्ठी, भौमे च पञ्चमी।
बुधे चतुर्थी, देवेज्ये तृतीया, भृगुनन्दने ॥ २० ॥
द्वितीया, वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे।
कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥ २१ ॥

रविवार को सप्तमी, चन्द्रवार को षष्ठी, मंगल को पंचमी, बुधवार को चतुर्थी, गुरुवार को तृतीया, शुक्रवार को द्वितीया तथा शनिवार को प्रतिपदा हो तो कुलिक योग जानो। यह विवाहादि शुभ-कार्यों में त्याज्य है ॥२०-२१॥

कुलिक योग चक्र

| सू. | च. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | तिथि |

वर्ग तथा वर्ग स्वामी

अवर्गो गरुड़ो ज्ञेयो बिडालः स्यात्कवर्गकः।
चवर्गः सिंहनामा स्याद्टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥ २२ ॥
सर्पाख्याः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूषकः स्मृतः।
यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥ २३ ॥

अवर्ग (अ, इ, उ, ए) का स्वामी गरुड़, कवर्ग का बिडाल, चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का सिंह, टवर्ग का स्वामी कुत्ता तथा तवर्ग का स्वामी सर्प, पवर्ग का चूहा, यवर्ग (य, र, ल, व) का स्वामी मृग, और शवर्ग (श, ष, स, ह) का मेढ़ा स्वामी होता है। नाम के आदि अक्षर से वर-कन्यादि का वर्ग मैत्री करने में जानना चाहिए ॥२२-२३॥

| अ | क | च | ट | त | प | य | श | वर्ण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गरुड़ | बिडाल | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | हरिण | मेष | संज्ञा |

## वर्ग के मित्र-शत्रु आदि विचार

स्ववर्गात् पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः।
उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ २४ ॥

अपने वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु, चौथा मित्र तथा तीसरा वर्ग उदासीन अर्थात् न शत्रु, न मित्र होता है। इस प्रकार वर्ग के तीन भेद होते हैं ॥२४॥

## नक्षत्रों द्वारा गण विचार

अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः।
अनुराधा श्रुतिः स्वाति कथ्यते देवतागणः ॥ २५ ॥

तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २६ ॥

कृत्तिका च मघाऽऽश्लेषा विशाखा शततारकाः।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणा स्मृतः ॥ २७ ॥

गण चक्रम्

| गण | नक्षत्र |
|---|---|
| देवता | अ. मृग. पुन. पुष्य ह. स्वाती अनु. श्र. रे. |
| मनुष्य | ३ पू. ३ उ भरणी रो आर्द्रा |
| राक्षस | कृ. श्ले. म. चि. वि ज्ये मू. ध. शत. |

अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाति ये नौ नक्षत्र देवता गण हैं। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, आर्द्रा,

रोहिणी भरणी मनुष्य गण तथा कृतिका, मघा, अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल ये नौ नक्षत्र राक्षस गण कहलाते हैं ॥२५-२७॥

गणों का फल

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवराक्षसोः ॥ २८ ॥

यदि पति-पत्नी दोनों एक ही गण के हों तो परस्पर अत्यन्त प्रेम हो, मनुष्य और देवगण हों तो सामान्य प्रीति, मनुष्य और राक्षस-गण हों तो मृत्यु होती है तथा परस्पर पति-पत्नी देव-राक्षस गण हों तो कलह होती है ॥२८॥

भकूट विचार

षष्ठाष्टके मृतिर्नन्दनवमे स्वनपत्यता ।
नेस्वं द्विर्द्वादशेऽन्येषु दम्पत्योः प्रीतिरुत्तमा ॥२९॥

यदि पत्नी-पत्नी की परस्पर राशि ६, ८ हो तो मृत्यु, नवम पञ्चम हो तो कलह तथा परस्पर दूसरी और बारहवीं हो तो दरिद्रता उत्पन्न होती है, अन्य में परस्पर प्रीति जानो ॥२९॥

राशि वर्ण विचार

मीनालिकर्कटाः विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रोयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यः कन्या वृषो मृगः ॥ ३० ॥

वर्ण-चक्रम्

| ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | वर्ण |
|---|---|---|---|---|
| ४८१२ | १५९ | २६१० | ३७११ | राशियाँ |

मीन, वृश्चिक तथा कर्क राशि ब्राह्मण वर्ण, मेष, सिंह और धनु क्षत्रिय वर्ण, मिथुन, तुला और कुम्भ शूद्र वर्ण एवं कन्या वृष तथा मकर वैश्य वर्ण कहे जाते हैं ॥३०॥

## वर्ण फल

**नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।**
**म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणारक्षितो यदि ॥ ३१ ॥**

उत्तम वर्ण की कन्या के साथ अर्थात् विशेष कर ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ अन्य वर्ण विवाह न करे अन्यथा हीन वर्ण वर की मृत्यु होती है चाहे उस वर को ब्रह्मा भी रक्षा क्यों न करें ॥३१॥

**विप्रवर्णा च या नारी शूद्रवर्णश्च यः पति ।**
**ध्रुवं भवति वैधव्यं शूद्रस्य दुहिता यदि ॥ ३२ ॥**

यदि ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ शूद्र वर्ण वर का विवाह हो तो निश्चय ही कन्या विधवा होती है, चाहे वह शुक्राचार्य की ही कन्या क्यों न हो ॥३२॥

## नक्षत्रों की पूर्व भागादि संज्ञा एवं फल

**पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वमार्द्रादिकं द्वादश मध्यभागम् ।**
**पौरन्दराद्यं नवकं भचक्रं परं च भागं गणका विदग्धाः ॥ ३३ ॥**

रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्र पूर्व भाग कहे जाते हैं। आर्द्रा से बारह १२ नक्षत्र मध्य भाग तथा ज्येष्ठा से उत्तरा भाद्र तक के ९ नक्षत्र पर भाग कहलाते हैं ॥३३॥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रे. | अ. | भ. | कृ. | रो. | मृ. | पूर्व भाग |
| आ. | पुन. | पु. | श्ले. | म. | पू. फा. | मध्यभाग |
| उ | फा. | ह. | चि. | स्वा. | वि. अनु. | |
| ज्ये. | मू | पूषा. | उ. षा. श्र | | ध. श. | परभाग |
| पू | भा. | उ | भा. | | | |

**पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।**
**परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥ ३४ ॥**

पूर्व भाग के नक्षत्रों में वर श्रेष्ठ होता है। मध्य भाग में कन्या

तथा पर भाग नक्षत्रों में दोनों के नक्षत्र होने से परस्पर प्रीति होती है ॥३४॥

वश्य फल

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ३५ ॥

सिंह के अतिरिक्त शेष चतुष्पद राशियां मनुष्य के वश में हैं। जलचर तो उनके भक्ष्य ही हैं परन्तु सरीसृप अर्थात् सर्प-संज्ञक (वृश्चिक) राशि भयोत्पादक है ॥३५॥

राशियों की चतुष्पदादि संज्ञा

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहधनुर्वृषाः ।
चतुष्पदा कीटसंज्ञाः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ ३६ ॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषश्च यत् ।
द्विपदास्तु मृगार्द्धं स्यान्कुम्भमीनौ जलाश्रितौ ॥३७॥

मकर राशि का पूर्वार्ध, मेष, सिंह, धन, वृष की चतुष्पद संज्ञा तथा कर्क राशि की कीट संज्ञा, वृश्चिक की सर्प संज्ञा, धन के पूर्वार्द्ध तथा तुला, मिथुन और कन्या की द्विपद संज्ञा है। मकर का उत्तरार्द्ध कुम्भ, मीन ये जलचर संज्ञक है ॥३६-३७॥

अथ योनि ज्ञान

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥ ३८ ॥
आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥ ३९ ॥
महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढौ च मर्कटौ ॥४०॥
वसुभाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्विश्वयोः ।
एतेषां कथितं भानां वैरमत्र विचार्यताम् ॥ ४१ ॥

अश्विनी-शतभिषा अश्वयोनि, रोहिणी-मृगशिर नाग योनि, आर्द्रा-मूल श्वान योनि, पूर्वा फाल्गुनी-मघा मूषक योनि, पुनर्वसु-अश्लेषा मार्जार योनि, उत्तरा फाल्गुनी-उत्तराभाद्रपद गौ योनि, स्वाती-हस्त महिष योनि, ज्येष्ठा-अनुराधा मृगयोनि, चित्रा-विशाखा व्याघ्र योनि, श्रवण तथा पूर्वाषाढ़ वानर योनि, धनिष्ठा-पूर्वाभाद्रपद सिंह योनि एवं अभिजित् और उत्तराषाढ़ की नकुल योनि होती है ॥३८-४१॥

योनि-वैरचक्रम्

| नक्षत्र | योनि | योनिवैर |
|---|---|---|
| अभि. । उत्तराषाढ़ा | नकुल | सर्प |
| धनिष्ठा । पूर्वाभा० | सिंह | गज |
| पूर्वाषाढा । श्रवण | मर्कट | छाग |
| चित्रा । विशाखा | व्याघ्र | गौ |
| ज्येष्ठा । अनुराधा | मृग | श्वान |
| स्वाती । हस्त | महिष | अश्व |
| उत्तराफाल्गुनी । उ भा | गौ. | व्याघ्र |
| पुनर्वसु । श्ले० | मार्जार | मूषक |
| पूर्वाफ० । मघा | मूषक | मार्जार |
| आर्द्रा । मूल | श्वान | मृग |
| रोहिणी । मृग० | सर्प | नकुल |
| पुष्य । कृत्तिका | छाग | मर्कट |
| रेवती । भरणी | गज | सिंह |
| अश्विनी । शतभिषा | अश्व | महिष |

योनि वैर

गोव्याघ्रं गर्जसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च वभ्रू रगं
वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरु ।
लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं
दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥४२॥

गौ-बाघ में, हाथी-सिंह में, घोड़ा-भैंस में, कुत्ता-मृग में, नकुल-सर्प में, वानर-मेढ़ा में, बिलाव-मूषक में परस्पर वैर होता है, अतः इन को त्याग कर योनि-प्रीति का विचार करना करना चाहिये। यदि शुभ चाहें तो स्त्री-पुरुष, स्वामी-सेवक एवं अन्य लौकिक कार्य विवाहादि में इसे त्याज्य समझें ॥४२॥

भकूटफल

मरणं पितृमात्रोश्च संग्राह्यं नवपञ्चकम् ।
वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥ ४३ ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत् ॥ ४४ ॥

यदि वर की राशि से कन्या राशीनवमी हो तो पिता की मृत्यु और कन्या की राशि से पुरुष की राशि पांचवी हो तो मां की मृत्यु होती है। यदि वर की राशि से पांचवीं कन्या की और कन्या से नवमी वर की हो तो यह त्रिकोण पुत्र-पौत्र को सुख देने वाला होता है तथा छठी, आठवीं हो तो मृत्यु होती है। इनका यत्न पूर्वक विचार कर लेना चाहिए ॥४३-४४॥

विवाह में बल विचार

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥४५॥

वर को सूर्य का बल, कन्या को वृहस्पति का बल एवं वर कन्या दोनों को चन्द्र का बल लेना चाहिये, अन्यथा विवाह शुभ नहीं होता है॥४५॥

वर को सूर्यबल विचार

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ४६॥
जन्मन्यथ द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४७ ॥

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ४८ ॥

यदि वर के चौथे, आठवें और बारहवें स्थान में सूर्य हो तो निश्चय ही वर की मृत्यु होती है। तथा वर की राशि से १, २, ५, ८ वें स्थान में सूर्य हो तो दान पूजा जपादि कर के विवाह करना चाहिये। तथा वर की राशि से ११, ३, ६, १० राशिस्थ सूर्य विवाह में शुभ होता है ॥४६-४८॥

कन्या को गुरु-बल विचार

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥ ४९ ॥
षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा।
भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५० ॥
एकादशे द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा।
नवमे च गुराचार्यः कन्यायाः शुभकारक ॥ ५१ ॥

यदि कन्या की जन्म-राशि से ४।८।१२ में बृहस्पति होय तो पूजादि कर लेने पर भी विवाह मृत्यु प्रद होता है। तथा ६।१।३।१० वें स्थान में गुरु होने पर अत्यन्त पूजा-दानादिक करने पर विवाह शुभकारी होता है। यदि ११।२।५।७।९ वें में बृहस्पति हो तो कन्या को शुभ है ॥४९-५१॥

चन्द्र विचार

आद्यश्चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ ५२ ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ ५३ ॥
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसेप्सितम्।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ५४ ॥

जन्म स्थान का चन्द्र लक्ष्मी प्राप्ति, दूसरा मन को सन्तोष, तीसरा धन और सम्पत्ति, चौथा कलहकारी, पञ्चम ज्ञान वृद्धि, छठा सम्पत्ति, सप्तम राजद्वार सम्मान, आठवां मृत्यु एवं नवम का धन लाभ, दशम का मन चाही सिद्धि, ग्यारहवां सर्व प्रकार का लाभ एवं १२ वां चन्द्रमा हानिप्रद है ॥५३-५४॥

चन्द्रविचार चक्रम्

| | |
|---|---|
| प्रथम | धनप्राप्ति, मित्र-मिलन |
| द्वितीय | मनःसन्तोष, व्यय भी |
| तृतीय | धनसम्पत्ति, पराक्रम |
| चतुर्थ | कलहागम, कष्ट |
| पञ्चम | ज्ञानवृद्धि, सुसंवाद |
| षष्ठम | विजय, उत्तम सम्पत्ति |
| सप्तम | राजसम्मान |
| अष्टम | मृत्यु |
| नवम | धर्मलाभ |
| दशम | कार्य व्यस्त, इच्छित लाभ |
| एकादश | सर्वलाभ |
| द्वादश | व्यय, हानि |
| × | × |

इस चक्र में ग्रन्थ के बाहर का भी फल अनुभव के आधार पर लिखा गया है।

कन्या की गौरी आदि संज्ञा

गौरी अष्टाब्दका वापि नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ५५ ॥

८ वर्ष की कन्या की गौरी, ९ वर्ष की रोहिणी, १० वर्ष की कन्या संज्ञा है। इससे अधिक वर्ष की रजस्वला संज्ञा कहलाती है ॥५५॥

## कन्यादान विचार

**गौरीं ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणीं ददत् ।**
**कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवन्तु रजस्वलाम् ॥ ५६ ॥**

गौरी दान करने वाले को पाताल लोक में, रोहिणी दान करने वाले को वैकुंठ में, कन्या संज्ञा वाली कन्या को दान देने पर मृत्यु लोक में सुख प्राप्त होता है तथा रजस्वला का दान देने वाला रौरव नरक को प्राप्त होता है ॥५६॥

## गौरी आदि का बल विचार

**गौरी गुरोर्बले देया रोहिणी भास्करस्य च ।**
**कन्या चन्द्रबले देया सर्वदोषविवर्जिता ॥५७॥**

गौरी आदि को गुरु बल, रोहिणी को सूर्य का बल तथा कन्या को चन्दमा का बल देखकर दान करना चाहिये ॥५७॥

## मतान्तर से गौरी आदि का विचार

**गुर्विन्दुर्कबला गौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी ।**
**रवीन्दुबलजा कन्या प्रौढा लग्नबला स्मृता ॥ ५८॥**

गौरी को वृहस्पति, चन्द्र तथा रवि का बल, रोहिणी को वृहस्पति तथा चन्द्रमा का बल, कन्या को सूर्य और चन्द्रमा का बल एवं प्रौढ़ा का लग्न का ही बल श्रेष्ठ है ॥५८॥

## ग्रहों का बलाबल

**जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमाः ।**
**तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥५९॥**
**जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीना मृतो वरः ।**
**चन्द्रहीना गता लक्ष्मीः स्थानहानिः कुजं बिना ॥६०॥**

गुरु जीव के दाता हैं, चन्द्रमा धन के, सूर्य तेज के देने वाले हैं तथा मंगल भूमि दाता है। गुरु के बल हीन होने पर कन्या की मृत्यु

हो, सूर्य बल हीन हो तो वर की मृत्यु, चन्द्रमा बलहीन हो तो लक्ष्मी का नाश एवं मंगल बलहीन हो तो स्थान हानि होती है ॥५९-६०॥

रजस्वला संज्ञक कन्या दान का फल

सम्प्राप्तैकादशे वर्षे या कन्या न विवाहिता ।
मासे मासे पिता भ्राता तस्याः पिबति शोणितम् ॥६१॥

ग्यारहवां वर्ष प्राप्त होने तक जो कन्या विवाही नहीं जाती, उस कन्या के पिता और ज्येष्ठ भ्राता प्रत्येक मास उसके रज संबन्धित रुधिर पान के तुल्य, पाप के भागी होते हैं ॥६१॥

प्रौढ़ा का बल विचार

द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्याः लग्नं प्रदापयेत् ॥६२॥

ग्यारह, बारह वर्ष की कन्या हो जाने पर उसकी शुद्धि नहीं होती । अतः लग्न शुद्धि तथा पूजा दानादिक करके शुभ शकुन में कन्या का विवाह कर दें ॥६२॥

रजस्वला कन्या के देखने का दोष

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च ।
त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम् ॥६३॥

यदि अविवाहित कन्या पिता के घर पर रजस्वला हो जाय, तो उसके दर्शन से माता-पिता तथा ज्येष्ठ भ्राता तीनों नरक में जाते हैं ॥६३॥

नाड़ी विचार

आदिमध्यान्तकं वापि अन्तमध्यादि भानि च ।
अश्विन्यादिक्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसंलिखेत् ॥६४॥
ऊर्ध्वगा वेदरेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दश स्मृताः ।
सर्पाकारं लिखेद्ज्ञानां नाडीचक्रं वदेद्बुधः ॥६५॥

अश्विन्यादिक नक्षत्रों का आदि, मध्य, अन्त एवं अन्त मध्य आदि क्रम से सर्पाकार क्रम से नाड़ी विचार निम्न चक्र में जानें ॥६४-६५॥

नाड़ी-चक्र

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | पुने. | उ फा. | ह | ज्ये | मू | श | पू भा. | आदि |
| भ | मृ | पु | पू. फा. | चि | अनु | पू षा | ध | उ भा. | मध्य |
| कृ | रो | श्ले | म | स्वा | वि | उ षा | श्र | रे | अन्त |

ब्राह्मणादि वर्णों का नाड़ी आदि विचार

**नाड़ीद्वोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु क्षत्रिये।**
**गणदोषस्तु वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥६६॥**

वस्तुतः ब्राह्मणों को नाड़ी विचार, क्षत्री को वर्ण विचार, वैश्य को गण विचार तथा शूद्र को योनि विचार करना चाहिए ॥६६॥

नाड़ी फल

**एकनाड़ीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम्।**
**विद्धायाञ्च भवेद्धानिर्विवाहे चाशुभं भवेत् ॥६७॥**

यदि वर कन्या का जन्म एक ही नाड़ी के नक्षत्रों में हो तो दोनों की मृत्यु तथा नाड़ी का वेद्य सेवा में हानिप्रद और विवाह में अशुभ है ॥६७॥

**आद्या नाड़ी वरं हन्ति मध्या नाड़ी च कन्यकाम्।**
**अन्त्यनाड्यां द्वयोर्मृत्युर्नाड़ीदोषं त्यजेद्बुधः ॥६८॥**

यदि वर-कन्या दोनों की नाड़ी हो तो वर की, मध्य में कन्या की तथा अन्त नाड़ी में दोनों की मृत्यु होती है। अतः बुद्धिमान लोग नाड़ी दोष त्याग देते हैं ॥६८॥

## नाड़ी परिहार

एकनक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥६९॥

यदि वर कन्या का एक ही नक्षत्र में जन्म हो तो नाड़ी दोष नहीं होता, अन्य नक्षत्रों में नाड़ी बेध होने पर विवाह त्याज्य है ॥६९॥

## विवाह के १० दोष

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपञ्चकम्।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥७०॥
दग्धातिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः।
एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेपद्बुधः ॥७१॥

लता, पात, युति, बेध, जामित्र, बुध पञ्चक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य तथा दग्धा तिथि—ये १० दोष महा बलवान हैं। इन को त्याग बुद्धिमान् जन लग्न करें ॥७०-७१॥

## लत्ता दोष का परिहार

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः।
षष्ठं जीवोऽष्टमं मन्दो हन्ति दक्षिणतः सदा ॥७२॥
वामेन सप्तमश्चान्द्रिर्नवमे सिंहिकासुतः।
हन्ति मं पञ्चमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ॥७३॥

रवि अपने नक्षत्र के बारहवें, मंगल तीसरे, बृहस्पति छठे, शनिवार आठवें नक्षत्र को दाहिनी तरफ से लात मारते हैं। बुध वाम ओर से ७ वें नक्षत्र को, राहु नवम नक्षत्र को, शुक्र पांचवे नक्षत्र को तथा पूर्ण चन्द्र २२ वें नक्षत्र को लात मारता है ॥७२-७३॥

## लत्ता का फल

रवेर्लता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम्।
बृहस्पतेर्बन्धुनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥७४॥

**बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ता राहोर्विनाशयेत् ।**
**शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥७५॥**

सूर्य की लत्ता धन को हरण करती है, भौम की लत्ता मृत्यु कारक, गुरु की लत्ता बन्धु-नाश, शनि की लत्ता कुल का क्षय करती है। बुध की लत्ता भयोत्पादक एवं राहु की लत्ता नाश कारक होती है, शुक्र की लत्ता सर्वदा दुखःदायी तथा चन्द्रमा की लत्ता भय देने वाली है ॥७४-७५॥

पात का विचार

**सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते ।**
**मघाऽऽश्लेषा च चित्रा च सानुराधा च रेवती ॥७६॥**
**श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ।**
**अश्विनीमर्वधि कृत्वा गणयेल्लग्नभावधि ॥७७॥**

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से पात दोष जानना। मघा, अश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती तथा श्रवण—इन छः नक्षत्रों के संसर्ग से ६ पात दोष होते हैं। प्रथम सत्ताइस रेखा खींच सूर्य के नक्षत्रों की स्थापना कर अश्विनी से लेकर विवाह तक लग्न गणना करनी चाहिए। यदि पूर्वोक्त नक्षत्रों में गणना पूरी हो तो पात दोष जानना चाहिये ॥७६-७७॥

पात नाम

**पावकः पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः ।**
**मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयं पातषट्कस्य लक्षणम् ॥७८॥**

पावक, पवमान, विकार, कलह, मृत्यु, क्षय—यह ६ प्रकार के पात कहे गये हैं ॥७८॥

पात विचार

**पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः ।**
**पातेन पतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥७९॥**

पात ने ब्रह्मा, हरि तथा शंकर को पतित किया। अतः विवाह में पात दोष निषिद्ध है ॥७९॥

देश भेद से पात दोष परिहार

**चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघामालवके निषिद्धः।**
**पौष्णश्रुती चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः॥८०॥**

चित्रा नक्षत्र का पात विचित्र देश में, अनुराधा एवं मघा नक्षत्र का पात मालवा देश में वर्जित है। रेवती और श्रवण का पात उत्तर देश में तथा आश्लेषा का पात सर्वत्र निषिद्ध है ॥८०॥

युति दोष विचार

**यत्र गृहे भवेच्चन्द्रः ग्रहस्तत्र यदा भवेत्।**
**युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥८१॥**

जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो, उसी में यदि और कोई ग्रह हो तो युति दोष जानना। किन्तु शुक्र के बिना यदि शुभ ग्रह हो तो शुभ एवं अशुभ ग्रह हों तो अशुभ युति दोष जानना चाहिए ॥८१॥

युति दोष का फल

**रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी।**
**करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥८२॥**

यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो हानि, मंगल हो तो मृत्यु तथा राहू, केतु, शनिश्चर हों तो मूल नाशक हैं ॥८२॥

युति योग परिहार

**वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चं वा मित्रराशिगः।**
**युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्यो श्रेयसी सदा ॥८३॥**

यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो अथवा उच्च का हो अथवा मित्र राशि में हो तो युति दोष नहीं होता और स्त्री-पुरुष को सर्वदा श्रेष्ठकर (शुभ) होता है ॥८३॥

## विवाह में पञ्चशलाका चक्र

पञ्चोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखाः पञ्च तिर्यङ् मुखास्तथा ।
द्वयोश्च कोणयोर्द्वन्द्वे चक्रं पञ्चशलाककम् ।।८४।।

ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च ।
ते ग्रहास्तु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ।।८५।।

लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ।
तन्नक्षत्रस्थितश्चन्दो दातव्यो गणकोत्तमैः ।।८६।।

पञ्चशलाका चक्र

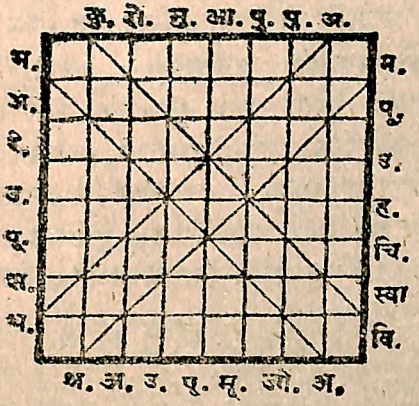




### बेध का फल

पांच रेखा ऊर्ध्वाकार और पांच ही रेखा तिरछी तथा दो-दो रेखायें कोणों में खींचने से पञ्चशलाका चक्र बनता है। ईशान कोण की रेखा पर कृत्तिका रखकर क्रमशः अन्य रेखाओं के सिरों पर शेष सत्ताईस नक्षत्र रखें। जो ग्रह जिस नक्षत्र में हो उसकी भी स्थापना करें। विवाह लग्न के समीप में जो पूर्णिमा में जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उस नक्षत्र पर चन्द्रमा को स्थापित कर बेध विचार करें ।।८४-८६।।

### बेध फल

एकरेखायुतिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥८७॥

विवाह में जिस नक्षत्र का लग्न हो और उसी पर सूर्यादि कोई ग्रह हो तो वह बेध होता है। अतः उसमें विवाह करने से एक मास में ही मृत्यु हो जाती है ॥८७॥

### बेध के नक्षत्र

अश्विनी पूर्वफल्गुन्या भरणी चानुराधया ।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखया ॥८८॥
मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथाऽऽर्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥८९॥
धनिष्ठया तथाऽऽश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तरफल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥९०॥
स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात् ।
विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानिकोविदैः ॥९१॥

अश्विनी का पूर्वाफाल्गुनी से, भरणी का अनुराधा से, अभिजित का रोहिणी से कृतिका का विशाखा से, मृगशिर का उत्तराषाढ़ से, पू० षा० का आर्द्रा से, पुनर्वसु का मूल से, पुष्य का ज्येष्ठा से, धनिष्ठा का अश्लेषा से, मघा का श्रवण से, रेवती का उत्तरा फाल्गुनी से, हस्त का उत्तरा भाद्रपद से, स्वाती का शतभिषा से एवं चित्रा का पूर्वाभाद्रपद से परस्पर बेध होता है, जैसा कि पञ्चशलाका चक्र में दिखाया गया है। यह बेध नक्षत्र विवाह में वर्जित है ॥८८-९१॥

### बेध फल

रविवेधे च वैधव्यं कुजुवेधे कुलक्षयः ।
बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥९२॥

**अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ।**
**पुरुषान्यरता राहौ केतौ स्वच्छन्दचारिणी ॥९३॥**

यदि सूर्य के वेध में विवाह हो तो कन्या विधवा, मंगल वेध में कुल-क्षय, बुध में बांझ, गुरु के वेध में सन्यासिनी, शुक्र के वेध में विवाह होने से निपुत्री, शनि वा चन्द्रमा का वेध होने पर दुःखी, राहु का वेध होने पर परपुरुष-गामिनी तथा केतु का वेध हो तो स्वेच्छा-चारिणी होती है ॥९२-९३॥

युति दोष विचार

**शनिराहुकुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः ।**
**विवाहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत् ॥९४॥**

विवाह में शनि, राहु, मंगल तथा इनमें से कोई ग्रह जन्म के नक्षत्र पर होय तो कन्या विधवा हो जाती है ॥९४॥

जामित्र दोष विचार

**चतुर्दशं च नक्षत्रं जामित्रे लग्नभात्स्मृतम् ।**
**शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥९५॥**
**चन्द्रश्चान्द्रिर्भृगुर्जीवो जामित्रे शुभकारकाः ।**
**स्वर्भानुर्भानुमन्दारा जामित्रे न शुभप्रदाः ॥९६॥**

लग्न के नक्षत्र से चौदहवाँ नक्षत्र जामित्र कहलाता है । यदि शुभ युक्त हो तो ग्राह्य एवं पापयुक्त हो तो वर्जित है । चन्द्र बुध, शुक्र तथा गुरु के जामित्र शुभ और राहु, केतु, सूर्य तथा शनि, मंगल के जामित्र अशुभ होते हैं ॥९५-९६॥

**चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे ।**
**तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवैधव्याकारकाः ॥९७॥**

चन्द्रमा एवं लग्न से सातवें स्थान में कोई ग्रह हो तो निश्चय ही व्याधि और वैधव्य कारक होता है ॥९७॥

बुध पञ्चक बाण विचार

**धार्या तिथिर्मासदशाष्टवेदाः संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः ।**
**ग्रहैर्विभक्ता यदि पञ्चशेषा रोगस्तथाऽनिनृपचौरमृत्युः ॥९८॥**

१५, १२, १०, ८ तथा ४ इन संख्याओं को सूर्य की संक्रान्ति को गये जितने दिन हुये हों उतने दिन सब में अलग-अलग जोड़कर ९ का भाग दो। यदि पांच शेष रहें तो क्रमशः रोगपञ्चक, अग्निपञ्चक, नृप पञ्चक, चौर पञ्चक और मृत्यु पञ्चक जानें ॥९८॥

वार सम्बन्ध से बाण विचार

**यद्यर्कवारे किल रोगपञ्चकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्निः।**
**सौरौ च मृत्युर्धिषणे च चौरो विवाहकाले परिवर्जनीयः ॥९९॥**

विवाह में रविवार को रोगपञ्चक, चन्द्रवार को नृपपञ्चक मंगलवार को अग्निपञ्चक, शनिवार को मृत्युपञ्चक तथा शुक्रवार को चौर पञ्चक वर्जित है ॥९९॥

दिन-रात्रि वश से बाण परिहार

**रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राज्याग्निपञ्चकम्।**
**उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युमन्यकालमनिन्दिताः ॥१००॥**

रात्रि में रोगपञ्चक और चौर पञ्चक, दिन में नृप पञ्चक और अग्नि पञ्चक एवं सूर्यास्त और सूर्योदय के समय सन्धियों में मृत्यु पञ्चक निषिद्ध हैं, अन्य समय में त्याज्य नहीं हैं ॥१००॥

उपग्रह (विद्युदादि दोष)

**सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे।**
**चतुर्दशे शनेः पातः केतुरष्टादशे तथा ॥१०१॥**
**ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशके।**
**त्रयोविंशतिके कम्पः पञ्चविंशे तु वज्रकः ॥१०२॥**

सूर्य के नक्षत्र से ५ वें नक्षत्र पर विद्युत् दोष, आठवें पर शूल दोष, १४ वें नक्षत्र पर शनिपात दोष, १८ वें पर केतुदोष, १९ वें पर उल्कापात दोष, २२ वें पर निर्घात् २३ वें पर कम्प और २५ वें नक्षत्र पर वज्र दोष होता है ॥१०१-१०२॥

उपग्रह फल

**पुत्रनाशकरी विद्युत् पत्युः शूलो विनाशकः।**
**शनेः पातो वंशघाती केतुर्देवरनाशकः ॥१०३॥**

द्रव्यनाशकरी चोल्का निर्घातो बन्धुनाशकः ।
कम्पः कम्पयते नित्यं वज्रे स्त्री व्यभिचारिणी ॥१०४॥

विद्युत दोष में विवाह करने से पुत्रनाश, शूलदोष में पतिनाश, शनिपात में वंशनाश, केतुदोष में देवर की मृत्यु, उल्का में द्रव्य नाश तथा निर्घातदोष में बन्धु नाश होता है। कम्पदोष में नित्य ही कंपाता है। वज्र दोष में विवाह हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥१०३-१०४॥

एकार्गल योग

योगाङ्के विषमे चक्रे देयोऽष्टाविंशतिः समे ।
अर्द्धं कृत्वाऽश्विनीपूर्वमङ्कं मूर्ध्नि प्रदीयते ॥१०५॥

यदि विष कुम्भादि योग की संख्या विषम हो तो और सम हो तो २८ जोड़ कर आधा करे, जो शेष बचे उसे अश्विनी आदि क्रम से चक्र के मस्तक पर लिखे ॥१०५॥

विष्कम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वातिर्निगद्यते ।
सौभाग्ये च विशाखा स्यादायुष्मान्भरणीयुतः ॥१०६॥
शोभने कृत्तिका देया अनुराधा च गण्डके ।
रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्त्तिता ॥१०७॥
गण्डे मूलं मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते ।
पूर्वाषाढा ध्रुवे प्रोक्ता व्याघाते चेत्पुनर्वसुः ॥१०८॥
हर्षणे चोत्तराषाढा वज्रे पुष्यः प्रकीर्त्तितः ।
अभिजिच्च तथा सिद्धावाश्लेषा व्यतिपातके ॥१०९॥
वरीयसि श्रुतिर्देया परिघे च मघा तथा ।
शिवे धनिष्ठा दातव्या सिद्धौ पूर्वा च फाल्गुनी ॥११०॥
साध्ये शतभिषा देया शुभे चोत्तरफल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ले हस्तो ब्राह्मो प्रकीर्त्तितः ॥१११॥
उत्तराभाद्रपच्चैन्द्रे चित्रा देया च वैधृतौ ।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलं तदा ॥११२॥

त्रयोदश तिरोरेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्न्यभिस्मृता ।
योगाङ्के प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥११३॥

तेहरा तिरछी और १ रेखा खड़ो कर पूर्वोक्त प्रकार से सब नक्षत्र स्थापित करे, इसे एकार्गल चक्र कहते हैं । यदि सूर्य चन्द्रमा का योग १ रेखा में हो तो इसे एकार्गल दोष कहते हैं ॥१०६-११३॥

एकार्गल चक्र

क्रान्ति साम्य विचार

ऊर्ध्वास्तिस्त्रस्तिरस्तिस्त्रो मध्ये मीनं लिखेद्बुधः ।
सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौ क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥११४॥
मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहेन सङ्गतः ।
मकरेण वृषक्रान्तिश्चापोऽपि मिथुनेन च ॥११५॥
कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः ।
क्रान्तिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ॥११६॥

तीन रेखा तिरछी और तीन रेखा खड़ी खींचकर बीच रेखा पर मीन लिख क्रमशः सब राशियां स्थापित करे। सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर पड़े तो क्रान्ति साम्य दोष होता है, जैसे—मीन का कन्या से, मेष सिंह

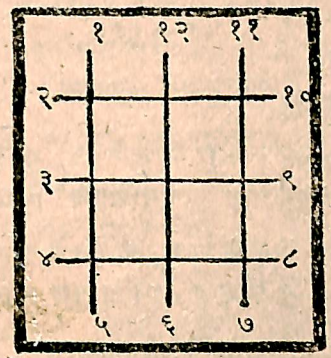


से, वृष का मकर से, धनु का मिथुन से, कर्क वृश्चिक से तुला कुम्भ से वेध होता है। विवाहादिक शुभ कार्यों में ग्रह वेध क्रान्ति साम्य वर्जित है ॥११४-११६॥

क्रान्ति साम्य का फल

**क्रान्तिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत्।**
**कन्या वैधव्यतां याति ईशस्य दुहिता यदि ॥११७॥**

क्रान्ति साम्य में विवाह होने वाली कन्या अवश्य विधवा होती है, चाहे वह स्वयं महादेव जी की कन्या क्यों न हो ॥११७॥

कण्टकादि दोष विचार

**मर्मवेधः कण्टकश्च शल्यं छिद्रं चतुर्थकम्।**
**एतद्वेधचतुष्कं तु परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥११८॥**
**लग्ने पापे मर्मवेधः कण्टको नवपञ्चके।**
**चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ॥११९॥**

१ मर्म भेद, २ कण्टक, ३ शल्य, ४ छिद्र इन चारों वेधों को यत्न पूर्वक त्यागना चाहिये। यदि लग्न में पाप ग्रह हो तो मर्म वेध, पांचवें और ९ वें स्थान में पाप ग्रह हों तो कण्टक, चौथे और १० वें स्थान में पाप ग्रह हो तो शल्य दोष कहते हैं तथा ७ वें में पाप ग्रह हो तो छिद्र दोष होता है ॥११८-११९॥

कण्टकादि का फल

**मरणं मर्मवेधे स्यात् कण्टके च कुलक्षयः।**
**शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ॥१२०॥**

मर्म वेध में विवाह होने से मृत्यु, कण्टकमें कुलक्षय, शल्य में राजा से भय तथा छिद्र दोष में विवाह होने से पुत्र नाश होता है ॥१२०॥

जन्म मासादि विचार

**जन्ममासे जन्मभे च नैव जन्मदिनेऽपि च।**
**ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥१२१॥**

जन्म मास, जन्म नक्षत्र तथा जन्म दिन में विवाह न करे और ज्येष्ठ गर्भ की सन्तान का ज्येष्ठ मास में कदापि विवाह न करे ॥१२१॥

**न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम्।**
**द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥१२२॥**

यदि वर कन्या दोनों ज्येष्ठ गर्भ के हों तो ज्येष्ठ मास में विवाह वर्जित है, अन्यथा एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करने में दोष नहीं है ॥१२२॥

सिंहस्थ गुरु विचार

**सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन।**
**शेषस्थिते दिवानाथे सिंहज्ये च शुभप्रदः ॥१२३॥**

सिंहस्थित बृहस्पति में विवाह अशुभ है। परन्तु मेष स्थित सूर्य हो तो सिंहस्थित वृहस्पति में ही विवाह शुभ होता है ॥१२३॥

ग्रहों का विश्वबल विचार

रवौ सार्धत्रयो भागाः पञ्च चन्द्रे गुरौ त्रयः।
द्वे द्वे शुकेन्दुपुत्रे स्याद्विश्वाभागप्रदायकाः ॥१२४॥
प्रत्येकं सार्धभागाश्च मन्दमङ्गलराहुषु।
ग्रहा बलयुता विश्वाः प्रयच्छन्ति न दुर्बलाः ॥१२५॥

सूर्य ३॥ भाग, शनि, मंगल, राहु एवं केतु यह १॥-१॥ भाग विश्वबल देते हैं और जब निर्बल होते हैं तो बल नहीं देते ॥१२४-१२५॥

लग्न शुद्धि

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोण शुभाः शुभाः।
धने शुभप्रदश्चन्द्रः पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥१२६॥
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वरकन्ययोः ॥१२७॥

सप्तम हीन केंद्र (१, ४, १०, २, ५, ९ इन स्थानों में) शुभ ग्रह (शुक्र, बुध, वृहस्पति, शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष को पञ्चमी तक चन्द्रमा) शुभ होते हैं। धन स्थान चन्द्रमा एवं छठे पाप ग्रह भी भी शुभ होते हैं। परन्तु ७ वें स्थान में शुभ या अशुभ कोई भी ग्रह हो तो कन्या तथा वर की मृत्यु कारक हाता है ॥१२६-१२७॥

शनिः सूर्यश्च लग्नेऽस्ते चन्द्रो लग्नेऽष्टमे रिपौ।
कुजो लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रो द्यूनेऽष्टमे रिपौ ॥१२८॥
गुरुर्मृत्यौ सैंहिकेया लग्ने तुर्ये च सप्तमे।
बुधोऽष्टमे च जामित्रे विवाहः प्राणनाशकः ॥१२९॥
क्रूरयोरन्तरे लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत्।
वरं हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम् ॥१३०॥

शनि एवं सूर्य लग्न एवं सप्तमस्थान में हो, चन्द्रमा १, ८, ६ हो, वृहस्पति ८ वें में, राहु १, ४, ७ में हो और बुध ८ वें ७ में हो तो विवाह में प्राणनाशक होता है, क्रूर ग्रहों के मध्य में लग्न अथवा चन्द्रमा हो तो विवाह अनिष्टकारक है। क्रूरान्तक लग्न हो तो घर का और क्रान्त चन्द्रमा हो तो कन्या का नाश करता है ॥१२८-१३०॥

विवाह में शुभ लग्न

तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषो वृषः।
एते लग्नाः शुभा नित्यं मध्यमाश्चापरे स्मृताः ॥१३१॥

तुला, मिथुन, कन्या, वृष तथा धनुका पूर्वार्ध योग लग्न विवाह में शुभ है, शेष मध्यम हैं ॥१३१॥

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥१३२॥

लत्ता दोष मालवा में, पात दोष कुरु एवं जांगल देश में एकार्गल दोष काश्मीर में और वेध दोष सब देशों में वर्जनीय है ॥१३२॥

नवमांश विचार

मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः।
मिथुने च तलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः ॥१३३॥
मेषाद्यौ च धनुःसिंहौ गोकन्ये मकरादिके।
तुलाद्यौ युग्मकुम्भौ च कर्काद्यौ मीनवृश्चिकौ ॥१३४॥
गोतुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभदाः स्मृताः।
धनुषः प्रथमो भागो विवाहेऽन्ये च मध्यमाः ॥१३५॥

मेष, सिंह, धनु में मेषादि, वृष, कन्या, मकर में मकरादि, मिथुन, तुला, कुम्भ में तुलादि, कर्क, वृश्चिक, मीन में कर्कादि नवमांश होता है। विवाह में मिथुन, कन्या, तुला, धन, वृष के नवमांश शुभ होते हैं ॥१३३-१३५॥

## लग्न नवमांश

**अंशस्य पतिरंशे तन्मित्रं वा शुभोऽपि वा।**
**पश्यतीह शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फला ॥१३६॥**

॥ अथ मेषादिराशीनांनवांशक चक्रम् ॥

| अ | मे | वृ | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ २० | मे | म | तु | क | मे | म | तु | क | मे | म | तु | क |
| ६ ४० | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु | वृ | मि |
| १० ० | मि | मी | ध | क | मि | मी | ध | क | मि | मी | ध | क |
| १३ २० | क | मे | म | तु | क | मे | म | तु | क | मे | म | तु |
| १६ ४० | सि | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु | वृ |
| २० २० | क | मि | मी | ध | क | मि | मी | ध | क | मि | मी | ध |
| २३ २० | तु | क | मे | म | तु | क | मे | म | तु | क | मे | म |
| १६ ४० | वृ | सि | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु | वृ | सि | वृ | कु |
| ३० ० | ध | क | मि | मी | ध | क | मि | मी | ध | क | मि | मी |
| अ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

नवमांश का स्वामी अपने अंश में रहे और उनका मित्र अथवा शुभ ग्रह उन को देखता हो तो शुभ फल दायक होता है और सब दोष निष्फल हो जाते हैं ॥१३६॥

## होलाष्टक विचार

**शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् ।**
**पूर्णिमामवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥१३७॥**
**शुतुद्र्याञ्च विपाशायमैरावत्यां त्रिपुष्करे ।**
**होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम् ॥१३८॥**

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से पूर्णिमा तक होलाष्टक दोष होता है। शुतुद्रि, विपाशा एवं इरावती नदी के तीर और त्रिपुष्कर के समीपस्थ त्याज्य है और अन्यत्र शुभ है ॥१३७-१३८॥

## दिवान्धादि लग्न विचार

**दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।**
**मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराने सन्ह्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः॥१३९॥**

वृष, मेष, सिंह लग्न दिन में अन्ध होता है । मिथुन, कर्क, कन्या लग्न रात्रि में अन्ध होते हैं। तुला, वृश्चिक और मकर लग्न अपराह्न में बहरे होते हैं तथा कुबड़े होते हैं ॥१३९॥

## दिवान्धादि लग्न फल विचार

**दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।**
**दुःखदो बधिरः प्रोक्तः कुब्जो वंशविनाशकः ॥१४०॥**

दिवान्ध लग्न में विवाह हो तो वर की हानि, रात्रि के अन्ध लग्न में विवाह होने पर धन का नाश, बहरे लग्न में विवाह हो तो दुःख तथा कुबड़े लग्न में विवाह होने पर वंश का नाश होता है ॥१४०॥

## गो धूलि लग्न विचार

**यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयश्च तृतीयकः ।**
**गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषा धूलिमुखाः स्मृताः ॥१४१॥**

यदि ११, २, ३ स्थान में चन्द्रमा हो तो गोधूलिक लग्न कहते हैं। अन्य स्थान में चन्द्रमा होने पर धूलिमुख कहते हैं ॥१४१॥

## त्याज्य दोष

**कुलिकः क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी ।**
**तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैश्च दूषितः ॥१४२॥**

कुलिक, क्रान्तिसाम्य दोष तथा लग्न से छठे और आठवें यदि चन्द्रमा हो तो उस पांच दोषों से दूषित गोधूलिक लग्न त्याज्य है ॥१४२॥

## गोधूलिक का समय

**यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः ।**
**सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥१४३॥**

जब तक सूर्य अस्त न हुआ हो और गौओं के खुरों से उड़ी हुई धूलि से आकाश अच्छादित हो, वह गौ धूलिक समय समस्त कार्यों में मंगल प्रद है ॥१४३॥

## गो धूलि नाश दोष

**अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे ।**
**लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥१४४॥**

यदि लग्न से ८ वें स्थान में भौम, गुरु, बुध, शुक्र हों अथवा लग्न में ६, ८ वें चंद्रमा हों तो गोधूलिक की श्रेष्ठता जाती रहती है ॥१४४॥

## लग्न शुद्धि विचार

**लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।**
**तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥१४५॥**

**चन्द्रो धने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके ।**
**बुधेज्यौ नवषड्द्वित्रिचतुष्पञ्चदशे स्थितौ ॥१४६॥**

**शुक्रो द्वित्रिचतुष्पञ्चधर्म्मकर्मतनु स्थितः ।**
**राहुर्दशाष्टषट्पञ्चत्रिनवद्वादशे शुभः ॥१४७॥**

लग्न से ११ वें स्थान में सब ग्रह शुभ फलदायक हैं। २, ८ वें सूर्य और शनि; २, ३ में चंद्रमा तथा ३, ३, ६ में भौम; ९, २, ३, ४, ५, १० में बुध और गुरु २, ३, ४, ५, ९, १०, १ में शुक्र एवं राहु केतु १०, ८, ६, ५, ३, ९, १२ वें स्थान में शुभ होते हैं ॥१४५-१४७॥

दिन में इष्ट काल ज्ञान

छायापादै रसोपेतैरेकविंशशतं भजेत्।
लब्धाङ्के घटिका ज्ञेयाः शेषाङ्के च पलाः स्मृताः ॥१४८॥

अपनी छाया को अपने पांवों से नापो। जितनी पावों की छाया हो उसमें ६ और मिला कर १२१ से भाग दें। जो भाग से लब्धि आवे उसे दिन घड़ी जानें (यदि दिन चढ़ता हो तो उतनी घड़ी दिन चढ़ा समझें और यदि दोपहर हो तो बाद के उतनी घड़ी दिन बाकी समझें) भाग देने से जो शेष बचे, उसको ६० से गुणा करके पुनः १२१ से भाग देने पर लब्धि पल होती है ॥१४८॥

नक्षत्रोदय और रात्री में इष्ट काल ज्ञान

पूर्वाषाढाऽनुराधा च ज्येष्ठाऽऽश्लेषा च रेवती।
विशाखा च यदा मूर्ध्नि तदा स्यादष्टमोदयः ॥१४९॥
सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं च शेषकम्।
द्विगुणं च द्विहीनं च गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥१५०॥
मस्तके मृगशीर्षे च मूल च नवमोदयः।
अन्यदृक्षे तदा मूर्ध्नि यदा स्यादष्टमोदयः ॥१५१॥

पूर्वाषाढ़, अनुराधा, ज्येष्ठा, अश्लेषा, रेवती, विशाखा इन नक्षत्रों में कोई नक्षत्र माथे पर हो तो आठवें नक्षत्र पर उदय जानिये। सूर्य के नक्षत्र से मस्तक के नक्षत्र तक गिन कर, उस में सात का भाग दें, जो शेष बचे उस को दूना कर के दो और घटावे—वह गत रात्रि

अथवा भोग्य होती है। मृगशिर या मूल माथे पर हों तो नवम नक्षत्र एवं अन्य नक्षत्र माथे पर हों तो आठवें नक्षत्र का उदय जानना चाहिये ॥१४९-१५१॥

लग्न शुद्धि परिहार

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केसरी ॥१५२॥

जिस मनुष्य के केन्द्र (१।४।७।१०) में गुरु (बृहस्पति) हों उस का और ग्रह क्या कर सकते हैं अर्थात् कोई ग्रह अनिष्ट नहीं कर सकते। जिस प्रकार अकेला सिंह सैंकड़ों हाथियों के समूह को नष्ट कर देता है; उसी भांति केन्द्र का गुरु भी बली होता है ॥१५२॥

शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्केन्द्रे व्यपोहति ॥१५३॥

यदि लग्न में शुक्र हो तो दश हजार दोषों का, बुध हो तो एक हजार दोषों का नाश करता है ॥१५३॥

त्रिनाड़ी चक्र

सर्पाकारं लिखेच्चक्रं विवाहे च त्रिनाडिकम्।
अश्विनीप्रमुखं भं च दत्त्वा साम्यं विचारयेत् ॥१५४॥
एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम्।
सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे त्वशुभं भवेत् ॥१५५॥

सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र लिखकर उस पर अश्विनी आदि २७ नक्षत्र क्रमशः लिखें। यदि एक नाड़ी में स्त्री-पुरुष दोनों के नक्षत्र हों तो दोनों की मृत्यु होती है। सेवा (नौकरी में) हानि और विवाह में भी ऐसा ही अशुभ होता है ॥१५४-१५५॥

त्रिनाड़ी चक्र—

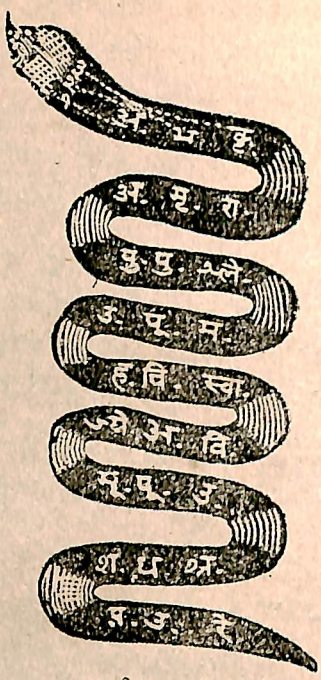

वर्ज्ययोगः—

योगों में वर्ज्य घड़ी

परिघार्द्धं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यजेत् ।
विष्कम्भे घटिकाः पञ्च शूले सप्त प्रकीर्त्तिताः ॥१५६॥
षट्कं गण्डेऽतिगण्डे च नवव्याघातवज्रयोः ।
एते तु नव योगाश्च वर्ज्या लग्ने सदा बुधैः ॥१५७॥

परिघ योग की ३० घड़ी, व्यतीपात और वैधृति सम्पूर्ण त्याज्य हैं। विष्कुम्भ की ५ घड़ी, शूल की सात तथा गण्ड और अतिगण्ड की

६ घड़ी, व्याघात एवं वज्र की ९ घड़ी—ये नौ योग विवाह लग्न आदि शुभ कार्यों में वर्जित हैं ॥१५६-१५७॥

वर्ज्य योगों का फल

व्यतीपाते भवेन्मृत्युर्गण्डान्ते मरणं ध्रुवम् ।
अग्निदाहो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गण्डके ॥१५८॥
वैधव्यं वैधृतौ चैव विष्कम्भे कामचारिणी ।
वीर्यहीनोऽतिगण्डे च व्याघाते मृतवत्सका ।
परिघे च भवेद्दासी मद्यमांसरता सदा ॥१५९॥

व्यतीपात में विवाह करने से मृत्यु, गण्डान्त में निश्चय मृत्यु, वज्र में अग्नि से दग्ध, गण्ड में रोग, वैधृति में विधवा, विष्कुम्भ में कामातुर, अतिगण्ड में बलहीन, व्याघात में मृतवत्सा और परिघ योग में मदिरा मांस का सेवन करने वाली दासी होती है ॥१५८-१५९॥

पट्ट चक्रम्

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ।
यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यगं त्रयम् ॥१६०॥
त्रयं त्रयञ्च सर्वत्र ततः पूर्वादितो लिखेत् ।
नक्षत्रत्रितये मध्ये पक्षद्वयविनाशनम् ॥१६१॥
पूर्वस्थाने भवेल्लक्ष्मीर्धनधान्यसमागमः ।
अग्निकोणे भवेन्मृत्युर्नारी कलाविनाशिनी ॥१६२॥
दक्षिणे दुर्भगा नारी दारिद्र्यं मृत्युमाप्नुयात् ।
नैर्ऋत्ये पुत्रलाभश्च सुखं सौभाग्यमेव च ॥१६३॥
पश्चिमे विधवा कन्या वायव्ये व्यभिचारिणी ।
उत्तरे धनधान्यानि ऐशान्ये सुखसम्पदः ॥१६४॥
माङ्गल्यं सर्वकार्येषु पट्टचक्रं विचारयेत् ।
गर्गाचार्येण सम्प्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१६५॥

पट्टा के आकार का आठ कोण का चक्र बनावें। जिस नक्षत्र पर सूर्य हो, उस नक्षत्र से तीन नक्षत्र उसके मध्य में स्थापित कर के शेष नक्षत्र ३-३ करके पूर्वादि आठों दिशाओं में भी स्थापित करें। मध्य के तीन नक्षत्रों में विवाह नक्षत्र पड़े तो उभय पक्षों की हानि हो। पूर्व के तीन नक्षत्रों में लक्ष्मी, धन-धान्य की प्राप्ति हो, अग्नि कोण में मृत्यु एवं स्त्री कुल नाशिनी, दक्षिण में स्त्री दुर्भगा तथा दारिद्रय और मृत्यु हो, नैर्ऋत्य में पुत्र लाभ, सुख और सौभाग्य; पश्चिम में धन, धान्य तथा ईशान में विवाह नक्षत्र पड़े तो सुख सम्पत्ति हो। इस गर्गाचार्य द्वारा बताये गये पट्टचक्र का सर्व कार्यों में विचार करना चाहिये ॥१६०-१६५॥

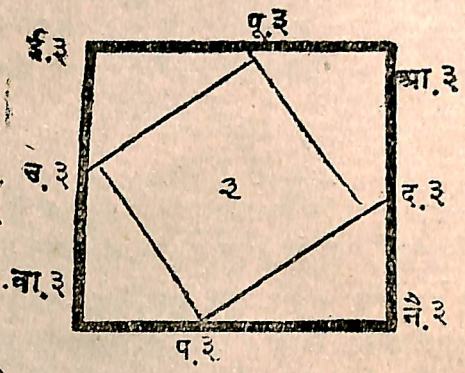


इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृत शीघ्रबोधे अर्गलपुर मण्डलान्तर्गते सेंगई ग्रामवासिन् पं० ऋषिकुमार शर्मा विरचितायांज्योतिष तत्व बोधिनी हिन्दी भाषा टीकायां विवाह प्रकरणं समाप्तम् ॥

# द्वितीय प्रकरणम्

## द्विरागमन मुहूर्त्त

धातृयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥१॥
विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने ।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्यातुलाधनुः ॥२॥
भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिताः ॥३॥

रोहिणी, मृग०, अश्विनी, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाषाढ़ा, मूल, तीनों उतरा ये नक्षत्र द्विरागमन में श्रेष्ठ हैं तथा विवाह से विषम वर्ष श्रेष्ठ हैं (१-३ ५-७ आदि। मार्ग शीर्ष, फाल्गुन और वैशाख मास, मकर, मिथुन, मीन, कन्या, तुला एवं धन ये लग्न शुभ हैं। शनि और मंगल वार, षष्ठी, द्वादशी, अमावस, रिक्ता, (४-९-१४) ये तिथियां द्विरागमन में वर्जित हैं ॥१-३॥

## गर्भाधान मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे ॥
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥४॥

पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों तथा त्रिकोण [९-५] और केन्द्र [१-४-७-१०] में शुभ ग्रहों के रहते एवं ३।६।११ इनमें पाप ग्रहों के रहते पुत्र की कामना से सम रात्रियों में रजो दर्शन के चार दिन छोड़कर स्त्री संभोग करे ॥४॥

## पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त

आर्द्रात्रयं भाद्रयुग्मं मृगः पूषा श्रुतिः करः।
मूलत्रयं गुरौ सूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः ॥५॥
आद्ये द्वये त्रये मासे लग्ने कन्याझषस्थिरे।
चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमन्तं चाष्टमे तथा ॥६॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, हस्त, मृग; श्रवण, रेवती तथा मूलसे ३ नक्षत्रों [मूल पूर्वाषाढ़, उत्तरा] में, रवि मंगल और गुरुवार में रिक्ता को छोड़ अन्य तिथियों में कन्या, मीन, धन एवं स्थिर राशि [२।५।८।११] के लग्न में, गर्भाधान से पहले, दूसरे मास में पुंसवन तथा आठवें मास में सीमन्तोन्नयन संस्कार करना शुभप्रद होता है ॥५-६॥

## नाम करण मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे।
मूलोत्तराधनिष्ठासु द्वादशैकादशे दिने ॥७॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बधशशाङ्कयोः।
भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालनाम कृतं शुभम् ॥८॥

पुन०, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु; ज्येष्ठा; मृग, मूल, तीनों उत्तरा, धनिष्ठा, इन नक्षत्रों में एवं ग्यारहवें या बारहवें दिन में, शुभ योगों में, बुध, रवि और गुरुवार इन वारों में तथा स्थिर लग्न में बालक का नामकरण शुभ होता है ॥७-८॥

## बहिर्निष्क्रमण मुहूर्त्त

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वेऽदितिद्वये।
स्वाती हस्तोत्तराषाढापूर्वार्यमहयेषु च ॥९॥
सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः।
यात्रातिथौ च निष्कास्यः शिशुर्नैवार्कभौमयोः ॥१०॥

पुन०, ज्ये०, श्र०, ध०, रो० मृ०, पुन०, पुष्य, स्वाती, हस्त, उ० षा०, रेवती, उ०फा० और अश्विनी इन नक्षत्रों में, सिंह, कन्या, तुला

और कुम्भ लग्नों में, जन्म से तीसरे चौथे मास में यात्रोक्त तिथियों में तथा शनि, मंगल छोड़कर अन्य दिनों में बालक को सब से प्रथम बाहर निकालना शुभ होता है ॥६-१०॥

सूतिका स्नाने मूहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥११॥
सोमशुक्रबुधा वाराः प्रसूतास्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिक्षयम् ॥१२॥

पुन०, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, मूल, आर्द्रा, मघा और श्रवण ये नक्षत्र एवं सोमवार, शुक्रवार, बुध ये वार, प्रतिपदा, षष्ठी, नवमी और क्षय तिथि ये प्रसूतिका स्नान में वर्जित हैं ॥११-१२॥

स्त्री नूतनाम्बर धारण मुहूर्त्त

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च रेवती ।
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥१३॥
लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषः शुभः ।
पुष्ये पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥१४॥

ह०, चि०, स्वा० वि०, अनु०, ध०, रे०, पुन०, पुष्य, रो०, कृ० तीनों उत्तरा, गुरु, शुक्र एवं बुधवार; मीन, कन्या, मिथुन, वृष इन लग्नों में स्त्री नवीन वस्त्र धारण करे तो शुभ है ॥१३-१४॥

प्रसूतिकास्नान एवं जल पूजन मुहूर्त्त

रोहिण्युत्तररेवत्योर्मूलं स्वात्यनुराधयोः ।
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठायां मृगशीर्षके ॥१५॥
एतान्युक्तानि भान्यत्र प्रसूतिस्नानकोविदैः ।
वारे भौमार्कयोर्जीवे स्नानमुक्तं सदैव हि ॥१६॥
मूलादितिद्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः ॥१७॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्व०, ध०, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मृग०, ये नक्षत्र तथा रवि, मंगल और गुरु यह वार प्रसूतिका स्नान में विशेष कर शुभ हैं। मूल, पुष्य, पुन०, श्र०, मृग०, हस्त नक्षत्र और सोम, बुध, गुरु शुभ कारक होता है ॥१५-१७॥

नवान्न भक्षणमुहूर्त्त

नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः।
वाराधिकौ सूर्यसोमौ नक्षत्रं श्रवणं मृगः ॥१८॥

वस्त्र धारण करने के मुहूर्त्त में तथा रवि और सोमवार एवं श्रव०, मृग० इन नक्षत्रों में नवान्न भोजन श्रेष्ठ हैं ॥१८॥

अन्न प्राशन मुहूर्त्त

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सार्पार्द्रा भरणी यमः।
नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ ॥१९॥

द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्व नंदास्तु वर्जिताः।
लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः ॥२०॥

शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्याः शुभचन्द्रमाः।
मासे षष्ठेऽष्टमे पुंसां स्त्रियो मासि च पञ्चमे ॥२१॥

तीनों पूर्वा, अश्लेषा, आर्द्रा, शत०, भरणी यह नक्षत्र, मंगल शनिवार तथा १२।७।९।१४।३०।१।६।११ ये तिथियां पूर्वोक्त नक्षत्रादि अन्न प्राशन में वर्जित हैं। वृष, मीन, मिथुन, कन्या इस लग्नों में एवं शुक्ल पक्ष में शुभ योग में, शुभ चन्द्रमा में, छठे और आठवें माह में बालकों को अन्न प्राशन शुभ है। परन्तु कन्या को पांचवें मास में अन्न प्राशन श्रेष्ठ है ॥१९-२१॥

चूड़ाकरण मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम्।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥२२॥

लग्नं गोस्त्रीधनुः कुम्भा मकरो मन्मथस्तथा ।
सौम्यवारे शुभे योगे चूड़ाकर्म स्मृत बुधैः ॥२३॥

पुन०, पु०, ज्ये०, मृग० श्र०, ध०, ह०, चि०, स्वा, रेवती ये नक्षत्र, शुक्लपक्ष तथा उत्तरायण, वृष, कन्या, धनु, कुम्भ, मकर, मिथुन ये लग्न सौम्यवार तथा शुभ योग में विद्वानों ने चूड़ाकर्म श्रेष्ठ कहा है ॥२२-२३॥

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वा च मृगपञ्जके ।
मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥२४॥

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पञ्चमे ।
विद्यारम्भोऽत्र वर्ज्यश्च पठनाध्यायरिक्तकाः ॥२५॥

रिक्तायाश्चामावास्यां प्रतिपच्च विवर्जयेत् ।
बुधेन्दुवासरौ मूर्खः शनिभौमौ मृतिप्रदौ ॥२६॥

विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ।
बुधेन्दू चोपविद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत् ॥२७॥

ह०, चि०, स्वाति, श्र०, धनि०, पूर्वा तीनों, मृग०, आर्द्रा, पुन०, पु०, अश्लेषा, मूल, रेवती इन नक्षत्रों में, देवोत्थानि एकादशी से आषाढ़ शुक्ला ११ तक, मीन और धनु लग्न में एवं पांचवें वर्ष में विद्यारम्भ कराना शुभ है। अन्यथा ४।८।९।१४। ३०।१ ये तिथियां विद्यारम्भ में वर्जित हैं। बुध एवं सोमवार को विद्यारम्भ करे तो मूर्ख हो, शनि और मंगलवार को आरम्भ करे तो मृत्यु हो। विद्यारम्भ में गुरुवार शुभ है। रविवार और शुक्र वार मध्यम हैं। बुध और सोम वार उपविद्या में गुरु एवं शनि, मंगल सर्व त्याज्य हैं ॥२४-२७॥

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठा पूर्वे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥२८॥

द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये।
सूर्यशुक्रसुराचार्ये वारे पक्षे तथा सिते ॥२९॥

लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशाम्पतेः ॥३०॥

पू० षा०, हस्त, चि०, स्वा०, श्र०, धनि०, शत०, पू० फा०, पु०, रेवती ये नक्षत्र, उत्तरायण सूर्य में तथा २।३।५।१०।११।१२ तिथियों में, रवि, शुक्र, गुरु वारों में, शुक्ल पक्ष में, सिंह, धनु, वृष, कन्या मिथुन इन लग्नों में, ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य तीनों को यज्ञोपवीत आरम्भ करना श्रेष्ठ है ॥२८-३०॥

ग्रहों की शुभाशुभ संज्ञा

पापो भौमः शनिः केतुः क्रूरो राहू रविस्तथा।
सौम्यः सोमो बुधश्चैव गुरुः शुक्रस्तथैव च ॥३१॥

भौम, शनि, केतु, यह पाप ग्रह हैं। राहु और रवि क्रूर ग्रह एवं सोम, बुध, गुरु और शुक्र ये सौम्य ग्रह हैं ॥३१॥

कर्ण वेध मुहूर्त्त

श्रुतित्रयेऽदितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे।
मृगे विधियुगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥३२॥

द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षञ्च युगलं त्यजेत् ॥३३॥

श्रवण, ध०, शत०, पुन०, पुष्य, अनु०, ह०, तीनों उत्तरा, पू० फा०, रो०, मृग०, मूल, रेवती और अश्विनी नक्षत्र, सौम्यवार मिथुन, कन्या, धनु, मीन और कुम्भ, ये लग्न कर्णवेध में शुभ हैं। चैत्र पौष, एवं आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शु० ११ तक इन सब का कर्णवेध में त्याग करना चाहिये ॥३२-३३॥

## वास्तु कर्म मुहूर्त्त

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वं विधियुग्मं हरित्रयम् ।
उत्तराफल्गुनी हस्तत्रयं मूलञ्च रेवती ॥३४॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहः कन्या घटो वृषः ।
मिथुनं मकरो ग्राह्यं वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥३५॥
श्रावणश्चैव वैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥३६॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गण्डकः ।
विष्कम्भः परिघो वर्ज्यो वारो भौमश्च भास्करः ॥३७॥

पू०षा०,पुन०,पुष्य,रो०,मृग०, श्र०, धनिष्ठा, शत०, उ०फा०, ह०, चि०,स्वा०,मूल०,रे०,अनु०,अश्विनी ये नक्षत्र तथा सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन एवं मकर लग्न, श्रावण, वैशाख, कार्त्तिक, फाल्गुन एवं मार्गशीर्ष ये महीने वास्तु कर्म में शुभ हैं। वज्र, व्यतीपात, शूल, व्याघात,गण्ड, विष्कुम्भ और परिघ योग मगल रवि ये वार वास्तु कर्म में निषिद्ध हैं ॥३४-३७॥

## सुर प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

आर्द्रा शतभिषाऽऽश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।
त्याज्यौ च द्वादशी रिक्ता षष्ठी चन्द्रक्षयोऽष्टमी ॥३८॥
प्रतिपच्च तिथिर्वारो त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥३९॥

मंगलवार देव प्रतिष्ठा में वर्जित है। अतः स्थिर भावों में तथा उत्तरायण सूर्य में देव प्रतिष्ठा करे ॥३८-३९॥

## गृह प्रवेश मुहूर्त्त

विशाखा भरणी हेयाऽऽश्लेषाख्या च मृगस्तथा ।
अमावास्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ॥४०॥
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
अश्विने च स्थिरतनुर्ग्राह्यः पक्षो बुधैः सितः ॥४१॥

विशा०, भर०, आश्ले०, मृग० नक्षत्र, अमावस्या और रिक्ता तिथि, रविवार एवं मंगलवार गृहप्रवेश में निषिद्ध हैं। वैशाख, श्रावण, फाल्गुन, आश्विन मास, स्थिर लग्नों और शुक्लपक्ष में गृह-प्रवेश करना श्रेष्ठ है ॥४०-४१॥

### हल प्रवाह मुहूर्त्त

अनुराधाचतुष्कञ्च मघादितियुगे करे।
स्वातिश्रुतिविधिद्वन्द्वे रेवत्यामुत्तरात्रये ॥४२॥

गोस्त्रीभ्रुषे हलं कार्यं हेयः सूर्यश्शनिः कुजः।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीया पर्वयुग्मकम् ॥४३॥

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम्।
सूर्यभाद्दिनभ यावद्धानिवृद्धिहले क्रमात् ॥४४॥

अनु०, ज्येष्ठा, मू०, पू० षा०, मघा, पुन०, पु०, ह०, स्वा०, श्र०, रो०, मृ०, रे० तथा तीनों उत्तरा, वृष, कन्या, मीन ये लग्न कृषिकर्म में शुभ हैं। किन्तु रवि, शनि एवं मंगलवार, ६।४।९।१४।१२।२।१५।३० ये तिथियां हल चलाने में अशुभ हैं। सूर्य नक्षत्र से हल प्रवाह के नक्षत्र तक गिनें एवं शुभ से अशुभ फिर शुभ फल जानना चाहिये ॥४२-४४॥

### हलचक्र

| ३ | ३ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि |

### यात्रा मुहूर्त्त

अनुराधात्रयं हस्तमृगाश्वौ चादितिद्वयम्।
यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्याऽऽर्द्रा भरणीद्वयम् ॥४५॥
मघोत्तरा विशाखा च सार्पश्चान्ये च मध्यमाः।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥४६॥

लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥४७॥

यात्रा में अनु०,ज्ये०,मू०,अश्वि०,पु०,पु०,रे०, नक्षत्र शुभ हैं। एवं आ०, भ०,कृ०,म०, तीनों उत्तरा, वि०, आश्लेषा त्याज्य हैं तथा अन्य नक्षत्र मध्यम हैं। षष्ठी, द्वादशी, रिक्ता में भी निषिद्ध हैं। मि०, क०, मकर, तु० ये लग्न शुभ हैं। साथ ही चन्द्रबल विचार कर यात्रा करनी चाहिये ॥४५-४७॥

दिक् शूल

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।
सूर्यशुक्रौ पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥४८॥

शनि सोम को पूर्व में, गुरुवार को दक्षिण में, रवि एवं शुक्र को पश्चिम में, मंगल और बुध को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥४८॥

सर्व दिग्गमनार्ह नक्षत्राणि

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वी श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥४९॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिर नक्षत्र सब दिशाओं में गमन करने के लिये श्रेष्ठ हैं। जैस विद्यारम्भ में गुरुवार शुभ है, तदनुसार पुष्प नक्षत्र की यात्रा सिद्धिप्रद है ॥४९॥

योगिनी विचार

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥५०॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यकोणगामिनी ॥५१॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥५२॥

दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिव वसेत् :
ईशान्यां दर्शे चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥५३॥

योगिनी १।९ को पूर्व में, ३।११ को अग्निकोण में, ५।१३ को दक्षिण में, ४।१२ को नैर्ऋत्य में, ३।१४ को पश्चिम में, ७।१५ को वायव्य में, २।१० को उत्तर में तथा ८।३० को ईशान में वास करती है ॥५०-५३॥

योगिनीवास फलम्

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥५४॥

यात्रा में बायें योगिनी सुखदायक, पीछे वांछित फलदायक, दायें धन नाशक एवं सम्मुख मृत्यु देने वाली होती है ॥५४॥

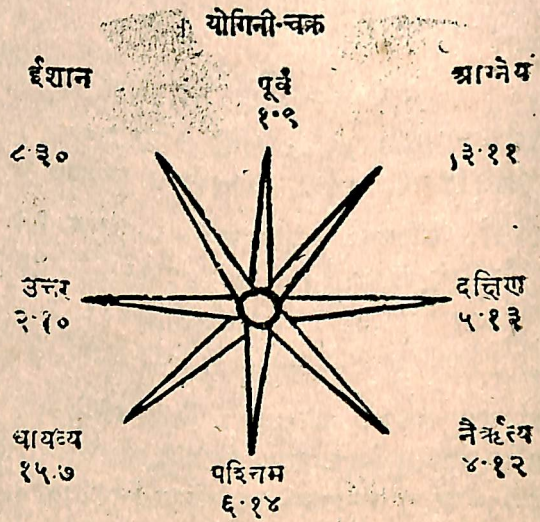


यात्रायां तिथिफलम्

मासस्य प्रतिपच्छ्रेष्ठा द्वितीया कामकारिणी ।
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥५५॥

पञ्चमी च श्रिया युक्ता षष्ठी कलहकारिणी ।
भक्ष्यपानसमायुक्ता सप्तमी सुखदा मुदा ॥५६॥
अष्टमी व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ।
दशमी भूरिलाभा स्याद्धर्मदैकादशी सदा ॥५७॥
द्वादशी प्राणसन्देहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥५८॥
पूर्णिमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत् ।
तिथिक्षये च मासान्ते ग्रहणान्ते दिनत्रयम् ॥५९॥

सूक्ष्मार्थ—१।२।३।५।७।१०।११।१३ यह तिथियां यात्रा में शुभ हैं। शेष तिथियां एवं क्षयतिथि, मासान्त एवं ग्रहण के तीन दिन बाद तक यात्रा में त्याज्य हैं ॥५५-५९॥

## चतुर्घटिका राहु विचार

अष्टसु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहर्निशम् ।
पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्यात्तुर्यदिशि व्रजेत् ॥६०॥

दिने पूर्वादिक्रमेण चतुर्थघटिका राहु वासचक्रम्

| पूर्व | वाय. | दक्षि. | ईशा | पश्चि. | आग्ने | उत्त० | नैर्ऋ | दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३॥ | ७। | ११। | १५ | १८॥ | २३। | २६। | ३० | ० घटी— |
| यावत् | या. | या. | या. | या. | या. | या. | या. | उपरान्त ३॥ यावत् |

राहुः प्राच्यां ततो वायुर्दक्षिणेशानपश्चिमे ।
आग्नेयोत्तरनैर्ऋत्ये प्रहरार्द्धञ्च तिष्ठति ॥६१॥
जयश्च दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः शुभा ।
पृष्ठतो द्वयमाख्यातं चन्द्रमाः सम्मुखः शुभः ॥६२॥

राहु दिन-रात के आठ-आठ प्रहरार्धों में पूर्व से बाईं ओर को पौने चार-चार घड़ी में गमन करता है अर्थात् पूर्व, वायव्य, दक्षिण, ईशान, अग्नि, उत्तर एवं नैऋत्य में क्रमशः एक प्रहरार्ध रहता है। यात्रा में दाहिने राहु पड़े तो विजय एवं योगिनी बायें शुभ होती है। पीठ पीछे योगिनी और राहु दोनों शुभ तथा सम्मुख चन्द्रमा भी शुभ है ॥६०-६२॥

एवं रात्रिषु पूर्वादिक्रमेण चतुर्थघटिका राहु-वासचक्रम्

| पूर्व | वाय० | दक्षि. | ईशा. | पश्चि. | आग्ने. | उत्त० | नैऋ | दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३॥ यावत् | ३७॥ या. | ४१। या. | ४५ या. | ४८॥ या. | ५२॥ या. | ५६। या. | ६० या. | ३० घटी उपरान्त ३॥ यावत् |

चन्द्रवास ज्ञानम्

चन्द्रश्चरति पूर्वादिक्रमेषु दिक्चतुष्टयम्।
मेषादिकेषु यात्रायां सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥६३॥

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥६४॥

चन्द्रमा पूर्वादि चारों दिशाओं में क्रमशः चलता है और मेष, सिंह, धनु का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला एवं कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर में वास करता है। अतः दक्षिण और सम्मुख चन्द्रमा यात्रा में शुभ है ॥६३-६४॥

## चन्द्र फलम्

**सम्मुखे त्वर्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।**
**दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ॥६५॥**

सम्मुख चन्द्रमा में धन लाभ, पीठ पीछे धन की हानि, दक्षिण चन्द्रमा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति और बायें चन्द्रमा में यात्रा करने से मृत्यु होती है ॥६५॥

## रवि वास

**यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादिगो रविः ।**
**यात्रायां दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ॥६६॥**

सूर्योदय के १ प्रहर पूर्व से १ प्रहर दिन चढ़े तक सूर्य पूर्व में, फिर दो प्रहर तक दक्षिण में, इसके बाद दो प्रहर पश्चिम में तथा उसके बाद २ प्रहर तक सूर्य उत्तर में बास करते हैं । अतः यात्रा में दायें और बायें शुभ तथा प्रवेश करते समय सूर्य सम्मुख और पीछे शुभ है ॥६६॥

## कुलिक मुहूर्त्त

**मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनः क्रमात् ।**
**रविवारान्मुहूर्तोऽयं कुलिको निन्दितः शुभे ॥६७॥**

रविवार में १४ वां, सोम में १२ वां, भौम में १० वां, बुध में ८ वां, गुरु में ६ वां, शुक्र में दूसरा मुहूर्त्त कुलिक संज्ञक होता है, जो यात्रा में निषिद्ध है ॥६७॥

## कालहोरा

**गता नाड्यो द्विगुणिताः पञ्चभिश्च विभाजिताः ।**
**शेषं त्याज्यं युतश्चैकः सप्तशेषे प्रशंसितम् ॥६८॥**

**कालहोरेति विख्यातं सौम्ये सौम्यफलप्रदाः ।**
**सूर्यःशुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवः कुजः क्रमात् ॥६९॥**

**यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात् ।**
**शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोऽनिष्टदुःखदः ॥७०॥**

जिस दिन का कालहोरा जानना हो, उस दिन सूर्योदय से गत घटी को दुगना करके पांच का भाग दें, जो शेष बचे उसे द्विगुणित घटी में से घटाकर शेष में १ जोड़कर पुनः ७ से भाग दें । अब जो शेष बचे उसे क्रम से सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, शनि, गुरु एवं मंगल का कालहोरा जानना चाहिये । इनमें शुभ ग्रह की होरा शुभ और पाप ग्रह की होरा अशुभ होती है ॥६८-७०॥

अंक मुहूर्त्त ज्ञानम्

**तिथिर्वारश्च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।**
**द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम् ॥७१॥**
**आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् ।**
**अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयो भवेत् ॥७२॥**

तिथि, वार, नक्षत्र तथा प्रश्न कर्ता के नाम के अक्षरों को जोड़ कर तीन जगह रखें । अब पहले को दूना कर ६ का भाग दें, दूसरे को तिगुना कर ७ का भाग दें, तीसरे को चौगुना कर आठ का भाग दें । पहले में शून्य बचे तो हानि, दूसरे में शून्य बचे तो शत्रु से भय तथा तीसरे में शून्य बचे तो मृत्यु हो । यदि तीनों में अंक शेष बचे तो विजय जानना ॥७१-७२॥

चन्द्रस्वर एवं रविस्वर फलम्

**शशिप्रवाहे गमनादि शस्तं सूर्यप्रवाहे न कि किञ्चनाऽपि ।**
**प्रष्टुर्जयः स्याद्बहुमानभागेरिक्ते च भागे विफलं समस्तम् ॥७३॥**

यदि नासिका का बायां चन्द्रस्वर चलता हो तो उस समय गमनादि शुभ होते हैं । दाहिना स्वर सूर्य स्वर है अतः उस समय गमनकार्य अशुभ है । जिधर का स्वर चलता हो उधर ही प्रश्न कर्ता बैठा हो तो शुभ अन्यथा खाली स्वर की ओर पूछने वाला बैठा हो तो सब कार्य निष्फल जानने चाहियें ॥७३॥

### यात्रायां शुक्रफलम्

**दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।**
**वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तगः शुभम् ॥७४॥**

यदि यात्रा के समय शुक्र दाहिने हो तो दुःखद, सम्मुख नेत्र पीड़ा तथा बायें और पीठ पीछे हो तो शुभ है। शुक्रास्त में शुभ कार्य वर्जित है ॥७४॥

### क्रय विक्रय मुहूर्त्त

**पुष्ये भाद्रपदायुग्मं मैत्रश्रवणमश्विनी ।**
**हस्तोत्तरामृगस्वात्यस्तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥७५॥**
**ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।**
**चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥७६॥**

पुष्य, पू० भा०, उ० भा०, अनु०, श्रवण, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, अश्लेषा और रेवती इन नक्षत्रों में तथा सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार इन वारों में अच्छा शकुन देखकर खरीदने और बेचने का कार्य करना चाहिये ॥७५-७६॥

### पंचके त्याज्य कर्म

**धनिष्ठापञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।**
**त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा ॥७७॥**

धनिष्ठा से रेवती तक पांच नक्षत्रों में तृण-काष्ठादि का संचय, दक्षिण की यात्रा, घर छावना, शय्या बुनना, प्रेतदाहादि काम वर्जित है ॥७७॥

### तैलाभ्यंग

**तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।**
**बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥७८॥**

रविवार को तेल लगावे तो पाप, सोम को शोभा, मंगल को मृत्यु, बुध को धन, गुरुवार को हानि, शुक्र को दुख एवं शनि को तेल लगाने से सुख होता है ॥७८॥

तेलाभ्यंगस्य परिहार

**रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।**
**गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक् ॥७९॥**

यदि तेल लगाना आवश्यक हो तो रविवार को पुष्प, गुरु को दूब, मंगल को मिट्टी और शुक्रवार को तेल में गोबर डालकर प्रयोग करने से दोष नहीं है ॥७९॥

वधूप्रवेश मुहूर्त्त

**हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पूष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।**
**मूलानुराधाहयरेवतीषु पुष्येषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥८०॥**

ह०, चि०, स्वा०, रो०, मृग० मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्र०, तीनों उत्तरा, मूल, अनु०, अ० एवं रेवती इन नक्षत्रों में तथा वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ इन लग्नों में वधू प्रवेश शुभ होता है ॥८०॥

रोगी स्नान मुहूर्त्त

**आश्लेषाद्वितये स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।**
**रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥८१॥**
**रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रविभौमयोः ।**
**स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ॥८२॥**

आश्लेषा, मघा, स्वाती, रोहिणी, पुनर्वसु, रेवती एवं तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों को छोड़ अन्य नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि तथा चर लग्न (१-४-७-१०) रविवार और मंगलवार तथा शुभ चन्द्रमा में ब्राह्मण भोजन कराकर रोगी को प्रथम स्नान कराना शुभ है ॥८१-८२॥

आनन्दादियोग

**आनन्दः कालदण्डश्च धूम्राक्षश्च प्रजापतिः ।**
**सौम्यध्वांक्षौ ध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद्गरौ ॥८३॥**
**छत्रं मित्रं मानसाख्यं पद्माख्यं लुम्बकस्तथा ।**
**उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चार्थ शुभो मतः ॥८४॥**

| | र. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ आनन्द | अ. | मृ. | श्ले. | ह. | अनु. | उ. षा. | श. |
| २ कालदंड | म. | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अ. | पू. भा |
| ३ धूम्र | कृ. | पुन. | पू. फा. | स्वा. | मू. | श्र. | उ. भा |
| ४ घात | रो. | पु. | उ. फा. | वि. | पू. षा. | ध. | रे. |
| ५ सौम्य | मृ. | श्ले. | ह. | अनु. | उ. षा. | श. | अ. |
| ६ ध्वांक्ष | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अ. | पू. भा | भ. |
| ७ ध्वज | पुन. | पू. फा. | स्वा. | मू. | श्र. | उ. भा. | कृ. |
| ८ श्रीवत्स | पु. | उ. फा. | वि. | पू. षा. | ध. | रे. | रो. |
| ९ वज्र | श्ले. | ह. | अनु. | उ. षा. | श. | अ. | मृ. |
| १० मुद्गर | म. | चि. | ज्ये. | अ. | पू. भा. | भ. | आ. |
| ११ छत्र | पू. फा. | स्वा. | मू. | श्र. | उ. भा. | कृ. | पुन. |
| १२ मित्र | उ. फा | वि. | पू. षा. | ध. | रे. | रो. | पु. |
| १३ मानस | ह. | अनु. | उ. षा | श. | अ. | मृ. | श्ले |
| १४ पद्म | चि. | ज्य. | अ. | पू भा. | भ. | आ. | म |
| १५ लुम्ब | स्वा. | मू. | श्र. | उ. भा. | कृ. | पुन. | पू. फा. |
| १६ उत्पात | वि. | पू. षा. | ध. | रे. | रो. | पु. | उ. फा. |
| १७ मत्यु | अनु. | उ. षा | श. | अ | मृ. | श्ले. | ह. |
| १८ काण | ज्ये. | अ. | पू. भा | भ. | आ. | म. | चि. |
| १९ सिद्धि | मू. | श्र. | उ. भा | कृ. | पुन. | पू. फा. | स्वा. |
| २० शुभ | पू. षा. | ध. | रे. | रो. | पु. | उ. फा. | वि. |
| २१ अमृत | उ. षा. | श. | अ. | मृ. | श्ले. | ह. | अनु. |
| २२ मुशल | अ. | पू भा. | भ. | आ | म. | चि. | ज्ये. |
| २३ गद | श्र. | उ भा. | कृ. | पुन. | पू. फा. | स्वा. | मू. |
| २४ मातंग | ध. | रे. | रो. | पु. | उ. फा. | वि. | पू. षा. |
| २५ रक्ष | श. | अ. | मृ. | श्ले. | ह. | अनु. | उ. षा. |
| २६ चर | पू. भा | भ. | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अ. |
| २७ स्थिर | उ. भा. | कृ. | पुन. | पू. फा. | स्वा. | मू. | श्र. |
| २८ प्र. मान | रे. | रो. | पु. | उ. फा. | वि. | पू. षा | ध. |

मूसलं गदमातङ्गराक्षसाश्च चरः स्थिराः।
वर्धमानश्च विज्ञेयो अष्टाविंशातिरित्यपि ॥८५॥

फलं तु नामसदृशं योगा दैवज्ञभाषिताः।
अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानन्दसंज्ञकः ॥८६॥

मृगशीर्षे शीतरश्मिः श्लेषायां क्षितिनन्दनः।
बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराजपुरोहिते ॥८७॥

विश्वेदेवो भृगोर्वारे शनौ वारुणसंज्ञकः।
तदानन्दाख्ययोगः स्यात्कालदण्डोदयःक्रमात् ॥८८॥

रवि को अश्विनी, सोमवार को मृगशिर, भौम को आश्लेषा, बुध को हस्त, गुरुवार को अनुराधा, शुक्र को उत्तराषाढ़ा, शनि को शतभिषा हो तो आनन्द योग होता है। इसी क्रम से कालदण्डादि २८ योगों को जानना चाहिये ॥८३-८८॥

अमृतसिद्धि योग

हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाऽश्विनी।
बुधे मैत्रं गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥८९॥
रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायकः।
अयं चामृतसिद्धिः स्याद्योगः प्रोक्तः पुरातनः ॥९०॥

निम्नांकित चक्र में स्पष्ट है कि रवि आदि वारों को उनके नीचे

| अथ अमृत सिद्धि योग चक्रम् | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | वार |
| हस्त | मृगशि. | अश्वि | अनु. | पुष्य | रेवती | रोहि० | नक्षत्र |

वाले हस्तादि नक्षत्र हों तो उसे अमृतसिद्धि योग कहते हैं। यह प्राचीन पण्डितों ने कहा है ॥८९-९०॥

यमघण्टयोग

मघादित्ये विशाखेन्दौ भौमे चार्द्रानिलो गुरौ।
बुधे मूलं विधिः शुक्रे यमघण्टः शनौ करः ॥९१॥

| अथ यमघण्ट योग चक्रम् | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | वार |
| मघा | विशा. | आर्द्रा | मूल | कृत्ति० | रोहि. | हस्त. | नक्षत्र |

यदि रवि को मघा, सोम को विशाखा, मंगल को आर्द्रा, बुधवार को मूल, गुरु को कृत्तिका, शुक्र को रोहिणी तथा शनिवार को हस्त हो तो उसे यमघण्ट योग कहते हैं। यह शुभ कार्य में वर्जित है ॥९१॥

मृत्यु योग

| अथ मृत्यु योग चकम् | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | वार |
| १ | २ | १ | ३ | ४ | २ | ५ | |
| ६ | ७ | ६ | ८ | ९ | ७ | १० | तिथि |
| ११ | १२ | ११ | १३ | १४ | १ | ३० | |

**नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।**
**बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा मृत्युदा ॥९२॥**

रवि और मंगल को नन्दा, शुक्र और सोमवार को भद्रा, बुध को जया, गुरुवार को रिक्ता तथा शनिवार को पूर्णा योग में भी शुभ कार्य निषिद्ध है ॥९२॥

ककच योगः

**तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते ।**
**त्रयोदशाङ्कः ककचो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥९३॥**

यदि तिथि अंक में वार का अंक जोड़ने से १३ हों तो ककच योग होता है। ऐसा पुराणाचार्यों का मत है ॥९३॥

अथ ककचयोग चक्रम् ।

| सूर्य | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक | शनि | वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | तिथी |

अन्धाक्षादिसंज्ञा

**अन्धाक्षश्चिपिटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः ।**
**गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥९४॥**

**अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे चैव दिनत्रयम् ।**
**काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव लभ्यते ॥९५॥**

अन्धाक्ष, चिपिटाक्ष (मन्दाक्ष), काणाक्ष, सुलोचना यह चार संज्ञा नक्षत्रों की हैं। रोहिणी आदि नक्षत्रों को क्रम से सात बार गिनें, अर्थात् रोहिणी की अन्धाक्ष, मृगशिर की चिपिटाक्ष, आर्द्रा को काणाक्ष और पुनर्वसु की सुलोचना संज्ञा है। इसी प्रकार सात बार गिने। अन्धे

नक्षत्र में चोरी गई वस्तु शीघ्र मिलती है। मन्दाक्ष में जाय तो तीन दिन में, काण नक्षत्र में जाय तो महीने में तथा सुलोचना में जाय तो कभी नहीं मिलती ॥६४-६५॥

| अथ अन्धादि नक्षत्र बोधक चक्रम् | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोहि० | पुष्य | उ.फा. | विशा. | पू. षा. | धनि. | रेवती | अन्ध |
| मृग० | आश्ले | हस्त | अनु. | उ. षा. | शत. | अश्वि | चिपिट् |
| अर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | भरणी | काणा |
| पुन. | पू.फा. | स्वाती | मूल | श्रव० | उ.भा. | कृत्ति० | सुलो० |

दक्षिणचारी नक्षत्र

पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा।
पूर्वाषाढोत्तरषाढे मूलं दक्षिणचारिणः ॥६६॥
कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राऽऽश्लेषा च रेवती।
शतं धनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ॥६७॥
अश्विनी भरणी स्वाती विशाखा फल्गुनीद्वयम्।
मघा भाद्रपदायुग्मं नव चोत्तरचारिणी: ॥६८॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ एवं मूल ये नक्षत्र दक्षिणचारी हैं अर्थात् दक्षिण की तरफ हैं। कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, अश्लेषा, रेवती, शतभिषा, धनिष्ठा और श्रवण ये नक्षत्र मध्यमचारी हैं। अर्थात् आकाश के मध्य में रहते हैं। अश्विनी, भरणी, स्वाती, विशाखा, पूर्वा फाल्गुनी, मघा,

पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तरा भाद्रपद में नौ नक्षत्र उत्तराचारी हैं अर्थात उत्तर दिशा में रहते हैं ॥९६-९८॥

स्पष्टार्थं चकम्

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुन० | मृग० | आर्द्रा | ज्येष्ठा | अनु० | हस्त० | पू. षा. | उ. षा. | मूल | दक्षिण |
| कृत्ति. | रोहि० | पुष्य | चित्रा | आश्ले | रेवती | शत० | धनि० | श्रवण | मध्य |
| अश्वि | भरणी | स्वाती | विशा. | पू. फ. | उ.फा. | मघा | पू.भा. | उ.भा. | उत्तर |

वत्सचक्रम्

भ्रमतीन्द्रदिशं वत्सो मासानां च त्रिकं त्रिकम् ।
आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टम् ॥९९॥

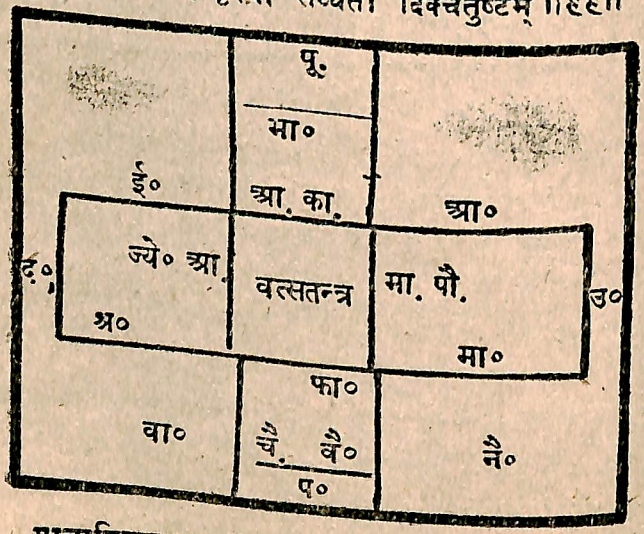


यात्राविवादसम्बन्ध द्वारे च गृहहर्म्ययोः ।
भूपतेर्मिलने युद्धे वत्सस्याभिमुखे त्यजेत् ॥१००॥

पूर्व आदि चारों दिशाओं में तीन-तीन महीने सव्य मार्ग से घूमता है—भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में मार्गशीर्ष, पौष और माघ में दक्षिण में, फाल्गुण, चैत्र, वैशाख में पश्चिम दिशा में, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण में उत्तर दिशा में वत्स घूमता है। अतः यात्रा, विवाद, सम्बन्ध और प्रासाद के द्वारा में राजा से मिलने में तथा युद्ध में सम्मुख त्याज्य है। इन कार्यों में बायें और पीठ पीछे शुभ होता है ॥६६-१००॥

अश्विन्यादि नक्षत्रों में तारों की संख्या

त्रयं यमेऽग्नेन चाग्नौ षड्विधौ पञ्च मृगे त्रयम्।
एकमार्द्रा च नक्षत्रं चत्वारि च पुनर्वसौ ॥१०१॥
पुष्ये त्रयं रसाः सार्पे मघायां चैव पञ्चकम्।
द्वयं द्वयं च फल्गुन्योर्ज्ञेयं हस्ते च पञ्चकम् ॥१०२॥
चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं तु द्विदैवते।
त्रयं स्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ॥१०३॥
मूले रुद्रश्चतुष्कं च पूर्वाषाढ़े तथोत्तरे।
त्रयं चाभिजितः प्रोक्तः श्रवणे च त्रयं तथा ॥१०४॥
धनिष्ठायां च चत्वारः शतं शतभिषासु च।
द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चान्त्यके ॥१०५॥

स्पष्टार्थ

| अ. | भ. | कृ. | रो. | मृ. | आ | पु | पु. | श्ले | म. | पू. | उ. | ह. | चि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ६ | ५ | ३ | १ | ४ | ३ | ६ | ५ | २ | २ | ५ | १ |

| स्वा | वि | अ. | ज्ये | मू. | पू | उ० | अ. | श्र० | ध० | शं० | पू० | उ० | रे० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ४ | ३ | ११ | ५ | ४ | ३ | ३ | ४ | १०० | ७ | २ | ३० |

अश्विनी आदि नक्षत्रों के तारों की संख्या इस प्रकार है—अश्विनी के ३, भरणी के ३, कृत्तिका के ६, रोहिणी के ५, मृगशिरा

के ३, आर्द्रा के १, पुनर्वसु के ४, पुष्य के ३, आश्लेषा के ६, मघा के ५, पूर्वफाल्गुनी के २, उ० फा० के २, हस्त के ५, चित्रा का १, स्वाती के १, विशाखा के ४, अनुराधा के ४, ज्येष्ठा के ३, मूल के ११, पू० षा० के ४; उ० षा० के ४; अभिजित् के ३; श्रवण के ३, धनिष्ठा के ४, शतभिषा के १००, पू० भा० के २, उ० भा० के २, तथा रेवती के ताराओं की संख्या ३२ है ॥१०१-१०५॥

ग्रहानुसारेण लग्न कुण्डल्यां दोष

लग्नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ।
आकाशदेव्याश्चन्द्रे तु लग्ने षष्ठेऽष्टमे व्यये ॥१०६॥

द्वादशे दशमे भौमे डाकिनीदूषणं स्मृतम् ।
वनदेव्युद्भवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥१०७॥

जामित्रे द्वादशे जीवे देवदोषो निगद्यते ।
अस्ते व्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्याश्च दूषणम् ॥१०८॥

शनैश्चरे व्यये चास्ते दोषः स्यादामवातजः ।
जामित्रे द्वादशे राहुः कुमतिज्ञातिदूषणम् ॥१०९॥

प्रश्न काल लग्न में ८, १२ वें स्थान में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल के दोष से रोग जानना; लग्न में ६, १२ वें चन्द्र हो तो आकाश देवी का दोष; १२, १० वें भौम हो तो डाकिनी जन्य दोष; ७, १२ वें में बुध हो तो वनदेवी का दोष; ७, १२ वें गुरु हो तो भाग्य कृत दोष; १२, ७ वें शनिश्चर हो तो आमवात दोष; ७, १२ वें राहु हो तो दुर्बुद्धि से जाति दोष होता है ॥१०६-१०९॥

लग्न कुण्डल्यां राशि जन्य दोष

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरो दुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥११०॥

मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनताः ॥१११॥

सिंहे जलप्रेतदोषो दिवा शीतज्वरोऽरुचिः।
ग्रहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्ये तथाऽरुचिः ॥११२॥

क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले सन्तानपीडनम्।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वाला देहे कुबुद्धिता ॥११३॥

चापे देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा।
मकरे चण्डिकादोषी देहभंगो ज्वरोऽनिलः॥११४॥

मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम्।
मीने च पिंगलादोषो ज्वरो जञ्जालदर्शनम्॥११५॥

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा।
हतो गरर्जलैः शस्त्रैस्तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥११६॥

शनौ जले कुजे शस्त्रे युते सूर्ये स्वबन्धुजः।
राहौ विक्रमतो नेष्टः शान्तिपूजाद्विजार्चनैः॥११७॥

स्वक्षेत्रे गोत्रदोषोऽपि परक्षेत्रे परोद्भवः।
शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजनसम्भवः॥११८॥

यदि प्रश्न लग्न में मेष हो तो पितृजन्य दोष होता है, इसमें भूख नहीं लगती व कुरूप हो जाता है। वृष हो तो आकाश देवी का दोष है, इसमें ज्वर, बुरे स्वप्न और आंखों में पीड़ा होती है। मिथुन हो तो महामाया का दोष जानें, इसमें सामयिक ज्वर तथा विकार होता है। कर्क हो तो शाकिनी दोष होता है। इससे रोवे, हंसे और कभी चुप रहे। यदि सिंह हो तो प्रेत बाधा, दिन में सर्दी का ज्वर और अरुचि होती है। यदि तुला हो क्षेत्रपाल कृत दोष होता है, सन्तान को पीड़ा होती है। वृश्चिक हो तो सर्प भय, शरीर ज्वाला तथा कुबुद्धि हो जाती है। धन में देह जन्य दोष, ज्वर, शोक तथा पेट की पीड़ा होती है। यदि मकर लग्न हो तो चण्डी का दोष, शरीर में पीड़ा व मलीनता रहती है। प्रश्न लग्न मीन हो तो पिंगलाकृत दोष होते हैं, ज्वर हो जाता है और बुरे स्वप्न दिखाई पड़ते हैं। प्रश्न लग्न से

१२-९-३-६ इन स्थानों में पाप ग्रह हों तो कुल दोष होता है, जिससे विष, जल शस्त्र से मृत्यु होती है। यदि पूर्वोक्त स्थानों में शनि हो तो जल से, मंगल हो तो शस्त्र से, सूर्य हो तो अपने बन्धुओं से मृत्यु होती है। राहु हो तो पराक्रम रहित हो जावे। यदि ऐसे ग्रह हों तो इनकी शांति के लिये ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिये। यदि स्वक्षेत्री ग्रह पड़े हों तो गोत्र दोष हो, परक्षेत्री ग्रह हों तो परकृत दोष हो। शुभ क्षेत्री ग्रह हों तो शुभ कृत दोष तथा मित्र क्षेत्री ग्रह हों तो मित्रों कृत दोष होता है ॥११०-११८॥

| जन्म-लग्न से स्थान | ग्रह | फल |
|---|---|---|
| ३ ६ ९ १२ | सूर्य | वंशज के हाथ से या विष से मृत्यु |
| ३ ६ ९ १२ | मं. | शस्त्राघात से मृत्यु |
| ३ ६ ९ १२ | शनि | जल-भय |
| ३ ६ ९ १२ | राहु | कुत्सितप्रवृत्ति, कुमार्गगामी, चोर हो |

नक्षत्र तिथि वारजाः शुभा शुभ योगः

आदित्ये चाश्विनी हस्तो मूलं पुष्योत्तरात्रयम् ।
सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथिरप्यष्टमी तथा ॥११९॥
सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मैत्रं मघा तथा ।
चतुर्दशी द्वादशी च विरुद्धा सप्तमी तिथिः ॥१२०॥
सोमे पुष्याऽनुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः ।
नवमी दशमी चापि सिद्धियोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥१२१॥
चन्द्रे चित्रा विशाखा च तथाऽषाद्वयं बुधैः ।
एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥१२२॥
भौमे मूलाश्विनी-सार्प-मृगाश्चोत्तर भाद्रपात् ।
सिद्धाष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी ॥१२३॥
निन्द्या शतभिषार्द्रा च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात् ।
मघा चोत्तराषाढा द्वितीया दशमी कुजे ॥१२४॥

बुधेऽनुराधा पुष्यश्च कृत्तिका रोहिणी मृगः।
द्वादशी सिद्धियोगश्च द्वितीया सप्तमी तिथिः ॥१२५॥
बुधे मूलं धनिष्ठा च रेवती चाश्वनी मृगः।
तृतीया नवमी चापि निषिद्धा प्रतिपदातिथिः ॥१२६॥
गुरौ च दशमी तद्वत पौर्णमासी च पञ्चमी।
पौष्णाश्विन्यनुराधा च सिद्धिः पुष्यः पुनर्वसुः ॥१२७॥
जीवे शतभिषाद्रा च कृत्तिकोत्त फल्गुनी।
विधिर्मृगोऽष्टमी षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिता ॥१२८॥
शुक्रे चित्राऽर्यमा पूषा श्रवणश्च पुनर्वसुः।
सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥१२९॥
भार्गवे रोहिणी पुष्यो ज्येष्ठाऽऽश्लेषा मघा तथा।
द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः ॥१३०॥
शनौ च रोहिणी स्वातिः श्रवणः पूर्व फल्गुनी।
मघा च नवमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी ॥१३१॥
शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्राश्चोत्तर फल्गुनी।
रेवती च सदा वर्ज्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥१३२॥

रविवार को अश्विनी, मूल, पुष्य, तीनों उत्तरा, धनिष्ठा ये नक्षत्र, ८ तिथि होय तो सिद्धियोग, जो रविवार को विशाखा, भरणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, मघा, १४।७।१२। तिथियां हों तो कुयोग है। सोमवार को पुष्य, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा और ९।१० तिथि हो तो सिद्धियोग होता है, जो सोमवार को चित्रा; विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा और ११, १३, ६ तिथि हो तो कुयोग होता है। जो भौमवार को मूल, अश्विनी, आश्लेषा, मृगशिरा, उत्तराभाद्रपदा और ८।३।७।१३ तिथि हो तो सिद्धियोग होता है, जो भौमवार को शतभिषा, आर्द्रा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, मघा, उत्तराषाढ़ा, ये नक्षत्र और २।१० ये तिथियां हो तो कुयोग होता है। जो बुध को अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका; रोहिणी, मृगशिरा और १२।२।७ तिथि

| कर | नक्षत्र | तिथि | योग |
|---|---|---|---|
| र | अ. ह. मू. पु. ३ उत्तरा | ८ | सिद्धि |
| र. | भ. म. वि ज्ये अनु. | ७. १२. १४ | अशुभ |
| च. | पु. अ श्र. रो. मृ. | ९. १० | सिद्धि |
| च | चि. वि. पू. षा. उ. षा. | ६. ११. १३ | अशुभ |
| म | मू अ. श्ले. मृ उ. भा. | ३. ७. ८. १३ | सिद्धि |
| म | आ. म. ध. श. पू. भा. उ. षा. | २. १० | अशुभ |
| बु. | अनु. रो. मृ कृ. पु. | २. ७. १२ | सिद्धि |
| बु. | अ. मृ. मू ध. रे | १. ३. ९ | अशुभ |
| बृ. | अ. पुन पु. रे अनु. | ५. १०. १५ | सिद्धि |
| बृ. | कृ. रो मृ. आ उ. फा श. | ४ ६. ८ | अशुभ |
| शु. | पुन. उ. फा वि श्र रे | १. ६. ११. १३ | सिद्धि |
| शु. | रो पु. श्ले म. ज्ये. | २: ७ | अशुभ |
| श | रो. स्वा. पू. फा. म. श्र. | ४. ९. १३ | सिद्धि |
| श. | उ फा ह. चि. उ षा रे | ६. ७ | |

हो तो सिद्धियोग होता है; बुध को मूल, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा और ३।९।१ तिथि हो तो कुयोग होता है। जो गुरु को अश्विनी, रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य; ५।१०।१५ तिथि हो तो सिद्धि योग होता है। और गुरुवार को शतभिषा, आर्द्रा, कृत्तिका, उत्तराफल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, ये नक्षत्र और ८।६।४ तिथि हो तो कुयोग समझना। जो शुक्र को चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसु और ११।६।१।१३तिथि हो तो सिद्धियोग; जो शुक्र को रोहिणी, पुष्य, अश्लेषा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र २।७ तिथि हो तो कुयोग कहना। जो शनि को रोहिणी, स्वाती, श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी, मघा १।४।१।३ तिथि हो तो सिद्धि योग कहिये, जो शनि को हस्त, उत्तराषाढ़ा चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती ६।७ तिथि हो तो कुयोग कहना ॥११९ —१३२॥

## नक्षत्राणंचर-जलादिसंज्ञा

चरं चलं स्मृतं स्वातिः पुनर्वसुश्रुतित्रयम् ।
क्रूरमुग्रं मघा पूर्वात्रितयं भरणी तथा ॥१३३॥
ध्रुवं स्थिरं विनिर्दिष्टं रोहिणी चोत्तरात्रयम् ।
तीक्ष्णं दारुणमाश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च ॥१३४॥
लघुक्षिप्रं स्मृतं पुष्यो हस्ताश्विन्यभिजित् स्मृतम् ।
मृदु मैत्रं स्मृतं चित्राऽनुराधा रेवती मृगः ॥१३५॥
मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा ।
नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि नामतुल्यानि कारयेत् ॥१३६॥

| धार | नक्षत्र | संज्ञा |
|---|---|---|
| चन्द्र | पुन. स्वा. श्र. ध. श. | चर चल |
| मंगल | तीनों पूर्वा भर. म. | क्रूर उग्र |
| रवि | तीनों उत्तरा. रो. | ध्रुव स्थिर |
| शनि | आर्द्रा श्ले. ज्ये. मू. | तीक्ष्ण दारुण |
| गुरु | अश्वि. पु. हस्त अभि. | क्षिप्र लघु |
| शुक्र | मृ चि. अनु. रे. | मृदु मैत्र |
| बुध | कृ. वि. | मिश्र साधारण |

नक्षत्राणां संज्ञाबोधकचक्रम्

अट्ठाईस नक्षत्रों की सात संज्ञा हैं जिन्हें अलग २ कहते हैं। स्वाती, पुनर्वसु, धनिष्ठा, शतभिषा इनकी चर और चल संज्ञा है। इस में चर कार्य शुभ हैं। मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद तथा भरणी इनकी क्रूर एवं उग्र संज्ञा है, इनमें क्रूर कार्य शुभ हैं। रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा है, इनमें स्थिर कार्य शुभ हैं। आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं, इनमें तीक्ष्ण कार्य शुभ हैं। पुष्य, हस्त, अश्विनी, अभिजित की लघु और क्षिप्र संज्ञा है, इसमें शीघ्र और स्वल्प कार्य ग्राह्य है। चित्रा, अनुराधा, रेवती एवं मृगशिरा ये मृदु

और मैत्र संज्ञक हैं, इनमें मैत्री कार्य शुभ हैं। विशाखा, कृत्तिका इन की मिश्र और साधारण संज्ञा है। इनमें सामान्य कार्य शुभ हैं। इन सातों नामानुसार ही कार्य करना लाभप्रद है ॥१३३-१३६॥

शनि चक्रम

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ॥१३७॥
तावद्विचारयेत्तत्र तथा ज्ञेयं शुभाशुभम् ।
एकं मुखे च नक्षत्रं चत्वारि दक्षिणे करे ॥१३८॥
त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।
ललाटे द्वितयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदे द्वयम् ॥१३९॥
एकं भं दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।
हानिर्मुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रोगिता ॥१४०॥
हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्य्यटनं फलम् ।
नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिन्तयेत् ॥१४१॥
जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ।
अन्यान्येवं विचार्याणि वाहनादि बहूनि च ॥१४२॥

मनुष्य की आकृति का शनि चक्र बनावे। जिस नक्षत्र पर शनि हो उसे मुख पर लिखे तथा जिस-जिस अंग में जन्म नक्षत्र पड़े उनका शुभाशुभ फल निम्न अनुसार जानो। मुख में एक नक्षत्र, दाहिने हाथ में ४, दोनों हाथों में ३-३, बायें हाथ में ४, मस्तक में २, नेत्रों में २, हृदय में ५, गुदा में २, दाहिनी आंख में एक क्रमशः स्थापित करे। यदि मुख में जन्म नक्षत्र पड़े तो हानि दाहिने हाथ में लाभ, बायें हाथ में रोग, हृदय में धन-प्राप्ति, मस्तक में राज्य (राज्य पद), पैरों में भ्रमण, नेत्रों में सुख, गुदा में मृत्यु एवं कोख में जन्म नक्षत्र पड़े तो जप, दान, पूजा, विप्र भोजनादि करके सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार ग्रहों के वाहनादि का भी विचार कर लेना चाहिये ॥१३७-१४२॥

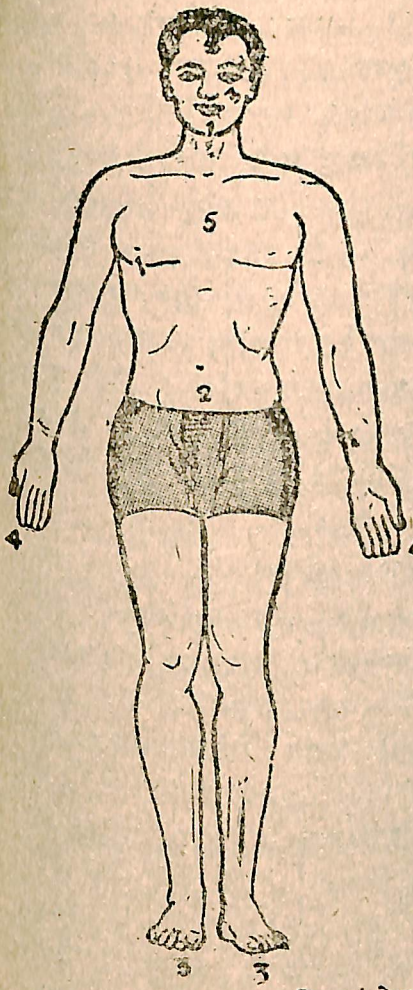


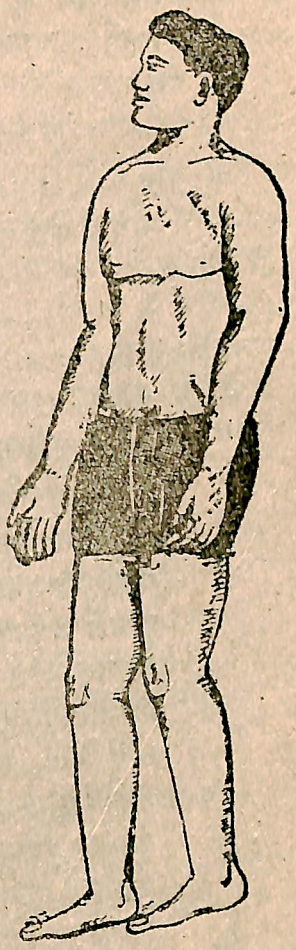

शनिफलं देशविशेषेण

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे।
मिथुने जायते पीडा स्थले मूलस्थलीषु च ॥१४३॥
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थे मृगाधिपे।
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये प्रपीडनम् ॥१४४॥

तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः ।
न वर्षन्ति तथा मेघाः पृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता ॥१४५॥
सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ ।
मीने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षात् क्षयो भवेत् ॥१४६॥

यदि मेष का शनि हो तो गुजरात देश में पीड़ा करता है, वृष का हो तो प्रभास क्षेत्र एवं अर्बुद देश में, मिथुन का हो तो स्थल और मूलस्थल देश में, कर्क का काश्मीर में, सिंह का इन्द्रप्रस्थ (देहली) में, कन्या का शनि मालवा देश में पीड़ा अथवा क्षय कारक होता है। तुला या वृश्चिक का शनि हो तो वर्षा नहीं होती, दुर्भिक्ष से पीड़ित होता है। मकर और कुम्भ का शनि हो तो अन्न का सुकाल होता है। यदि मीन का शनि हो तो दुर्भिक्ष पड़े एवं उससे पीड़ा भी उत्पन्न होती है ॥१४३-१४६॥

वारानुसारेण मासफलानि

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च सन्ततम् ।
दुर्भिक्षं छत्रभङ्गञ्च तदाऽऽस्ते च महद्भयम् ॥१४७॥
सोमस्य पञ्च वाराश्च यत्र मासे भवन्ति च ।
धनधान्यसमृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी ॥ १४८ ॥
यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च वासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥ १४९ ॥
बुधस्य पञ्चवाराश्च जायन्ते च निरन्तरम् ।
प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षञ्च प्रजायते ॥ १५० ॥
यत्र मासे पञ्च वारा जायन्ते च बृहस्पतेः ।
विग्रहः पश्चिमे देशे पीडा युद्धं च जायते ॥ १५१ ॥
यस्मिन् मासे शुक्रवाराः पञ्च यत्र भवन्ति हि ।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते ॥ १५२ ॥
शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी ।
ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता ॥ १५३ ॥

जिस मास में पांच रविवार हों उसमें मंहगी, छत्र-भगं एवं महाभय होता है। जिस मास में पांच सोमवार हों उसमें धन-धान्य की वृद्धि तथा सर्वत्र सुख होता है। जब पांच मंगल हों तो पृथ्वी पर रक्त पात हो तथा छत्र भंग हो। जिस मास में पांच बुधवार होते हैं, उस मास में प्रजा सुखी एवं सुकाल होता है। यदि पांच गुरुवार हों तो पश्चिम देश में युद्ध तथा पीड़ा होती है। जिस मास में पांच शुक्रवार होते हैं उसमें प्रजा की वृद्धि, सुकाल एवं सुख होता है। यदि पांच शनिवार पड़ें, तो भूकम्प आवे, ईशान देश भंग हो अग्नि प्रकोप तथा अन्न मंहगा होय ॥१४७-१५३॥

अभिजिन्मुहूर्त्त ज्ञानम्

अङ्गुल्यो विंशतिः सूर्ये शङ्कुः सोमे च षोडश।
कुजे पञ्चदशाङ्गुल्यो बुधवारे चतुर्दश ॥ १५४ ॥
त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः।
शङ्कुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ १५५ ॥
तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका स्मृता बुधैः।
अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धि यान्ति कृतानि च ॥१५६॥
जातोऽभिजिति राजा स्याद् व्यापारे सिद्धिरुत्तमा।
कुयोगेऽपि मुहूर्तोऽयं सर्वमङ्गलदायकः ॥ १५७ ॥

अथाभिजित मुहूर्त्तयन्त्र—

| वार | सूर्य | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अङ्गुल | २० | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | १२ |

रविवार को २० अंगुल की, सोमवार को १६ अंगुल की, मंगल को १५ अंगुल की, बुध को १४ अंगुल की, वृहस्पतिवार को १३

अंगुल की, शुक्रवार को १२ अंगुल की तथा शनिवार को भी १२ अंगुल की सींक लेकर खड़ी करे। जब मध्याह्न में सींक की छाया उसके मूलमें आ जावे, उस समय एक घड़ी तक अभिजित् मुहूर्त्त रहता है। उस समय में किये गये सभी कार्य सिद्ध होते हैं। अभिजित् में जिसका जन्म होता है वह राजा होता है तथा व्यापार में सिद्धि होती है। इस समय अत्यन्त क्रूर योग भी सर्व मंगल दायक होता है ॥१५४-१५७॥

शुक्रोदय फलम्

अन्नवृद्धिः फाल्गुने स्याच्चैत्रे च धनसम्पदः।
वैशाखे विग्रहो राज्ञां ज्येष्ठे वृष्टिश्च भूयसी ॥१५८॥
आषाढे चोदिते शुक्रे फलं भवति दुर्लभम्।
श्रावणे तु पशोः पीडा भाद्रे धान्यसमृद्धयः॥ १५९॥
आश्विने सर्वसम्पत्तिः शुभं कार्तिकमार्गयोः।
पौषे माघे छत्रभङ्गो यद्युदेति भृगोः सुतः॥ १६०॥

यदि फाल्गुन में शुक्रोदय हो तो अन्न की वृद्धि, चैत्र में हो तो धन और सम्पति, वैशाख में शुक्रोदय हो तो राजाओं में विग्रह, ज्येष्ठ में हो तो वर्षा अधिक होती है। आषाढ़ में शुक्र का उदय हो तो जल दुर्लभ होता है। श्रावण में शुक्रोदय हो तो पशुओं को पीड़ा तथा भादों में हो तो अन्न में वृद्धि होती है। यदि आश्विन में शुक्र का उदय हो तो सब सम्पत्ति तथा कार्तिक अगहन में शुभप्रद है। यदि पौष या माघ में शुक्रोदय हो तो छत्र भंग होता है ॥१५८-१६०॥

होलिका वायु परीक्षा

पूर्वे वायुर्होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम्।
पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम्॥ १६१॥
पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुद्धरे धान्यसम्भवः।
यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराजस्य संक्षयः॥ १६२॥

यदि होली को पूर्व की वायु चले तो राजा-प्रजा दोनों को सुख, दक्षिण पवन चले तो दुर्भिक्ष हो, लोग अपना २ देश छोड़ कर भागें। पश्चिम की वायु चले तो तृण वृद्धि, उत्तर की वायु चले तो अन्न की वृद्धि होती है। यदि होली की शिखा आकाश को अर्थात् ऊपर को जाय तो राजाओं के गढ़ भी नष्ट हो जाते हैं ॥१६१-१६२॥

वृष्टि लक्षणम्

एकादश्यां कार्त्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते।
आषाढे च तथा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः॥ १६३ ॥
मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा।
तथा वृष्टिः श्रावणे च मासि सञ्जायते ध्रुवम्॥१६४॥
कृष्णापक्षदशम्यां च वृष्टिः पौषे च जायते।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥१६५॥
वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्या ज्येष्ठे मूले च वर्षति।
नक्षत्रे वारिवाहश्च तदाऽन्नैः पूर्यते मही॥ १६६ ॥
पञ्चम्यां प्रथमे पक्षे श्रावणे च प्रवर्षते।
पयोवाहस्तदा नान्यैर्धरा व्याप्ता जलैरपि ॥१६७॥

यदि कार्तिक की एकादशी को मेघ दीखें तो आषाढ़ में निस्सन्देह वर्षा होती है। मार्गशीर्ष की अष्टमी को यदि बिजली चमके तो श्रावण में श्रेष्ठ वर्षा होती है। पौष कृष्ण पक्ष की दशमी को वर्षा हो तो भाद्रमास में अधिक वर्षा होय। यदि माघ सप्तमी को और ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र को वर्षा हो तो वर्षा के सभी नक्षत्रों में उत्तम वर्षा हो, पृथ्वी अन्न से पूर्ण होय। श्रावण कृष्ण पञ्चमी को वर्षा हो तो पृथ्वी जल और अन्न से पूर्ण हो जाती है ॥१६३-१६७॥

आषाढ़ पूर्णिमायां नक्षत्राणां शुभाशुभ फलं

आषाढे पूर्णिमायां यन्नक्षत्रं विचारयेत्
पूर्वाषाढे सुभिक्षं च मूले दुर्भिक्षमुच्यते।
उतराषाढकेऽश्वानां पीडा कटकसङ्कृतिम्॥१६८॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को जो नक्षत्र हो उसका फल क्रम से जानें। पूर्वाषाढ़ हो तो सुभिक्ष, मूल हो तो अकाल, उत्तराषाढ़ा हो तो घोड़ों को पीड़ा तथा फौजों में भिड़न्त हो ॥ १६८ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण की प्रतिपदा के वारों का फल

**ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपच्च यदा भवेत्।**
**रवेर्वारे तदा वायुर्वाति वृक्षान्तकारकः ॥ १६९ ॥**
**अत्यन्तविग्रहो भौमे बुधे दुर्भिक्षमुच्यते।**
**अनावृष्टिः शतेर्वारे जलं क्वापि न लभ्यते ॥ १७० ॥**
**सौमशुक्रसुरेज्यानां यदि वारः प्रजायते।**
**धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहेगेहे महोत्सवः ॥ १७१ ॥**

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को यदि रविवार हो तो वृक्षों को नष्ट करने वाली तीव्र वायु चले, भौमवार हो तो अत्यन्त विग्रह हो, बुधवार को तो दुर्भिक्ष पड़े, शनिवार हो तो पानी का अकाल, सोम, शुक्र अथवा वृहस्पतिवार हो तो धन धान्य तथा पुत्रों की उत्पत्ति हो तथा घरों में उत्सव हों ॥ १६९–१७१ ॥

पौषसंक्रान्ति फलम

**पौषमासस्य संक्रान्तौ रविवारो यदा भवेत् ॥ १७२ ॥**
**धान्यान्यां त्रिगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम्।**
**त्रिगुणं शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत् ॥ १७३ ॥**
**सुराचार्ये च सोमे च मौल्यमर्धं सुनिश्चितम्।**
**क्रूरो हि लाभकृद्धान्ये सौम्यो हानिप्रदो भवेत् ॥ १७४ ॥**

पौष मास की संक्रान्ति को यदि रविवार हो तो अन्न का तिगुना मोल हो, मंगल हो तो चौगुना, शनिवार हो तो तिगुना, बुधवार अथवा शुक्रवार हो तो समभाव रहता है तथा वृहस्पति या सोमवार हो तो निश्चित आधा मूल्य रह जाता है। यदि क्रूरवार हों तो अन्न में लाभ तथा सौम्यवार हों तो अन्न में हानि होती है ॥ १७२–१७४ ॥

मीन संक्रान्ति फलम

मीनसंक्रमणे सूर्ये वारे वाति समीरणः ।
भौमे पीडा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ॥ १७५ ॥
वृक्षपातः प्रजापीडा मिथ्या सञ्चरते मही ।
हिंसाकामातुरा लोके यदि वृष्टिश्च तद्दिने ॥ १७६ ॥
संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।
छत्रभङ्गो महामारी रोदनं भयचिन्तया ॥ १७७ ॥
संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परमं सुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ॥ १७८ ॥

यदि मीन संक्रान्ति में रविवार हो तो वायु अधिक चले, मंगल हो तो पशु पीड़ा, शनिवार हो तो दुर्भिक्ष, वृक्ष गिरें, प्रजा में पीड़ा मिथ्या प्रचार हो, यदि वर्षा हो तो लोग हिंसक तथा कामातुर, बुधवार हो तो छत्रभंग, महामारी भय, चिन्ता और रोदन हो, यदि सोम हो तो सुख और रवि, भौम या शनिवार हो तो पाप युद्ध और मंहगी हो ॥ १७५–१७८ ॥

संक्रान्ति समये जन्म नक्षत्रस्य विचार

संक्रान्त्यंधनक्षत्रादात्मभावधि गण्यते ।
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥ १७९ ॥
पन्था भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ।
षट्के भागे फलं श्रेष्ठं मासे मासे विचारयेत् ॥ १८० ॥

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ गमनागमन | ६ सुखभोग | ३ व्यथा | ६ वस्त्रसुख | ३ हानि | ६ धनागम |

जिस नक्षत्र की संक्रान्ति हो उस नक्षत्र से अपने नाम नक्षत्र तक गिने, यदि तीन तक हो तो चलना पड़े, फिर ६ नक्षत्रों में भोग मिले, तीन नक्षत्रों में व्यथा, ६ में वस्त्र सुख, फिर तीन नक्षत्रों में हानि, और पुन ६ में अधिक धन मिले । इसी प्रकार क्रमशः प्रत्येक मास में विचार करें ॥ १७९–१८० ॥

## रोहिणी चक्रम

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसंक्रान्तिभादिकम् ।
अष्टाविंशतिकं तत्र लिखेन्नक्षत्रसङ्कुलम् ॥ १८१ ॥
सिन्धौ द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ।
चत्वारः सागरास्तत्र सन्धयश्चाष्टसंख्यकाः ॥ १८२ ॥
शृङ्गाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृतानि च ।
रोहिणी पतिता यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ १८३ ॥
जाता जलप्रदस्यैषा चन्द्रस्य परमप्रिया ।
समुद्रे च महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्च शोभना ।
पर्वते बिन्दुमात्रा च खण्ड वृष्टिश्च सन्धिषु ॥ १८४ ॥

वर्षा का विचार करने के लिये प्रथम द्वादश कोठा का राशी चक्र बनाकर उसमें मेष संक्रान्ति को जो नक्षत्र हो वह प्रथम लिखकर २८ नक्षत्रों को लिखो अर्थात् सिन्धु में दो-दो नक्षत्र, और सर्वत्र एक-एक लिखे। उस रोहिणी चक्र में ४ सागर, ८ सन्धि ४ शृंग तथा ८ तट होते हैं। जहां रोहिणी नक्षत्र पड़े वहां का शुभाशुभ फल कहे। जल प्रद चन्द्रमा की परम प्यारी रोहिणी समुद्र में पड़ तो अधिक वर्षा, तट में पड़े तो शुभ वर्षा हो, पर्वत में पड़े तो बून्द-बून्द वर्षा और यदि सन्धि में रोहिणी पड़े तो कहीं वर्षा हो और कहीं न हो ॥ १८१–१८४ ॥

## नरचक्रम

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १८५ ॥
मुखे त्रयं स्कन्धयोश्च दद्यादेकैकमेव च ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाणयोरे कैकमेव च ॥ १८६ ॥
हृदि पञ्च गुदे चैकं नाभौ चैकं प्रदापयेत् ।
जङ्घयोरेकमेकं षडङ्काः पादयोर्द्वयोः ॥ १८७ ॥

## अथ रोहिणी चक्रम्

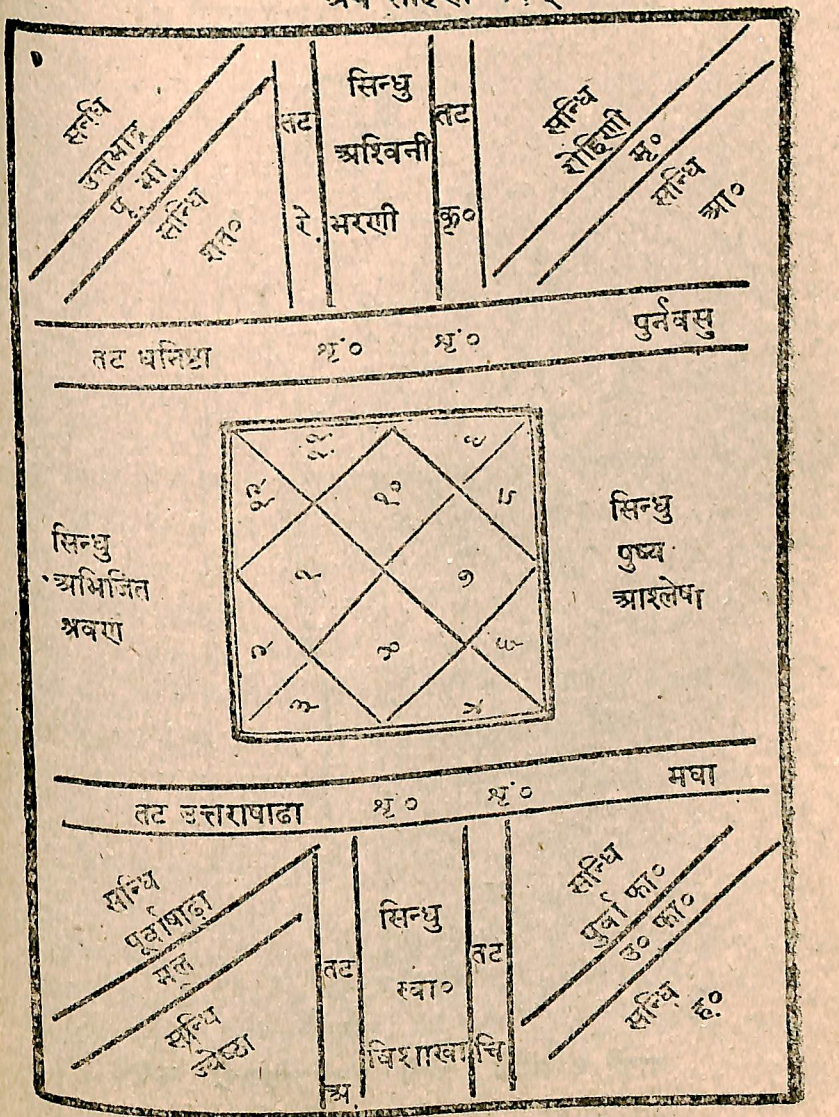


सिन्धु
तट
अश्विनी
तट
रे.
भरणी
कृ०
सन्धि
रोहिणी
मृ०
सन्धि
आ०
सन्धि
उत्तराभा०
पू. भा.
सन्धि
शत०
पुनर्वसु
तट धनिष्ठा
श्र०
श्र०
सिन्धु
अभिजित
श्रवण
सिन्धु
पुष्य
आश्लेषा
मघा
तट उत्तराषाढा
श्र०
श्र०
सन्धि
पूर्वाषाढा
मूल
सन्धि
ज्येष्ठा
तट
सिन्धु
स्वा०
तट
विशाखा
चि
अ
सन्धि
पूर्वा फा०
उ० फा०
सन्धि
ह०
१२
११
१०
९
८
७
६
५
४
३
२
१

मस्तके पट्टबन्धी स्यान्मुखे मिष्टान्नभोजनम् ।
स्कन्धे गजेन्द्रगामी स्याद् बाहुस्थानेऽच्युतो भवेत् ॥१८८॥

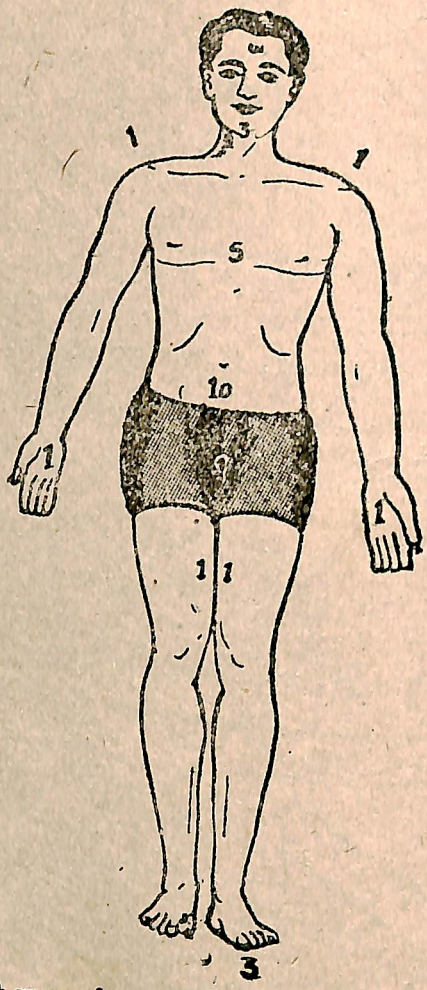


पाणौ च जायते चौरो हृदयेऽपीश्वरो नरः ।
स्वल्पतोषी भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ॥१८९॥

जङ्घ्योः परदेशी स्यादल्पायुश्च पदद्वये।
नृचक्रे सूर्य नक्षत्राज्जन्मभावधि गण्यते ॥ १९० ॥

नराकार चक्र लिख कर सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिन कर तीन नक्षत्र मस्तक में, तीन मुख में, एक-एक दोनों कन्धों में, एक-एक बाहुओं में, १-१ हाथों में, ५ हृदय में, १-गुदा में, १-नाभी में, १-१ दोनों जांघों में, और पैरों में ३-३ नक्षत्र स्थापित करे। यदि जन्म का नक्षत्र मस्तक में पड़े तो कुटुम्ब नाश हो, मुख में पड़े तो मिष्ठान्न भोजन मिले, कन्धों में पड़े तो हाथी की सवारी मिले, बाहु में पड़े तो स्थान छूट जाय, हाथों में पड़े तो चोर, हृदय में पड़े तो सबका स्वामी हो, नाभी में पड़े तो थोड़े में सन्तुष्ट हो, गुदा में पड़े तो परस्त्री गामी हो, जांघों में पड़े तो परदेशी हो तथा यदि जन्म नक्षत्र चरण में आवे तो अल्पायु हो अर्थात् थोड़ी आयु में मृत्यु हो ॥ १८५--१९० ॥

ग्राम चक्रम

ग्रामनाम्नो भवेदृक्षं तदाद्याः सप्त मस्तके।
पृष्ठे सप्त हृदिः सप्तः पादयोः सप्त तारकाः ॥१९१॥
मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥ १९२ ॥

जिस ग्राम अथवा नगर में बसना चाहो उसके नक्षत्र से लेकर ७ नक्षत्र मस्तक में, ७ पीठ पर, ७ हृदय में तथा ७ नक्षत्र पैरों में स्थापित करे। यदि अपना नक्षत्र मस्तक में पड़े तो माननीय और धनवान हो, पीठ पर पड़े तो हानि एवं निर्धन हो, यदि हृदय में पड़े तो सुख संपत्ति और पैरों में पड़े तो परदेश में भ्रमण करना पड़े ॥ १९१--१९२ ॥

मूलवृक्ष चक्रम

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः ।
स्तम्भेषु षट्कघटिकास्त्वयि चैकादश स्मृताः ॥१९३॥
शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयं स्मृतम् ॥१९४॥

मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः।
त्वयि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीडनम् ॥१९५॥
परिवारक्षयः पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतेः।
फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः ॥१९६॥

मूल नक्षत्र के विचार के लिये एक वृक्ष के आकार का चक्र लिख ८ घड़ी मूल में, ६ घड़ी स्तम्भ में, ११ घड़ी त्वचा में, ९ घड़ी शाखाओं में, १४ घड़ी पत्तों में, ५ घड़ी फूलों में, ४ घड़ी फलों में तथा

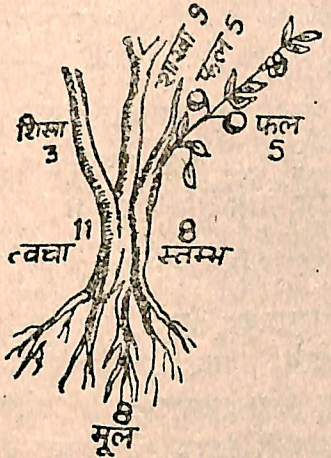


६ घड़ी शिखा में लिखकर उनका फल जाने। चक्र बताये अनुसार जन्म मूल की आठ घड़ी में हो तो मूल नाश आदि चक्र में देखकर क्रमशः अर्थ समझिये ॥ १९३-१९६ ॥

शुक्रान्धे सम्मुख दक्षिण परिहार

रेवत्यादिमृगान्तं च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥१९७॥

रेवती से मृगशिरा तक जब चन्द्रमा रहता है तो शुक्र अन्धा रहता है। वह सम्मुख और दक्षिण भी शुभ होता है ॥ १९७ ॥

शुक्रस्य बाल्य वृद्धत्वं च

प्राक्पञ्चादुदितः शुक्रः पञ्च सप्तदिनं शिशुः ।
विपरीतं तु वृद्धत्वं तद्वदेव गुरोरपि ॥ १९८ ॥

पूर्व में शुक्र उदय हो तो ५ दिन और पश्चिम में उदय हो तो ७ दिन बालक रहता है। इसके विपरीत अस्त होने से पहले पूर्व में ७ दिन और पश्चिम में ५ दिन वृद्ध रहता है। इसी प्रकार गुरु (वृहस्पति) का भी बाल वृद्धत्व जानना चाहिये ॥ १९८ ॥

चन्द्रमा का शुभा शुभत्व

तृतीयो दशमः षष्ठः प्रथमः सप्तमः शशी ।
शुक्लपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमो नवमः शुभः ॥ १९९॥

चन्द्रमा ३, १०, ६, १, ७ वें सदा शुभ होता है एवं शुक्ल पक्ष में २, ५, ९ वें भी शुभ होता है ॥ १९९ ॥

तारा विचारः परिहारश्च

ताराः शुभप्रदाः सर्वास्त्रिपञ्चसप्तवर्जिताः ।
प्रथमे दशमे षष्ठे तृतीयैकादशे तथा ॥२००॥
यदि स्यात् सबलश्चन्द्रस्तारापि क्लेशदायिनी ।
तृतीया पञ्चमी तारा समसेवं नृणां भवेत् ॥२०१॥

३, ५, ७ वीं तारा को छोड़ शेष सब तारायें शुभप्रद हैं। यदि १, १०, ६, ३, ११ इन स्थानों में सबल चन्द्रमा हो तो पूर्वोक्त अशुभ तारायें भी शुभप्रद हो जाती हैं ॥ २००–२०१ ॥

तारा विचारः

जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारां विनिर्दिशेत् ॥२०२॥

जन्मसम्पद्विपत् क्षेमं प्रत्यरिः साधको वधः ।
मैत्रातिमैत्रताराः स्युस्त्रिरावृत्त्या नवैव हि ॥२०३॥

जन्म नक्षत्र से बुद्धिमान मनुष्य दिन नक्षत्र तक गिने। जो संख्या हो उसमें ९ का भाग दो, शेष बचे उसे तारा जाने। एक से ९ शेष तक क्रमशः तारा जाने। जन्म, सम्पत्ति, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र और ९ शेष बचे तो अति मैत्र तारा होती है। इसी प्रकार ३ बार नवों की आवृत्ति से नक्षत्रों की तारायें जानना ॥२०२-२०३॥

अन्य ग्रहाणांशुभाऽशुभत्वम्

तृतीये दशमे षष्ठे राहुः केतुः कुजः शनिः।
षष्ठेऽष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः॥ २०४॥
द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः।
सप्तमं दशमं षष्ठं विहाय भृगुजः शुभः॥ २०५॥
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः।
ग्रहाणां गोचरं ज्ञेयं फलं विज्ञैः शुभाशुभम्॥ २०६॥

३, ६, १० वें स्थानों में मंगल, राहु, केतु और शनि शुभ होते हैं। विवाह में ६, ८, २, ४, १० में बुध तथा ९, २, ५, ७ स्थानों में गुरु और विवाह में ६, ७, १० शुक्र शुभ होते हैं। ग्यारहवें स्थान में सभी ग्रह शुभ होते हैं॥ २०४--२०६॥

| सू. | च. | मं. | बु. | वृ | शु | श. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३.६.१०.११ | १.२.३.५.६.७.९.१०.११. | ३.६.१०.११. | २.४.६.८.१०.११. | २.५.७.९.११. | १.२.३.४.५.८.९.११.१२ | ३.६.१०.११ | शुभ. |
| १.२.४.५.७.८.९.१२ | ४.८.१२.८ | १.२.४.५.७.८.९.१०.११ | १.३.५.७.९.१२ | १.३.४.६.८.१०.१२ | ६.७.१० | १.२.४.५.७.८.९.१२ | अशुभ |

शुभ कार्य वर्जित चन्द्रमसः—

दशम्यवधि कृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चन्द्रमाः।
ततः परं क्षीणचन्द्रः शुभकार्येषु वर्जितः॥ २०७॥

कृष्ण पक्ष की दशमी तक चन्द्रमा पूर्ण रहने से शुभ है फिर क्षीण हो जाने पर शुभ कार्य में वर्जित है ॥ २०७ ॥

क्षौर मुहूर्त्तः

पुनर्वसुद्वयं क्षौरं श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
रेवतीद्वितीयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥ २०८ ॥
क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥२०९॥
रिक्ता षष्ठचष्टमी हेयाः क्षौरे चन्द्रक्षयो निशा ।
संध्या विष्टिश्चगण्डान्तं भोजनान्तं च गोगृहम् ॥२१०॥

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा तथा मृगशिरा ये नक्षत्र क्षौर कर्म में ग्राह्य हैं। मघा, अनुराधा, रोहणी, तीनों उत्तरा एवं कृत्तिका ये नक्षत्र तथा मंगल, रवि, शनिवार ये क्षौर में प्राण हरने वाले हैं अतः त्याज्य हैं। ४, ९, १४, ६, ८, ३० ये तिथियां, रात्रि, सन्ध्या समय, भद्रा गण्डान्त, भोजन पश्चात् एवं गोशाला ये सब क्षौर में त्याज्य हैं ॥ २०८-२१० ॥

राज्याभिषेके

रेवतीयुगले पुष्ये रोहिण्यां मृगमैत्रयोः ।
श्रवणोत्तरशुक्रेषु राज्ञां स्यादभिषेचनम् ॥२११॥

रेवती, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, तीनों उत्तरा तथा ज्येष्ठा, इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक शुभ हैं ॥ २११ ॥

तिर्यङ् मुख संज्ञकादि नक्षत्राणं सकृत्यंच

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयं मृगः ।
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्यङ्मुखो बुधैः ॥२१२॥
वृक्षरोपणवाणिज्यं वाहनं यन्त्रमेव च ।
रहण्टकं च गमनं सर्वसिद्धिश्च कारयेत् ॥२१३॥

पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखा कृत्तिका यमः।
मूलं चाधोमुखो ज्ञेयो नवकोऽयं गणो बुधैः ॥११४॥
भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च।
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥२१५॥
उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुतित्रयम्।
ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणां मनीषिभिः ॥२१६॥
प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम्।
राज्याभिषेकमश्वं च कुर्याद्ऊर्ध्वमुखे गणे ॥२१७॥

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृग-शिरा, पुनर्वसु, इनकी तिर्यङ् मुख संज्ञा है। इनमें वृक्ष लगना, वाणिज्य, वाहन, यन्त्र, रहट तथा गमन शुभ है। तीनों पूर्वा, मघा,

अथ तिर्यङ् मुखाअधोमुखोर्ध्वमुख चक्रम्

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रेवती | अश्वि | ज्येष्ठा | अनु. | हस्त | चित्रा | स्वाती | मृग. | पुन. | तिर्यङ् मुख |
| पू.फा | पू.षा. | पू.भा. | मघा | आश्ले | विशा. | कृत्ति० | भरणी | मूल | अधो मुख |
| उ.फा. | उ.षा. | उ.भा. | पु | ह्रि० | आर्द्रा | श्रवण | धनि० | शत. | ऊर्ध्व. मुख |

आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका भरणी, मूल, इन अधोमुख नक्षत्रों में भूमि कार्य, उग्र कार्य, कूप खनन, युद्ध और नीचे मुख वाले कार्य शुभ हैं। ३ उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में छत बनाना, गृहादि का छाना, चहारदीवारी, ध्वज, बन्दनवार, घोड़ा की सवारी तथा राज्याभिषेक शुभ है॥ २१२--२१७॥

भैषज्य कार्य मुहूर्त्तः

पुनर्वसुद्वयं पौष्णं मृगाश्वौ च करत्रयम् ।
मूलं श्रुतित्रयं मैत्रं भिषक्कर्मणि गृह्यते ॥२१८॥
सोमशुक्रसुरेज्यानां वाराः शकुनमुत्तमम् ।
लग्नेषु चापमीनेषु वृषो ग्राह्यस्तुलाधरः ॥२१९॥

पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा ये नक्षत्र, शुक्र, गुरु, चन्द्र ये वार, धनु, मीन, वृष, तुला, ये लग्न एवं उत्तम शकुन वैद्य आदि कार्य में शुभ हैं ॥ २१८--२१९ ॥

गोपशुनिर्गमन मुहूर्त्तः

अमावास्याष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी ।
रविवारश्च सन्त्याज्यो गोपशूनां विनिर्गमे ॥२२०॥
चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जितः ।
एतेषु पशुजातीनामशुभं निर्गमे भवेत् ॥२२१॥

३०, ८, १५, १४ ये तिथियां, रविवार तथा चित्रा, तीनों उत्तरा रोहिणी एवं श्रवण नक्षत्र इन सब में पशुओं का बाहर ले जाना अशुभ है। अन्य में शुभ है ॥ २२०--२२१ ॥

पशुग्रहणमुहूर्त्तः

उत्तरायां विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ ।
नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत्पशून् ॥२२२॥

तीनों उत्तरा, विशाखा, रोहिणी, पुनर्वसु इन नक्षत्रों तथा ९, १४, ८ इन तिथियों में पशु लेना त्याज्य है ॥ २२२ ॥

पशु क्रय-विक्रय मुहूर्त्तः

पूर्वामैत्रद्वयं मूलं वामवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥२२३॥
पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती श्रुतिरथाश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथा श्लेषा च रेवती ॥२२४॥

ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः।
चन्द्रभार्गवजीवानां वाराः शकुनमुत्तमम् ॥२२५॥

तीनों पूर्वा, अनु०, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, ह०, पुन०, पुष्य इन नक्षत्रों में पशुओं का क्रय-विक्रय शुभ है। तथा पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उ० भाद्र, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, अनु०, आश्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों में तथा सोम, शुक्र, गुरु, इन वारों में, और उत्तम शकुन में सब वस्तुओं का क्रय-विक्रय शुभ है॥ २२३--२२५॥

तिथि गण्डान्तः

नन्दातिथेश्च नामादौ पूर्णायाश्च तथान्तके।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डे घटीद्वयम् ॥२२६॥

नन्दा तिथियों के आदि की, पूर्णा के अन्त की एक--एक घड़ी शुभ कार्य में त्याज्य है। तथा अन्य तिथियों को दो--दो घड़ी गडान्त हैं॥ २२६॥

नक्षत्र गण्डान्तः

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते च घटिकाद्वयम्।
आदौ मूलमघाश्विन्यां भगण्डं घटिकाद्वयम् ॥२२७॥

ज्येष्ठा, अश्लेषा, रेवती इनके अन्त की दो-दो घड़ी एवं मूल, मघा अश्विनी इनकी आदि की दो-दो घड़ी नक्षत्र गण्डान्त होता है। जो शुभ कार्य में निषिद्ध है॥ २२७॥

लग्न गण्डान्तः

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्द्धं परित्यजेत्।
आदौमेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥२२८॥

मीन, वृश्चिक, कर्क के अन्त की आधी घड़ी, मेष, धन, सिंह की आदि की आधी-आधी घड़ी जो लग्न गण्डान्त हैं, शुभ कार्य में त्याज्य हैं॥ २२८॥

गण्डान्त जन्म फलम्

**तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः।**
**न जीवति यदा जातो जीवितश्चेद् धनी भवेत् ॥२२९॥**

तिथि, नक्षत्र एवं गण्डान्तों में जन्म लेने वाला जीवित नहीं रहता। यदि जीवे तो अति धनाढ्य होवे ॥ २२९ ॥

संवर्तयोगः

**सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधश्च प्रतिपद्दिने।**
**संवर्त्ताख्यस्तदा योगो वर्जनीयः सदा बुधैः ॥२३०॥**

सप्तमी को रविवार, प्रतिपदा को बुधवार हो तो संवर्त्तनाम योग होता है, ये शुभ कार्य में निषिद्ध हैं ॥ २३० ॥

सिद्धियोगः

**शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया।**
**गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोग उदाहृतः ॥२३१॥**

अथ सिद्धियोगचक्रम्

| शुक्र | बुध | शनि | मंगल | गुरु | वार |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ३ | ५ | |
| ६ | ७ | ९ | ८ | १० | तिथि |
| ११ | १२ | १४ | १३ | १५ | |

शुक्रवार को नन्दा ( १। ६। ११ ), बुध को भद्रा ( २। ७। १२), शनि को रिक्ता (४। ९। १४), मंगल को जया ( ३। ८। १३), गुरुवार को पूर्णा तिथि ( ५। १०। १५ ) हो तो सिद्धियोग होता है ॥ २३१ ॥

विष्कम्भादि सप्त विंशति योगः

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलं तथैव च ॥२३२॥
गण्डो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥२३३॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मा ऐन्द्रोऽथ वैधृतिः ।
सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥२३४॥

१ विष्कुम्भ, २ प्रीति, ३ आष्युमान, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गंड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयान, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्मा, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति, ये २७ योग नामानुसार फलप्रद हैं ॥ २३२--२३४ ॥

करणानि

तिथिं तु द्विगुणीकृत्य हीनमेकेन कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥२३५॥
बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च ॥२३६॥
अन्त्ये कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः ।
भवेच्चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रदिपद्दले ॥२३७॥
स्थिराण्येतानिचत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ।
शुक्लप्रतिपदान्ते च बवाख्यः करणो भवेत् ।
एकादश च विज्ञेयाश्चरस्थिरविभागतः ॥२३८॥

शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गिनकर दूना करे, फिर एक घटावे और ७ का भाग देवें जो शेष रहे उसे बवादि करण जाने । १ बचे तो बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ विष्टि ये ७ चर संज्ञक करण हैं । कृष्ण चतुर्दशी के

उतरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद करण, और शुक्ल प्रतिपद के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है। इन चारों को विद्वान स्थिर कहते हैं। शुक्ल पक्ष प्रतिपद को बव करण कहते हैं। इस प्रकार चर और स्थिर भेद से ११ करण होते हैं ॥ २३५--२३८ ॥

कृष्णपक्षकरणानि—

| ति | पूर्वार्ध | परार्ध |
|---|---|---|
| १ | बालव | कौलव |
| २ | तैतिल | गर |
| ३ | वणिज | विष्टि |
| ४ | बव | बालव |
| ५ | कौलव | तैतिल |
| ६ | गर | वणिज |
| ७ | विष्टि | बव |
| ८ | बालव | कौलव |
| ९ | तैतिल | गर |
| १० | वणिज | विष्टि |
| ११ | बव | बालव |
| १२ | कौलव | तैतिल |
| १३ | गर | वणिज |
| १४ | विष्टि | शकुनी |
| ३० | चतुष्पद | नाग |

शुक्लपक्षकरणानि—

| ति | पूर्वार्ध | परार्ध |
|---|---|---|
| १ | किंस्तुघ्न | बव |
| २ | बालव | कौलव |
| ३ | तैतिल | गर |
| ४ | वणिज | विष्टि |
| ५ | बव | बालव |
| ६ | कौलव | तैतिल |
| ७ | गर | वणिज |
| ८ | विष्टि | बव |
| ९ | बालव | कौलव |
| १० | तैतिल | गर |
| ११ | वणिज | विष्टि |
| १२ | बव | बालव |
| १३ | कौलव | तैतिल |
| १४ | गर | वणिज |
| १५ | विष्टि | बव |

नक्षत्र देवता:

दस्रो यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः।
भुजंगमश्च पितरो भगोऽर्यमदिवाकरौ ॥२३९॥

त्वष्टा वायुः शक्रवह्नी मित्रः शक्रश्च नैर्ऋतिः।
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥२४०॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथिता बुधैः।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥२४१॥

(१) (२)

| नक्षत्र | संख्या | देवता | नक्षत्र | संख्या | देवता |
|---|---|---|---|---|---|
| अ. | १ | अश्वि | स्वा. | १५ | वायु |
| भ. | २ | यम | वि. | १६ | इन्द्राग्नी |
| कृ. | ३ | अग्नि | अनु. | १७ | सूर्य |
| रो. | ४ | ब्रह्मा | ज्ये. | १८ | इन्द्र |
| मृ. | ५ | चन्द्रमा | मू. | १९ | राक्षस |
| आ. | ६ | रुद्र | पू. | २० | जल |
| पु. | ७ | अदिति | उ. | २१ | विश्वे देव |
| पु. | ८ | बृहस्पति | अभि. | २२ | विधि |
| आ. | ९ | सर्प | श्र. | २३ | विष्णु |
| म. | १० | पितृ | ध. | २४ | वसु |
| पू. | ११ | भग | श. | २५ | वरुण |
| उ. | १२ | अर्यमा | पू. | २६ | अजैकपाद |
| ह. | १३ | सू | उ. | २७ | अहिर्बुध्न्य |
| चि. | १४ | त्वष्टा | रे. | २८ | पूषा |

अश्विनी के स्वामी अश्विनी कुमार, भरणी के यम, इसी प्रकार नीचे बने स्पष्टार्थ चक्र में देखकर नक्षत्रों के स्वामी को जान लें। तथा जिस देवता की पूजा करनी हो उसी के नक्षत्र में करें॥ २३९--२४१ ॥

इति श्री काशीनाथ भट्टाचार्य कृत शीघ्रबोधे अर्गलपुर मण्डलान्तर्गत सेंगई ग्राम वासिन पं० ऋषिकुमार शर्मा विरचितायां ऋषि-तत्व बोधिनी भाषाटीकायां द्वितीय प्रकरणं समाप्तम्।

# अथ तृतीयप्रकरणम्

## प्रश्नफल ज्ञानम्

शिरो मुखं कर्णनेत्रे स्पृष्टवा पृच्छति यो नरः।
सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥१॥
स्कन्धग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभो हि दुःखितः।
कुक्षिनाभिसमालम्भे भक्ष्यपानादि सिध्यति ॥२॥
जङ्घालिङ्गकटिस्पर्शे कन्यालाभः सुतोद्भवः।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥३॥

| स्पर्श स्थान | फल |
|---|---|
| मुख, कान, नेत्र | धान्य-धन-लाभ |
| कन्धा, कण्ठ, ग्रीवा | कष्ट से धन-लाभ |
| कुक्षि, नाभि | सुन्दर भोजन |
| कटि, जाँघ, लिङ्ग | सन्तान-सुख |
| पैर, जानु, गुल्फ | महाक्लेश |
| केश | मृत्यु |
| तृण-अग्नि | कार्य सिद्ध न होगा |
| फल | शुभ |
| सुगन्ध-मद्यपान | सिद्धि |
| शून्यगृह, श्मशान, सूखा काष्ठ, चावल, टूटे वृक्ष, लता, नीचस्थान, | क्लेश |
| देवस्थान, नदी-तीर, पवित्र स्थान, शुभ दिशाओं में | शुभ |
| किसी कोण में | अशुभ |

केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवेत्।
तृणाङ्गारकसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न जायते ॥४॥
काष्ठपङ्कदपस्पर्शे ग्रहपीडा भयं भवेत्।
सुगन्धमद्यभाण्डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ॥५॥

शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठक्षते तरौ।
गुल्फभस्माधमस्थाने प्रश्ने क्लेशः प्रजायते ॥६॥
देवागारे नदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत्।
शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥७॥

यदि प्रश्न पूछने वाला मुख, कान, नेत्र स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो निःसन्देह धन-धान्य एवं अन्नादि का लाभ हो। कन्धा, गर्दन, कण्ठ और हाथों का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो कष्ट से लाभ होता है। कांख या नाभि का स्पर्श कर पूछे तो सुन्दर अन्न-पानादि मिले। जांघ, कमर एवं लिंग को स्पर्श करता पूछे तो कन्या अथवा पुत्र का लाभ होता है। गोड़, जानु अथवा पैरों को छुये तो क्लेश पावे। बालों को छूता हुआ प्रश्न करे तो मृत्यु हो। फल स्पर्श कर पूछे तो शुभ है। तिनका या अंगार छुये तो कार्य सिद्धि न हो। काष्ठ, कीच या वस्त्र छूकर प्रश्न करे तो ग्रह-जन्य पीड़ा हो। सुगन्ध या मदिरा पात्र स्पर्श कर पूछे तो कार्य-सिद्धि हो। शून्य गृह, श्मशान सूखे काठ पर या टूटे वृक्ष के नीचे पूछे तो क्लेश हो। देवस्थान, नदी का तट, पवित्र स्थान एवं शुभ स्थान में शुभ दिशा में पूछे तो शुभ है, तथा विदिशा में पुछे तो सिद्धि नहीं होती ॥१-७॥

लग्नमानम्

तिस्त्रो मीने च मेषे च घटी पञ्चधृतिः पलम्।
चतस्रश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडश ॥८॥
मिथुने मकरे पञ्च घटिका विंशिखाः पलम्।
पञ्च कर्के च चापे च शशिवेदाः पलाः स्मृताः ॥९॥
कन्यायां च तुले पञ्च पलाश्चन्द्रस्तथाग्नयः।
घटिकाः पञ्च सिंहेऽलौद्वयं वेदाः पलाः स्मृताः।
एवं लग्नप्रमाणं स्यात् कथितं पूर्वसूरिभिः ॥१०॥

मीन तथा मेष लग्न ३ घ० ४५ पल, वृष; कुम्भ ४ घ० १६ पल; मिथुन, मकर ५ घ० ५ पल; कर्क, धनु ५ घ० ४१ पल;

उदयमानपल

| मे. मी. | वृ. कुं. | मि. म. | क. ध. | सि. वृश्चिक | कं तु. |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ घटी ४५ पल | ४ घटी १६ पल | ५ घटी ५ पल | ५ घटी ४१ पल | ५ घटी ४२ पल | ५ घटी ३१ पल |

सिंह, वृश्चिक ५ घ० ४१ पल; कन्या, तुला, ५ घ० ३१ पल लग्न प्रमाण कहा है ॥८-१०॥

ग्रहाणां दानानि

सूर्य धनुश्च ताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् ।
चन्द्रे शङ्खश्चन्दनं च वस्त्रं चासिततण्डुलाः ॥११॥
कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडौदनम् ।
बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हरिद्रा च हरिन्मणिः ॥१२॥
पीतवस्त्रं द्वयं जीवे हरिद्रा चणकास्तथा ।
अश्वः शुक्रे सितो देयः शुक्लधान्यानि यानि च ॥१३॥
शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णागोदानमुत्तमम् ।
राहौ च महिषीछागौ माषाश्चतिलसर्षपाः ॥१४॥
अजमेषौ च दातव्यौ केतौ चान्नं विमिश्रितम् ।
स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषां शान्तिरुत्तमा ॥१५॥

सूर्य का दान लाल गौ, तांबा, गेहूं तथा लाल चन्दन । चन्द्र का शंख, सफेद चन्दन, सफेद वस्त्र, सफेद चावल । भौम का दान, बैल, लाल वस्त्र, गुड़, चावल । बुध का कपूर, मूंग, हल्दी, चने की दाल । शुक्र का दान श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्रान्न । शनि का तेल, तिल, काली गाय । राहु का भैंस, बकरा, उड़द, तिल, सरसों । केतु का दान बकरा मेंढ़ा, सतनजा । उपरोक्त दान देने से सुवर्णदान, गौ दान और

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रक्त गेहूँ ताँबा | शंख चन्दन | रक्त बैल रक्त वस्त्र | कपूर मूँग | पीला वस्त्र दोनों हल्दी | श्वेत घोड़ा | तेल तिल | भैंस बकरा | बकरा मेढ़ा |
| रक्त चन्दन | श्वेत वस्त्र ,, चावल | गुड़ लाल चावल | हल्दी | चना की दाल | श्वेत चावल | काली गाय | उड़द तिल | सप्त धान्य |
| माणिक | चाँदी मोती | मूँगा | पन्ना | पुखराज | हीरा चाँदी | सोना नीलम | सरसों गोमेद | लहसुनिया |

ब्राह्मण की पूजा करने से समस्त ग्रहों के दोषों की शान्ति होती है ॥११-१५॥

गुरु दशा

मेषे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ॥१६॥
वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः।
अनावृष्टिः प्रजानाशो वैरं च मिथुने गुरौ ॥१७॥
कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभङ्गो महर्घता।
सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ॥१८॥
कन्या गुरौ रोगपीडा सुभिक्षं सस्यजन्म च।
तुले गुरौ सस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते ॥१९॥
अलौ जीवे च दुर्भिक्षं राजचौरोगाद् भयम्।
चापे गुरौ शुभा वृष्टिः शुभं सस्यमहर्घता ॥२०॥
दुर्भिक्षं मकरे जीवे राजयुद्धं पशुक्षयः।
कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्षं धातुमूलमहर्घता ॥२१॥
दुर्भिक्षं दक्षिणे देशे भृषे जीवे न चान्यतः ॥२२॥

जब मेष राशि में गुरु आते हैं तब अच्छा सुकाल, उत्तमवर्षा मनुष्य सुखी रहते हैं। वृष राशि में बृहस्पति आते हैं तब अल्पवर्षा,

प्रजा पीड़ा एवं विग्रह होता है। मिथुन के गुरु में अनावृष्टि, प्रजा में पीड़ा। कर्क में गुरु आवे तो वर्षा अधिक, देश भंग, अन्न की मंहगी। सिंह में बृहस्पति के आने पर सुभिक्ष, वर्षा अधिक, प्रजा सुखी रहती है। कन्या के गुरु में रोग, पीड़ा, सुभिक्ष तथा अन्नों की उत्पत्ति होती है। तुला के गुरु में खेती का नाश, दूध अधिक होता है। वृश्चिक में गुरु के आने पर दुर्भिक्ष, राजा, चोर तथा सर्पों से भय रहता है। धन के गुरु में उत्तमवर्षा, उत्तम खेती तथा रस की मंहगी रहती है। मकर के गुरु में राजाओं में युद्ध, पशुओं का विनाश। कुम्भ के गुरु हों तो दुर्भिक्ष, धातु और मूल मंहगे रहते हैं। मीन के गुरु हों तो दक्षिण देश में दुर्भिक्ष होता है, अन्य देश में नहीं होता ॥१६-२२॥

संक्रान्तौ वर्षाफलानि

मार्गकार्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमा।
पौषे माघे नृणां सौख्यं सस्यपूर्णा वसुन्धरा ॥२३॥
चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमे घनः।
यदि वर्षति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजासुखम् ॥२४॥
आषाढे संक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखम्।
भाद्रे च बहवो रोगाः सुखमं सर्वत्र चाश्विने ॥२५॥
इत्येषामपि संक्रान्तौ वृष्टिश्चापि शुभाशुभम् ॥२६॥

यदि मार्गशीर्ष तथा कार्तिक की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो वर्षा ऋतु में मध्यम वर्षा होती है। पौष, माघ की संक्रान्ति को वर्षा हो तो प्रजा सुखी एवं सब अन्नों की उत्पत्ति हो। फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रान्ति के दिन मेघ वर्षे तो सर्वत्र सुभिक्ष तथा प्रजा सुखी रहती है। आषाढ़ की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोगों की उत्पत्ति तथा श्रावण में संक्रान्ति के दिन जल वर्षे तो प्रजा अति सुखी रहती है। यदि भादो की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोग होते हैं तथा आश्विन की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो सर्वत्र सुख होता ॥२३-२६॥

वायु परीक्ष[illegible]म्यां वायुः [illegible]

चैत्रस्य शुक्लप[illegible]यन्तु[illegible] वायुर्धनागमः ।
भाद्रे गुणत्रयं मौल्यं [illegible]रसानां जायते तदा ॥२७॥
ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः ।
तदा चतुर्गुणं मौल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत् ॥२८॥
श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातो दिनद्वयम् ।
दक्षिणे पश्चिम ज्ञेयं दुर्भिक्षं धान्यसंक्षयः ॥२९॥
चित्रास्वातीविशाखासु श्रावणे चैव वर्षति ।
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसंचयः ॥३०॥

यदि चैत्र शुक्ला ५ में पूर्व की वायु चले तथा वर्षा हो तो भाद्र मास में रसों का मूल्य तिगुना हो जाता है। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी को पश्चिम की वायु चले और वर्षा हो तो कार्तिक में अन्न का मोल चौगुना हो जाता है। श्रावण शुक्ल ५ से दो दिन तक वायु और वर्षा हो तो दक्षिण पश्चिम देश में दुर्भिक्ष होता है। यदि श्रावण में चित्रा, स्वाति, विशाखा इन तीनों नक्षत्रों में वर्षा हो तो अन्न का संचय करना चाहिए ॥२७-३०॥

वायु परीक्षणम

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋते ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥३१॥
आषाढपूर्णिमायान्तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनं धान्यं गृहे गृहे ॥३२॥
आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये वाति मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥३३॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥३४॥
सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत् ।
उल्कातारावज्रपातो ग्रसनं शशीसूर्ययोः ॥३५॥

प्रजा पीड़ा एवं विग्रह होता है। मिथुन के गुरु में अनावृष्टि, प्रजा में पीड़ा। कर्क में गुरु आवे तो वर्षा अधिक, देश भंग, अन्न की मंहगी। सिंह में बृहस्पति के आने पर सुभिक्ष, वर्षा अधिक, प्रजा सुखी रहती है। कन्या के गुरु में रोग, पीड़ा, सुभिक्ष तथा अन्नों की उत्पत्ति होती है। तुला के गुरु में खेती का नाश, दूध अधिक होता है। वृश्चिक में गुरु के आने पर दुर्भिक्ष, राजा, चौर तथा सर्पों से भय रहता है। धन के गुरु में उत्तमवर्षा, उत्तम खेती तथा रस की मंहगी रहती है। मकर के गुरु में राजाओं में युद्ध, पशुओं का विनाश। कुम्भ के गुरु हों तो दुर्भिक्ष, धातु और मूल मंहगे रहते हैं। मीन के गुरु हों तो दक्षिण देश में दुर्भिक्ष होता है, अन्य देश में नहीं होता ॥१६-२२॥

संक्रान्तौ वर्षाफलानि

**मार्गकार्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमा।**
**पौषे माघे नृणां सौख्यं सस्यपूर्णा वसुन्धरा ॥२३॥**
**चैत्रफाल्गुनबैशाखज्येष्ठानां संक्रमे घनः।**
**यदि वर्षति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजासुखम् ॥२४॥**
**आषाढे संक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखम्।**
**भाद्रे च बहवो रोगाः सुखमं सर्वत्र चाश्विने ॥२५॥**
**इत्येषामपि संक्रान्तौ वृष्टिश्चापि शुभाशुभम् ॥२६॥**

यदि मार्गशीर्ष तथा कार्तिक की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो वर्षा ऋतु में मध्यम वर्षा होती है। पौष, माघ की संक्रान्ति को वर्षा हो तो प्रजा सुखी एवं सब अन्नों की उत्पत्ति हो। फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रान्ति के दिन मेघ वर्षे तो सर्वत्र सुभिक्ष तथा प्रजा सुखी रहती है। आषाढ़ की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोगों की उत्पत्ति तथा श्रावण में संक्रान्ति के दिन जल वर्षे तो प्रजा अति सुखी रहती है। यदि भादों की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोग होते हैं तथा आश्विन की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो सर्वत्र सुख होता ॥२३–२६॥

वायु परीक्षण[illegible]म्यां वायु[illegible]नम्

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां [illegible]यन्ते [illegible] वायुर्धनागमः ।
भाद्रे गुणत्रयं मौल्यं [illegible]रसानां जायते तदा ॥२७॥
ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः ।
तदा चतुर्गुणं मौल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत् ॥२८॥
श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातो दिनद्वयम् ।
दक्षिणे पश्चिम ज्ञेयं दुर्भिक्षं धान्यसंक्षयः ॥२९॥
चित्रास्वातीविशाखासु श्रावणे चैव वर्षति ।
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसंचयः ॥३०॥

यदि चैत्र शुक्ला ५ में पूर्व की वायु चले तथा वर्षा हो तो भाद्र मास में रसों का मूल्य तिगुना हो जाता है । ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी को पश्चिम की वायु चले और वर्षा हो तो कार्तिक में अन्न का मोल चौगुना हो जाता है । श्रावण शुक्ल ५ से दो दिन तक वायु और वर्षा हो तो दक्षिण पश्चिम देश में दुर्भिक्ष होता है । यदि श्रावण में चित्रा, स्वाति, विशाखा इन तीनों नक्षत्रों में वर्षा हो तो अन्न का संचय करना चाहिए ॥२७-३०॥

वायु परीक्षणम

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋते ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥३१॥
आषाढपूर्णिमायान्तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनं धान्यं गृहे गृहे ॥३२॥
आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये वाति मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः॥३३॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥३४॥
सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत् ।
उल्कातारावज्रपातो ग्रसनं शशीसूर्ययोः ॥३५॥

**धूम्रकेतु ... ता है। मिथुनहृणं बहुधा यदा।**
**तदा वै सर्वदो वर्षा अधि... च महर्घता ॥३६॥**

आषाढ़ पूर्णिमा को नैऋत्य ... चले तो अल्प वर्षा, धान्य की कमी, कुओं का पानी भी सूख जाय। यदि आषाढ़ की पूर्णिमा को वायव्य की पवन चले तो धर्म-सिद्धि, धन-धान्य की वृद्धि होय। ईशान की वायु चले तो लोकों में सुख तथा सभी गाने बजाने में प्रसन्न रहें। अग्निकोण की वायु चले तो अग्नि भय, पश्चिम की वायु चले तो जल भय अथवा अन्य दिशाओं की पवन चले तो सुभिक्ष होता है। यदि किसी पूर्णिमा को भूकम्प, उल्कापात, तारों का टूटना, सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण हो, धूम केतु का उदय हो तथा पुनः इन्द्र-धनुष दिखाई दे तो समस्त वस्तुएं मंहगी हो जाती हैं ॥३१–३६॥

**आषाढशुक्ले पञ्चम्यां द्वितियायां च वर्षति।**
**यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥३७॥**
**तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वं याति च वारिदः।**
**यदि व्योम्नि तदा भाद्रे वर्षते विपुलं जलम् ॥३८॥**
**चतुर्थ्यां दक्षिणे वायुर्मेघः पूर्वं च गच्छति।**
**आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥३९॥**

आषाढ़ शुक्ल पंचमी या द्वितीया को यदि वर्षा हो तो श्रावण में अवश्य वर्षा होती है। यदि तृतीया को पूर्व की वायु चले तथा पूर्व को बादल जाते दिखाई दें तो भादों में अधिक वर्षा होती है। यदि चतुर्थी को दक्षिण की वायु तथा पूर्व को मेघ जायें तो आश्विन में निश्चय वर्षा होती है ॥३७–३९॥

**पञ्चम्यामुत्तरे वायुर्दृश्यते च यदा बुधैः।**
**तदा च कार्तिके मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥४०॥**
**चतुष्टये च दिवसे यदा वर्षति वारिदः।**
**अतिवृष्टया च दुर्भिक्षं जायते नात्र संशयः ॥४१॥**
**दिनद्वयं यदा वाता वान्ति दक्षिणपश्चिमे।**
**तदा नश्यन्ति धान्यानि दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥४२॥**

तृतीयायां च पञ्चम्यां वायुः पूर्वोत्तरं यदि।
तदा धान्यानि जायन्ते सर्वं कृतयुगोपमम् ॥४३॥

यदि आषाढ़ शुक्ला ५ को उत्तर की वायु चले तो कार्तिक में अधिक वर्षा होती है। यदि आषाढ़ की २, ३, ४, ५ को वर्षा हो तो अति वर्षा से दुर्भिक्ष हो। आषाढ़ शुक्ल २, ३ को दक्षिण और पश्चिम की वायु चले तो अन्न नष्ट होकर दुर्भिक्ष पड़े। यदि आषाढ़ शुक्ल ३, ५ को पूर्व तथा उत्तर की वायु चले तो सभी अन्न उत्पन्न होकर सतयुग का सा समय होवे ॥४०-४३॥

पौषे मूलाद्भरण्यन्तं चन्द्रऋक्षं न गर्जति।
आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यऋक्षेन वर्षति ॥४४॥
यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा।
षण्मासं तुषधान्यानां जायते च महर्घता ॥४५॥
शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वयं नूनं महर्घता।
चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोग शुभं तदा ॥४६॥
शनौ राहौ सर्वधान्यं महर्घं राजविग्रहम्।
बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम् ॥४७॥
उत्पत्तिस्सर्वधान्यानां पञ्चमासं प्रजायते।
सुभिक्ष तु महावृष्टिः पशूनां तृणसंकुलम् ॥४८॥

यदि पौष में मूल से भरणी तक चन्द्र नक्षत्रों में मेघ न गर्जे तो आर्द्रा से विशाखा तक सूर्य के नक्षत्रों में वर्षा होती है। जब मंगल के घर कोई ग्रह हो तो ६ मास तक तुष धान्य मंहगा रहे। जब शुक्र के घर में भौम का उदय हो तो २ मास मंहगी रहें। जब शुक्र के घर में सूर्य या चन्द्रमा का उदय हो तो रोगोत्पादन होता है। परन्तु जब शनि या राहु का उदय होता है तो सर्वान्न मंहगे एवं राजविग्रह होता है। यदि बुधक्षेत्र में सूर्य या चन्द्र आते हैं तो सब राजाओं में विरोध होता है तथा तुषधान्य की ५ मास तक वृद्धि होती है। सुभिक्ष, अच्छी वर्षा तथा पशुओं को तृण बहुत होता है ॥४४–४८॥

## ग्रह विचार

शुक्रक्षेत्रे बुधश्चन्द्रश्चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुतः ।
पाखण्डिनां भवेद् वृद्धिर्धान्यानां च महर्घता ॥४९॥
बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सर्वधान्यमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कार्पासादिमहर्घता ॥५०॥
भौमक्षेत्रे शनौ राहुस्ताम्रादीनां महर्घता ।
शनिक्षेत्रे शनौ राहुः सुभिक्षं चन्द्रभास्करे ॥५१॥
पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता ।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः ॥५२॥
भौमे राज्ञो विरोधः स्याद् बुधे वृष्टिश्च भूयसी ।
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यं बहूनि च ॥५३॥
भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहुभौमार्कभार्गवाः ।
षण्मासं गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ॥५४॥
मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मन्दराहुबुधास्तथा ।
चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥५५॥

यदि शुक्र की राशि में बुध और चन्द्रमा हों तथा चन्द्रमा की राशि में शुक्र हो तो पाखण्डियों की वृद्धि एवं अन्य की मंहगी हो। यदि शुक्र की राशि में गुरु और मंगल हों तो पासादि मंहगे हों। मंगल की राशि में शनि, राहु हों तो तांबा आदि मंहगे हों। यदि शनि की राशि में शनि व राहु हों तो सुभिक्ष हो। चन्द्रमा या सूर्य की राशि में शनि वा राहु हो तो पशु नाश, अन्न वद्धि एवं कुड़ मंहगा हो। जो गुरु के क्षेत्र में शनि व राहु हों तो अल्प वर्षा, तृणादि का क्षय हो। गुरु के क्षेत्र में जब मंगल आते हैं तो राजाओं में वैर हो और जो बुध हों तो वर्षा अधिक, तृण वृद्धि, पशुओं को सुख एवं धान्य वृद्धि होती है। मंगल की राशि में जब राहु, मंगल व शुक्र होते हैं तो ६ महीने तक गुड़, कपास, घृत तथा दूध मंहगा रहता है। जो शनि के क्षेत्र में राहु, शनिचर वा बुध हों तो चौपायों का नाश एवं द्विपदों का भी नाश होता है ॥४९–५५॥

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति शुक्रमन्दनिशाकराः।
तदा मुक्ता पशूनां च शङ्खस्य च महर्घता ॥५६॥
भौमक्षेत्रे भार्गवश्च धान्यानां च महर्घता।
शनिक्षेत्रे रवौ चन्द्रे वस्त्राणां च महर्घता ॥५७॥
शुक्रक्षेत्रे गुरुभौमः प्रजापीडा प्रजायते।
ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥५८॥

जब मंगल के क्षेत्र में सूर्य, शनि, चन्द्रमा हो तो मोती, पशु और शंख मंहगे रहते हैं। मंगल के क्षेत्र में जब शुक्र स्थित हो तो अन्न की मंहगी होय। शनि क्षेत्र में रवि या चन्द्र हो तो वस्त्रों की मंहगी हो। शुक्र की राशि में गुरु या भौम हो तो प्रजा-पीड़ा होती है। यह ग्रह राशि का योगफल कहा है ॥५६–५८॥

चन्द्रोदयः कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये।
चन्द्रोदयो भृगुक्षेत्रे स्वल्पवृद्धिः क्रयाणके ॥५९॥
प्रजापीडा बुधक्षेत्रे सोमशुक्रोदयो भवेत्।
रविक्षेत्रे तुलावृद्धिः शनिसोमभृगुदये ॥६०॥
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो भवेत्।
षण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिश्च जायते ॥६१॥
उदिते च बुधे क्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ।
पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥ ६२ ॥
शुक्रक्षेत्रे सोमसौरिसूर्यपुत्रादयो यदा।
उदयास्तमहीपीडा जायते च महर्घता ॥६३॥

यदि मंगल के क्षेत्र में चन्द्रमा का उदय हो तो धान्य वृद्धि, शुक्र के ग्रह में चन्द्रोदय हो तो क्रय करने में स्वल्प वृद्धि, बुध के ग्रह में चन्द्र, शुक्र का उदय हो तो प्रजा-पीड़ा, रवि क्षेत्र में शुक्र, नि, चन्द्र उदय हो तो तोल वृद्धि हो, चन्द्र क्षेत्र में शुक्र, चन्द्र, बुध का उदय हो तो ६ मास तक दुर्भिक्ष तथा अत्यधिक वर्षा हो, बुध क्षेत्र में राहु, शनि का उदय हो तो पशुनाश, प्रजा-पीड़ा एवं अन्न मंहगा, जब शुक्र

क्षेत्र में चन्द्र, सूर्य और शनि का उदय हो तो जब तक यह अस्त न हों तब तक संचार पीड़ित एवं अन्न की मंहगी रहे ॥५९–६३॥

यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत् ।
घृतानां च तदा वृद्धिर्गुडानां च महर्घता ॥६४॥
यदासावदितिश्चैव शनिक्षेत्रे शनैश्चरः ।
तदासौ तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥६५॥

जब शनि क्षेत्र में मंगल, सूर्य का उदय होता है तब घी सस्ता एवं गुड़ मंहगा रहता है। जो शनि देव अपनी राशि पर उदय हों तो तृण काष्ठ, लोहादि मंहगे हो जाते हैं ॥६४–६५॥

नक्षत्रों में ग्रह स्थिति से शुभाशुभ

आर्द्रायां तु यदा भौमः शनिरग्नेस्तथा भवेत् ।
बुधो भाद्रे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं भृगुनन्दने ॥६६॥
गुरुर्यदा विशाखायां तदा धान्यमहर्घता ।
मङ्गलं वर्षकालान्तं शनौ सर्वत्र मङ्गलम् ॥६७॥

यदि आर्द्रा में मंगल, कृत्तिका में शनि, भाद्रपद में बुध हो तो दुर्भिक्ष, शुक्र हो तो सुभिक्ष होता है। गुरु विशाखा में हों तो धान की मंहगी एवं भौम, शनि विशाखा में हो तो सर्वत्र कल्याण होता है ॥६६–६७॥

सुभिक्षं चानुराधायां यदि कोऽपि ग्रहो भवेत् ।
कल्याणं च सुभिक्षं चाऽऽश्लेषाया च स्थिते गुरौ ॥६८॥
कार्पासा बहवो मन्दे भौमे कटकपीडनम् ।
बुधे तिलाश्च माषाश्च महर्घं वर्षकालतः ॥६९॥

अनुराधा में कोई भी ग्रह हो तो कल्याण एवं सुभिक्ष तथा आश्लेषा में यदि गुरु हों तो भी सुभिक्ष और कल्याण होता है। यदि आश्लेषा पर शनि हो तो कपास अधिक होय, यदि मंगल हो तो सैन्य-पीड़ा, एवं यदि बुध हो तो वष भर तिल उड़द महगा रहे ॥६८–६९॥

सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्घाणि भवन्ति च।
शुक्रे च बहुला वृष्टि सस्यवृद्धिश्च जायते ॥७०॥

यदि आश्लेषा पर सूर्य हों तो सब अन्न मंहगे, शुक्र हों तो अत्यधिक वर्षा एवं अन्न अधिक पैदा हो ॥७०॥

मूले कुलित्थमुद्गानां गुरौ वृद्धिः प्रजायते।
भौमे मुद्गस्य नाशः स्याद् बुधे च सर्वसम्पदः ॥७१॥
पूर्वाषाढागते भौमे पीडा च पशुपक्षिणाम्।
शनौ केतौ स्थिते तत्र जायते च महर्घता ॥७२॥
उत्तराषाढगे जीवे गुडानां च महर्घता।
भौमे च पशुजातीनां जायते च महर्घता ॥७३॥
अभिजिन्नामनक्षत्रे यदा छायासुतो भवेत्।
सर्वसस्यानि जायन्ते सुभिक्षं च कुजे तथा ॥७४॥
श्रवणे च यदा जीवस्तदा स्युः सर्वसम्पदः।
बुधे राजसुतत्रासः शनौ भूरीक्षुकारकः ॥७५॥

मूल में गुरु हों तो कुल्थी और मूंग की वृद्धि, भौम हो तो मूंग का नाश, बुध हो तो सर्व विधि समृद्धि हो, यदि भौम पू० षा० में रहे तो पशु पक्षियों को पीड़ा, केतु या शनि हों तो सर्व वस्तु मंहगी, यदि गुरु उ० षा० पर हों तो गुड़ादि की तेजी, यदि भौम हो तो सुभिक्ष होता है। श्रवण में गुरु हो तो सर्व सम्पदाओं की प्राप्ति हो, कुज हो तो राजपुत्रों को पीड़ा तथा शनि हो तो उस वर्ष ईख की उत्पत्ति अधिक होवे ॥७१–७५॥

कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति।
मध्यमानि च सस्यानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥७६॥
आर्द्रायां मृगशीर्षे च यदा वाचस्पतिः स्थितः।
दुर्भिक्षं स्यादनावृष्टिः प्रजानां च सदाऽशिवम् ॥७७॥
फल्गुनीद्वयहस्तेषु मघायां च यदा गुरुः।
सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजानां स्यादरोगता ॥७८॥

यदि कृत्तिका या रोहिणी में गुरु हों तो अन्नोत्पत्ति मध्यम एवं मध्यम ही वर्षा होती है। जो गुरु आर्द्रा या मृगशिरा में हों तो दुर्भिक्ष, अल्प वर्षा एवं प्रजा में अमंगल हो। पू० फा०, उ० फा०, हस्त एवं मघा के गुरु हों तो सुभिक्ष एवं प्रजा में निरोगता रहती है॥७६-७८॥

चित्रास्वात्योर्यदा जीवस्तदा चित्रपयोधरः।
विचित्राणि भवन्त्येवं सस्यानि च क्वचित्क्वचित् ॥७९॥
विशाखामैत्रयोर्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमा।
ज्येष्ठामूले मासयुग्मं वृष्टिर्वा सिद्धये न च ॥८०॥
पूर्वाषाढोत्तरायां च स्थितो यदि बृहस्पतिः।
तदाऽऽरोग्यं सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥८१॥
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ।
धनिष्ठायां गते जीवे पीडा भवति हस्तिनाम् ॥८२॥

यदि चित्रा तथा स्वाति के गुरु हों तो विचित्र वर्षा एवं विचित्र अन्नोत्पत्ति हो। विशाखा, अनु० के गुरु हों तो वर्षा और अन्न का मध्यम रहे। ज्येष्ठा, मूल पर गुरु हों तो २ मास तक वर्षा न होवे। पू० षा०, उ० षा० के गुरु हों तो प्रजा में आरोग्यता एवं अच्छी वर्षा से सुभिक्ष हो। रेवती के गुरु हों तो देश में अनावृष्टि से दुर्भिक्ष होता है। इसी प्रकार धनिष्ठा के शुक्र हों तो हाथियों को पीड़ा होती है ॥७९-८२॥

॥इति श्री काशिनाथ भट्टाचार्य कृत शीघ्रबोधे अर्गलपुर मंडलान्तर्गते सेंगई ग्राम वासिनः पं० ऋषिकुमार शर्मा विरचितायां ऋषितत्व-बोधिनी भाषा टीकायां तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥

# अथ चतुर्थ प्रकरणम्

होडा चक्रम्

अब नक्षत्रों का विचार कहते हैं। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, जिस नक्षत्र के जिस चरण में बालक उत्पन्न हो, उस का नाम उसी चरण के अक्षरों पर रखना चाहिये।

चू, चे, चो, ला अश्विनी १। ली, लू ले, लो भरणी २। आ, ई, उ, ए कृत्तिका ३। ओ, बा, बी, बू रोहिणी ४। बे, बो, का, की मृगशिरा ५। क, घ, ङ, छ आर्द्रा ६। के, को, हा, ही पुनर्वसु ७। हु, हे, हो, डा पुष्य ८। डी, डू, डे, डो आश्लेषा ९। मा, मी, मू, मे मघा १०। मो, टा, टी, टू पूर्वाफाल्गुनी ११। टे, टो, पा, पी उत्तराफाल्गुनी १२। पू, ष, ण, ठ हस्त १३। पे, पो, रा, री चित्रा १४। रू, रे, रो, ता स्वाती १५। ती, तू, ते, तो विशाखा १६। ना, नी, नू, ने अनुराधा १७। नो, या, यी, यू ज्येष्ठा १८। ये, यो, भा, भी मूल १९। भू, धा, ढा पूर्वाषाढा २०। भे, भो, जा, जी उत्तराषाढा २१। जू, जे, जो, खा अभिजित् २२। खी, खू, खे, खो श्रवण २३। गा, गी, गू, गे धनिष्ठा २४। गो, सा, सी, सू, शतभिषा २५। से, सो, दा, दी पूर्वाभाद्रपदा २६। दू, थ, झ, ञ उत्तराभाद्रपदा २७। दे, दो, चा, ची रेवती २८।

सपाद नक्षत्रद्वयतो राशिक्रमः

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः।
अश्विनीप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥१॥

अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में ९-९ चरण अर्थात् सवा दो नक्षत्रों की मेष आदि राशियां होती हैं। अन्य नक्षत्रों की राशियां भी इसी क्रम से जान लें ॥१॥

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादमेकं मेषः १ । कत्तिकायास्त्रयः पादारोहिणी मृगशिरोर्द्धं वृषः २ । मृगशिरोर्द्धं भाद्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुनम् ३ । पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्तं कर्कः ४ । मघापूर्वा फाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी पादमेकं सिहः ५ । उत्तराफाल्गुनी पादत्राय हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ६ । चित्रार्ध स्वाती विशाखा पादत्रयं तुलयं ७ । विशाखा पादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं च वृश्चिकः ८ । मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढा पादमेकं धनुः ९ । उत्तरायास्त्रयः पादा अभिजिच्छ्रवण धनिष्ठार्धं मकरः १० । धनिष्ठार्द्ध शतभिषापूर्वा भाद्रपदा पादास्त्रयः कुम्भ ११ । पूर्वा भाद्रपदापादमेकमुत्तरा भाद्रपदा पादमेकमुतरा भाद्रपदारेवत्यन्तं च मीनः १२ ॥१॥

द्वादशभावाः

**तनुर्धनं सहजं सुहृत्पुत्रशत्रुकलत्रकाः ।**
**मृतिश्च धर्मकर्मायव्यया द्वादश राशयः ॥२॥**

१ तनु, २ धन, ३ सहज, ४ सुहृत, ५ पुत्र, ६ शत्रु, ७ कलत्र, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय, १२ व्यय, ये लग्न आदि १२ भावों के नाम हैं ॥२॥

गहाणां दृष्टिः

**तृतीये दशमे पञ्च नवपञ्चमयोर्दश ।**
**दशपञ्चाष्टमे तुर्ये सप्तमे विंशतिस्तथा ॥३॥**

विश्वास्तु ग्रहदृष्टीनामेषु स्थानेषु उच्यते।
पञ्चविंशोपकं प्रोक्तं पादमेकं क्रमोच्यते।
आयव्यये धने षष्ठे लग्ने खेटो न दृश्यते ॥४॥

अपने स्थान से ग्रह की ३, १० स्थान पर ५ विश्वा अर्थात् एक चरण की दृष्टि होती है। ९, ५ वें में १० विश्वा [दो चरण] दृष्टि, ८,४ में १५ विश्वा [तीन चरण] दृष्टि, ७वें में २० विश्वास अर्थात् पूर्ण दृष्टि होती है। तथा ११, १२, २, ६, १ स्थानों में ग्रह की दृष्टि नहीं होती ॥३–४॥

तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे गुरुः।
विंशतेर्वीक्ष्यते विंशवाश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥५॥

३, १० को शनि, ९, ५ को गुरु, ४, ८ को भौम पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥५॥

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयोः।
अमावस्या तदा पृथ्वी रुण्डमुण्डा च जायते ॥६॥

यदि माघ और ज्येष्ठ की अमावस्या को रविवार हो तो पृथ्वी रुण्ड-मुण्डों से व्याप्त होती है ॥६॥

दिनमानायनम्

अयनास्त्रिगुणा मासा एकपञ्चाशता युताः।
दलिता घटिका ज्ञेयाः पलास्त्रैगुण्यवासराः ॥७॥

मकर के अयन से वर्तमान दिन तक मास गिनकर तिगुना करे और ५१ जोड़े। फिर उसको आधा करने से दिनमान की घड़ी निकल आती है। मास के अतिरिक्त जो बढ़े उसे ३ गुना करने से पल आ जाते हैं। इसी प्रकार अयन से गिनने से रात्रि होती है। क्योंकि उत्तरायण में दिन बढ़ते हैं और दक्षिणायन में रात्रि बढ़ती है ॥७॥

त्रयोदशतिथिफलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजः ॥८॥

जब एक पक्ष में १३ तिथियां होती हैं, तब घोड़े, मनुष्य तथा हाथी इन तीनों का नाश होता है ॥८॥

हवन करने का मुहूर्त्त

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्रादिनभं च त्रयं त्रयम् ।
आदित्यश्च बुधः शुक्रः शनिश्चन्द्रः कुजस्तथा ॥९॥
जीवो राहुश्च केतुश्च होमे क्रूरा न शोभना ।
आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे सम्पत्तिरुत्तमा ॥१०॥
शुक्रे चैव धनप्राप्तिः शनौ पीड़ा च जायते ।
चन्द्रे भवति लाभश्च भौमे च बन्धुबन्धनम् ॥११॥
गुरौ परमकल्याणं राहौ हानिश्च सर्वदा ।
केतौ च प्राणसन्देहो वह्निचक्रमुदाहृतम् ॥१२॥

सूर्य के नक्षत्र से ३, ३ नक्षत्र क्रम से सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र मंगल, गुरु, राहु और केतु के होते हैं । पाप ग्रह के नक्षत्रों में हवन करना निषिद्ध है। सूर्य नक्षत्र में हवन करने से शोक, बुध में उत्तम सम्पत्ति लाभ, शुक्र में धन लाभ, शनि में पीड़ा, चन्द्र में लाभ, मंगल में बन्धु-बन्धन, गुरु में कल्याण, राहु में हानि तथा केतु में हवन करने से प्राण संदेह होता है ॥९–१२॥

अग्निचक्रम् रविभात्

| सू. | बु. | शु. | श. | चं. | मं. | बृ. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| शोक | सम्पत्ति | धन-प्राप्ति | पीड़ा | लाभ | बन्धु-बन्धन | कल्याण | हानि | प्राण-सन्देह |

अग्निवासज्ञानम्

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥१३॥

शुक्लपक्ष को तिथि में वार जोड़ कर एक और मिलावे, ४ का भाग देने पर यदि ३ शेष अथवा शून्य शेष रहे दो स्वर्ग में; जो अर्थ नाश कारक होवे। २ बचे तो पाताल में जानें; जो प्राण नाशक होता है ॥१३॥

संवत्सर नामानि गुणाश्च

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥१४॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥१५॥
ब्रह्मविंशतिरित्येका सृष्टिरत्र प्रजायते।
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिस्तथा ॥१६॥
खरो नन्दननामा च विजयश्च जयोऽपरः।
मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलम्बिविलम्बिकौ ॥१७॥
विकारी शार्वरी चाथ प्लवङ्गः शुभकृत्तथा।
शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरः ॥१८॥
पराभवाख्यो ह्यपरा विष्णोरित्येष विंशतिः।
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यस्तथा साधारणोऽपरः ॥१९॥
विरोधकृत्समाख्यातः परिधावी प्रमादकृत्।
आनन्दो राक्षसश्चाथ नलश्च पिङ्गलस्तथा ॥ २० ॥
कालः सिद्धार्थिरौद्रौ च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा।
अपरो रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनस्तथा ॥२१॥
क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विंशतिः।
वत्सराः षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥२२॥

१ प्रभाव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्यः, १३ प्रमाथी, १४ विक्रमः, १५ वृषभ, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिवः, २० व्यय, इन बीसों की ब्रह्म विंशति संज्ञा

है। १ सर्वजित, २ सर्वधारी, ३ विरोधी ४ विकृति, ५ खर, ६ नन्दन, ७ विजय, ८ जय, ९ मन्मथ, १० दुर्मुख, ११ हेमलम्बी, १२ विलम्बी, १३ विकारी, १४ शार्वरी, १५ प्लवंग, १६ शुभ कृत, १७ शोभन, १८ क्रोधी, १९ विश्ववसु, २० पराभव, इन बीसों को विष्णु-विंशति कहते हैं। १ प्लवंग, २ कीलक, ३ सौम्य, ४ साधारण, ५ विरोधकृत, ६ परिधावी, ७ प्रमादि, ८ आनन्द, ९ राक्षस, १० नल, ११ पिंगल, १२ काल, १३ सिद्धार्थी, १४ रौद्र, १५ दुर्मति, १६ दुन्दुभी, १७ रुधिरोदगारी, १८ रक्ताक्षी, १९ क्रोधन, २० क्षय, ये बीस रुद्रविंशति कहे जाते हैं। इस प्रकार ६० नाम संवत्सरों के हैं और तन्नामानुसार इनका फल भी है ॥१४–२२॥

मेषादि राशीनां स्वामिनः

**मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।**
**बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः ॥२३॥**
**स्वामीज्यो मीनधनुषोः शनिर्मकरकुम्भयोः ।**
**सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥२४॥**
**कन्या राहुगृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनं स्मृतम् ।**

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. | शु. | के. बु. | चं. | सू. | बु. रा. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. |

नक्षत्रानयनम्

मेष—वृश्चिक का स्वामी भौम, वृष-तुला का शुक्र, कन्या मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, मीन-धन का गुरु, मकर-कुम्भ का शनि, सिंह का सूर्य तथा कन्या का स्वामी राहु और मिथुन का स्वामी केतु है ॥२३–२४॥

### नक्षत्रानयन

कार्तिकाद् द्विगुणा मासा गतभिस्तिथिभिर्युताः ।
सप्तविंशतिभिर्न्यूना दिनतारैकसंमुताः ॥२५॥
राहोर्नीचं धनुश्चव केतोस्तस्माच्च सप्तमम् ॥२६॥

| सू | च. | म | बु | बृ. | शु | श. | रा | के. | ग्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष १० | वृष ३ | मकर २८ | कन्या १५ | कर्क ५ | मीन २७ | तुला २० | मि. | धनु | उ.रा. अ. |
| तुला १० | वृश्चिक. ३ | कर्क २८ | मीन १५ | मकर ५ | कन्या २७ | मेष २०. | धनु | मिथुन | नी.रा. |

कार्तिक मास से गत मासों को दूना करके गत तिथि जोड़ें और २७ का भाग दें, जितना शेष हो उसे अश्विनी से गिनकर नक्षत्र जाने, राहु धन का नीच है । इससे सातवां केतु नीच है ॥२५–२६॥

### अग्रिम वर्षस्य संक्रान्तौ वारादि ज्ञानम्

वारे रूपं तिथौ रुद्रा घट्यां पञ्चदशैव च ।
एकत्रिंशत्पले दद्यात्सूर्यसंक्रमणं भवेत् ॥२७॥

वर्तमान संक्रान्ति के दिन में १ तिथि में ११ घड़ी में १५ पल में ३१ जोड़ने से अग्रिम वर्ष की संक्रान्ति का दिन तिथि घड़ी पल क्रमशः आ जायेंगे ॥२७॥

### शुक्रोदयास्त समय

सार्धाष्टमासे पूर्वस्मिन्नुदितो दृश्यते भृगुः ।
सार्धमासद्वयं सूर्यमण्डले च ततो वसेत् ॥२८॥
उदितः पश्चिमे भागे नवमासं च वीक्ष्यते ।
दशाहं सूर्यमध्ये तु ततश्चास्तमितो भवेत् ॥२९॥
एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
तीर्थयात्राविवाहादौ शुक्रदोषो न विद्यते ॥३०॥

साढ़े आठ महीने शुक्र पूर्व में उदय रहता है, उपरान्त ढाई मास सूर्य के साथ रहता है । फिर ९ मास पश्चिम में उदित रहता है और

उपरान्त १० दिन अस्त रहता है। एक ग्राम में दुर्भिक्ष राजयुद्ध विवाह तीर्थ यात्रा में शुक्र का सम्मुखादि दोष नहीं मानना चाहिये ॥२८-३०॥

नक्षत्र प्रवेशात वृष्टि ज्ञानम्

**दशार्द्राद्याः स्त्रिस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः।**
**तिस्रस्ततश्च मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश ॥३१॥**
**स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित्।**
**स्त्रीस्त्रियोः शीतलच्छाया योगः पुरुषायोर्न च ॥३२॥**

आर्द्रा दि १० नक्षत्रों की स्त्री संज्ञा है। विशाखादि ३ नपुंसक, मूलादि १४ पुरुष संज्ञक हैं। स्त्री पुरुष योग में महावृष्टि, स्त्री नपुंसक में यत्र-तत्र वर्षा, स्त्री-स्त्री योग में शीतल छाया तथा पुरुष-पुरुष नक्षत्र में वर्षा नहीं होती ॥३१-३२॥

अन्य वृष्टि योगः

**उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।**
**जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते सक्रमे तथा ॥३३॥**
**बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्।**
**तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥३४॥**
**चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे।**
**वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः ॥३५॥**
**भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते।**
**भानोः पश्चाद्वरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ॥३६॥**

शुक्र-बुध के उदयास्त में वर्षा होती है। जल राशि पर चन्द्र एवं पक्षान्त में संक्रान्ति के होने से वर्षा होती है। यदि बुध, शुक्र समीपस्थ हों तो पृथ्वी जल से पूर्ण हो, परन्तु इन दोनों के बीच में यदि सूर्य हो तो समुन्द्र के जल को भी सोख लें। मंगल के चलने से वर्षा एवं शनि के उदायस्त होने से यत्र-तत्र वर्षा होती है। यदि इनके पीछे गुरु हों तो पृथ्वी तल जल से पूर्ण, यदि सूर्य के पीछे भौम हो तो अति वृष्टि तथा आगे पड़े तो जल सूख भी जाता है ॥३३-३६॥

गृह द्वार ज्ञानम्

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरः ।
पूर्वस्यां पश्चिमायां वा द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ॥३७॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरे वापि दक्षिणे ॥३८॥
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान् ।
न कर्तव्यं तदा द्वारं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥३९॥

कर्क, कुम्भ, सिंह, मकर के सूर्य में पूर्व वा पश्चिम की ओर घर का द्वार शुभ है। मेष, वृष, वृश्चिक, तुला में उत्तर वा दक्षिण मुख द्वार शुभ है। शेष राशियों के सूर्य में गृह द्वार बनाना निषिद्ध है ॥३७-३९॥

ग्रहणद्वयफलम्

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।
शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति तदा भीतिः परस्परम् ॥४०॥
ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥४१॥

एक मास में चन्द्र सूर्य ग्रहण होने से परस्पर शस्त्र युद्ध से नाश तथा भय रहता है। यदि सूर्य चन्द्र ग्रसित ही उदय अस्त हों तो अन्न और राजा दोनों का विनाश हो। यदि दोनों सम्पूर्ण ग्रसित हो जावें तो दुर्भिक्ष एवं महामारी होती है। ॥४०-४१॥

राशि परत्वेन देश विशेषे फलानि

उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते च तदा जनाः ।
काम्बोजाश्च किराताश्च पाञ्चालाश्च कलिंगकाः ॥४२॥
वृषे च ग्रहणे पीडा पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजाश्चैव ते पीड्यन्ते च सर्वदा ॥४३॥
रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः ।
पीड्यन्ते वाह्लिका मत्स्याः यमुनातटवासिनः ॥४४॥

कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते ।
अन्तरं सर्वराज्ञां च तदा मत्स्यनिवसिनाम् ।।४५।।
सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां भूपतुल्यानां मनुजानां च जायते ।।४६।।
कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनाम् ।
कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं तथा ।।४७।।
तुलायामुपरागे च पीडनं बककाकयोः ।
कोङ्कणस्थाः पराश्चैव पीड्यन्ते साधवश्चवै ।।४८।।
वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते ।
औदुम्बरस्य मद्रस्य चोलयौधेयकस्य च ।।४९।।
यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्याश्च वाजिनः ।
विदेहमल्लपाश्चालाः पीडयन्ते भिषजो विशः ।।५०।।
मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थावराणां जङ्गमानां चित्रकूटस्य संक्षयः ।।५१।।
कम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थास्तथार्बुदाः ।
तस्कर रोगिणां मृत्युः पीड्यन्ते बहुधा जनाः ।।५२।।
मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।
जलोपजीविनो लोका ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ।।५३।।

यदि मीन राशि में ग्रहण हो तो काम्बोज, किरात, आँचल कलिंग देश में पीड़ा, वृष में पड़े तो पशु पथिक एवं बड़े जनों को पीड़ा हो, मिथुन में ग्रहण हो तो उत्तम स्त्रियों वल्लीक देश मत्स्यदेश एवं यमुना तटवासियों को पीड़ा हो। इसी प्रकार अन्य राशियों में ग्रहण होने से फल जान लेना स्पष्टार्थ है ।।४२–५३।।

परिवेष (सूर्य मंडलस्थ) फलम्

गृहकृत्या सुवृष्टिश्च नीहारश्च भयङ्करः ।
विद्युत्पातोऽग्निदाहोऽथ परिवेषश्च रोगकृत् ।।५४।।

ग्रह कृत धूलि की वर्षा (आकाश में बिना पवन धूलि बरसने लगे) होना भयंकर गर्द गुबार में कुछ भी न सूझे, बिजली चमके, अग्नि दाह, सूर्य में मण्डल होना ये सब रोगोत्पादक हैं ॥५४॥

दिगदाह फलम्

दिग्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्निर्घाता नृपभीतिदः ।
झञ्झावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकौ ॥५५॥

सूर्यास्तके बाद दिशायें रक्त पीत वर्ण हों तो अग्नि का भय, बिना मेघ गर्जना से राजाओं में भय, अग्नि वेग वायु से जोरों का भय होता है ॥५५॥

ग्रहयुद्ध फलम्

ग्रहयुद्धे राजयुद्धं केतौ दृष्टे तथैव च ।
ग्रहणान्ते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥५६॥

ग्रह युद्ध अथवा केतु के उदय से राजाओं में युद्ध होता है । यदि ग्रहण के अन्त में वर्षा हो तो सब दोष शान्त हो जाते हैं ॥५६॥

नक्षत्र गते केतूदय फलानि

अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्याल्लङ्काधिपालकम् ।
भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गकम् ॥५७॥
रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशीनराधिपम् ।
आर्द्रायां जलजाधीशं भास्करेशं पुनर्वसौ ॥५८॥
पुष्ये च मगधाधीशं सार्पस्थः काशिकाधिपम् ।
मघायां वङ्गनाथं च पूर्वायां पाण्डुनायकम् ॥५९॥
उज्जयिन्यां नृपं हन्ति उत्तराफल्गुनीगतः ।
गण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूभुजम् ॥६०॥
स्वात्यां काश्मीरकाम्बोजभूपतीनां विनाशकः ।
इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशाखायां विनाशकः ॥६१॥

मैत्रेये पौण्ड्रनाथं च सार्वभौमं तथैन्द्रके ।
आन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥६२॥
पूर्वाषाढे काशिराजमुत्तराषाढके तथा ।
पौंड्रेशशैववैदेहान् श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥६३॥
वसौ पञ्चनदाधीशं वारुणे सिंहलेश्वरम् ।
पूर्वाभाद्रपदे बंगं नैमिषेशं तथोत्तरे ॥६४॥
रेवत्यामुदिते केतौ किराताधिपतेर्वधः ।
धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः॥६५॥

यदि अश्विनी में केतु का उदय हो तो लंका देश के राजा को पीड़ा, भरणी में किरात देश के राजा को और कृत्तिका में होय तो कलिंग देश के राजा को पीड़ा होती है। काशिराज आर्द्रा में पद्मदेश के राजा को, पुनर्वसु में भास्कर देश के राजा को, पुष्य में मगधाधिपति को, आश्लेषा में काशी राज को, मघा में बंग देश पति को, पू० फा० में पाण्डु देशपति को पीड़ा होती है। उ० फा० उज्जैन, हस्त में गंडकी तटवर्ती महीप, चित्रा में कुरुक्षेत्र के राजा का हनन हो। स्वाती में केतु का उदय हो तो काश्मीर और कम्बोज भूपति का विनाश, विशाखा में इक्ष्वाकु तथा कुरुक्षेत्र महाराज का विनाश होता है। अनु० पौंडदेश, ज्येष्ठा में चक्रवर्ती महाराजा, मूल में अन्धक देश मद्रदेश, पू० षा० में काशी के राजा को, उ० षा० में शेष देश, श्रवण में कैकयाधिपति को पीड़ा होती है। धनिष्ठा में हो तो पञ्च नदी तट, शतभिषा सिंहल देश, पू० भा० बंगाल देश, उ० भा० नैमिषारण्य देश के महाराजाओं को पीड़ा हो तथा रेवती में केतु उदय हो तो किरात देश के राजा को पीड़ा होती है। पूंछ सहित धूम्र केतु का उदय हो तो सम्पूर्ण विश्व को पीड़ा देने वाला होता है ॥५७–६५॥

कार्तिक-अमावस्याः फलम्

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत् ।
आयुष्मान्स्वातिसंयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ॥६६॥

कार्तिक अमावस्या [दीपावली] रवि भौम या शनिवार की हो और स्वाती नक्षत्र भी हो तो आयुष्मान योग तथा राजा और पशु दोनों का विनाशक है ॥६६॥

राशिनां निशाबलादि संज्ञा

धनुर्नक्रं च मेषाद्याश्चत्वारस्तु निशाचराः।
ते विना मिथुनं पञ्च ज्ञेयाः पृष्ठोदया बुधैः ॥६७॥
शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुम्भ एव च।
दिवाबलीस्तु मीनश्च बली रात्रौ तथा दिने ॥६८॥

धनु, मकर, मेष, वृष, मिथुन, कर्क राशियां रात्रि में बलवती हैं। मिथुन को छोड़ अन्य पांचों पृष्ठोदय, कुम्भ, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक दिन में बलवती हैं एवं शीर्षोदय हैं। मीन दिन-रात्रि दोनों में बलवती है ॥६७-६८॥

प्रश्नांक फलम्

तदृक्षं द्विगुणं कृत्वा रामैर्हीनश्च कारयेत्।
मुनिभिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के लभते फलम् ॥६९॥
चन्द्रे वेदे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्मबाणयोः।
रामे रसे मध्यमं च शून्ये शून्यं प्रकीर्तितम् ॥७०॥

प्रश्न लग्न की राशि संख्या को दूना करके उस में ३ घटाकर ७ का भाग देने से १,४ बचें तो दुर्भिक्ष; २,५ बचे तो सुभिक्ष; ३,६ बचे तो मध्यम तथा शून्य शेष हो तो शून्यफल जानना ॥६९-७०॥

अतिचारवक्र ग्रह फलम्

अतिचारगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते।
हाहाभूतं जगत्सर्वं दण्डमुण्डं च जायते ॥७१॥

शुभ ग्रहों के अतिचार और पाप ग्रह वक्री हों तो संसार में हाहाकार एवं राजाओं में युद्ध हो ॥७१॥

दीक्षा ग्रहण काल

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥७२॥
आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे तु शुभावहः ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥७३॥
कार्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।
पौषे तज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनम् ॥७४॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ।
दीक्षाकर्मफलं मासेष्वित्येवं च शुभाशुभम् ॥७५॥

चैत्र में मन्त्र दीक्षा लेने से दुःख, वैशाख में लेने से रत्नों का लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में बान्धव-नाश तथा श्रावण में दीक्षा लेना शुभ है। भाद्र में प्रजा हानि, अश्विनी में सुख, कार्तिक में धन-वृद्धि और मार्गशीर्ष में मन्त्र-दीक्षा लेना शुभ है। पौष में दीक्षित होने से ज्ञान-हानि, माघ में दीक्षा लेने से बुद्धि बढ़ती है तथा फाल्गुन में मन्त्र की दीक्षा लेने से सर्वत्र सुख-सौभाग्य होता है ॥७२–७५॥

ग्रहाणां राशि भोगावधिः

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रः पाददिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः ।
राहुः केतुः सदा भङ्क्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥७६॥

शुक्र, बुध, सूर्य एक राशि पर एक मास रहते हैं। चन्द्र सवा दो दिन, मंगल डेढ़ मास, गुरु एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष तथा राहु केतु एक राशि पर डेढ़-डेढ़ वर्ष रहते हैं ॥७६॥

चुल्ली चक्रम्

सूर्यर्क्षाद्रसपृष्ठभैः सुखयुतं बेदैः शिरी मृत्युदम्
बाहौ नागसुभौख्यभोगमुतलं गर्भे शरैर्नाशयेत् ।
द्वौ द्वौ भुक्तिकरौ कलत्रमरणं ह्यङ्घ्रौ द्वयं च क्रमा-
चुल्लीचक्रविचारणं सुषिषणैः प्रोक्तं हि गर्गादिभिः ॥७७॥